कर्ताक रंग कर्मक संग

कर्ताक रंग कर्मक संग

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

KARTAK RANG KARMAK SANG

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-57-6
दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रम:

अप्पन काज अपने चिन्हू

आने दिन जकाँ सबेर-सकाल माने भिनसरूए पहर, हीरालाल बाबा ऐठाम पहुँचलौं। ओना, दियादी सम्बन्धमे हीरालाल बाबा ‘काका’ हेता मुदा अपनो परिवारक पोता-पोती आ समाजोक अधिकांश लोक ‘बाबा’ कहै छैन, ओही देखा-देखीमे हमहूँ बाबे कहै छिऐन से आइयेसँ नहि, बच्चेसँ कहैत एलिऐन तँए अभ्यास भऽ गेल अछि जइसँ अखनो माने बुझला-सुझलाक पछातियो बाबे कहै छिऐन। दरबज्जापर बैसल हीरालाल बाबार्कें आइ बेसी खुशी देखलयैन। खुशी देखि बजलौं-

“गोड़ लगै छी बाबा.! किछु खेबो-पीबोक मन होइए?”

खेबा-पीबाक चर्च ऐ दुआरे केलिऐन जे अपना बुझि पड़ल जे भरिसक हीरालाल बाबा आब चलचलाउ भऽ गेला। माने औरुदा खटा गेलैन तँए एक-दू दिनमे मरि जेता।

समाजक देखा-देखीसँ बाजल छेलौं। समाजक देखा-देखी ई जे आनो-आनर्कें देखै छी जे मरैकाल अपनो परिवारक लोक आ गामो-समाजक शुभचिन्तक लोक पुछै छैन जे किछु खेबो-पीबोक मन होइए वा किछु नीक-निकुत लऽ जा खाइ-पीबैले सेहो दइते छैन। अही खियालसँ हमहूँ हीरालाल बाबार्कें कहने छेलिऐन।

हीरालाल बाबा अपन विचारक परिपक्व लोक छथिए। बजला- “बौआ लीलाधर, एहेन बात किए बजलह?”

केना कहितिऐन जे बाबा जहिना डिबिया आकि लालटेनक

तेल जखन सठि जाइए तखन जोरसँ ओइमे इजोत होइए जइसँ लोक बुझि जाइत अछि जे तेल सठि गेल तँए आब मिझाएत। तहिना अहूँकेँ आइ बेसी खुशी देखै छी जइसँ बुझि पड़ल जे आब लगिचा गेलौं। मुदा से नहि बाजि विचारकेँ झाँपैत बजलौं-

“ओहिना कहलौं बाबा। जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे कखन छी आ कखन नहि।”

अपना जनैत अपने विचारकेँ झाँपि-तोपि बजलौं, मुदा हीरालाल बाबा बुझि गेला जे हमर उमेर आ आजुक खुशी देखि लीलाधर बाजल अछि। मुदा ओहो ऐ विचारपर जोर नहि दैत बजला-

“बौआ, अपना समाजमे एहेन चलैन अछि जे मरैकाल अपनो परिवारक लोक, कुटमो-परिवारक लोक आ गामो-समाजक लोक हुनका पुछै छैन जे किछु खेबो-पीबोक मन होइए, मुदा...।”

बाबाक बात सुनि अपना मनमे कनी लाजो हुअ लगल जे बाबा बुझि गेला। मुदा सभ दिन एकठाम बैस एक-आध घन्टा गप-सप्प करिते छी। ओना, गप-सप्प की करै छी जे चौरासी-पचासी बर्खक उमेर बाबाक छैन तँए हुनकासँ जीवनक अनुभवक बात पुछि बुझै छी जे अपनो जीवनमे काज औत। बजलौं-

“मुदा की बाबा?”

हीरालाल बाबा बजला-

“बौआ! अन्तिम समयमे माने मरैकाल लोकक मनमे चाहे किछु खेबा-पीबाक हुअए वा कोनो काजे-उदेम हुअए वा कोनो बाते-विचार हुअए, ओहने वस्तु वा विचार लोकक मनमे अबैए जेहेन ओकर जीवन रहल अछि।”

हीरालाल बाबाक विचार सुनि अपना मनमे विचित्र स्थिति–

माने द्वन्द–शुरू भेल। द्वन्दक कारण भेल जे गाम-समाजमे सभ दिन देखैत एलौं जे मरैतकाल लोक किछु नीको वस्तु आ मनक कोनो तेहेन लीलसो जे जीवनमे पूर्ति नहि भेल रहल से खेबो-ले आ बुझबो-ले जिगेसा करैए, मुदा हीरालाल बाबाक विचार तइसँ विपरीत छैन जे जेहेन जीवन बीतल रहल ओहने खेबोक आ विचारो लोकक मनमे उमड़ैत-घुमड़ैत रहैए.! पुछलयैन-

“बाबा, नीक जकाँ अपनेक बात नहि बुझि पेलौं?”

ओना, हीरोलाल बाबाक अपन जीवनक अनुभव छेलैन। किए तँ अपनो सभ दिन समाजमे सएह देखैत आबि रहल छला। मुदा अपन जीवनक जे अनुभवक सच्चाइ छेलैन माने अपन अनुभवसँ जे लोक सत्यक अनुभव करैए, ओ तँ छेलैन्हे। तँए मनक दृढ़ बिसवास बनले छेलैन। हीरालाल बाबा बजला-

“बौआ, जे वस्तु वा विचार लोकक मनमे कहियो एबे ने कएल ओ मरैकाल केना औत?”

अखन तक जे अपन जीवनक अनुभव हीरालाल बाबाक प्रति रहल अछि ओ अनुभवयुक्त रहल अछि तँए सत्यक अन्वेषण सदृश रहल अछि। तँए अखन तक जे हीरालाल बाबाक प्रति अपन धारणा रहल अछि ओ विश्वासप्रद रहबे कएल अछि। किए तँ बाबा हमरेटा-सँ नहि, जेकरा संग जे विचारे वा बेवहारे करै छैथ ओ अपन इमानक कासौटीपर रखि करै छैथ तँए सबहक बीच अपन अलग पहचान बनौनहि छैथ। जइसँ केतेको लोक हिनका ‘एकबोलिया’, ‘एकचलिया’ सेहो कहिते छैन।

ओना, हीरालाल बाबाक आजुक खुशी देखि अपने जे अन्दाजसँ अनुभव केने छेलौं ओ हीरालाल बाबाक विचारसँ सोल्होअना कटि गेल, मुदा खुशीक तँ किछु कारण हेबे करतैन जे

बुझि नहि पेब रहल छेलौं तँए मनमे खुट-खुटी बनले छल। एकाएक मनमे उठल जे जखन सभ दिन दुनू गोरे एकठाम बैस घर-परिवारसँ लऽ कऽ गाम-समाज आ देश-दुनियाँक बात करिते छी तखन किए ने हीरेलाल बाबासँ पुछि लिऐन जे बाबा आजुक खुशीक कारण की छी। किए तँ आन दिनसँ भिन्न आइ बुझि पड़ि रहल छी.? ओना, रहीम कवि कहने छैथ जे खैर, खून, खाँसी, खुशी ई सब केकरो दबने नहि दबाइए, अपने प्रकट भऽ जाइए। मुदा से तँ भऽ नहि पेब रहल छल। जी-जाँति बजलौं-

"बाबा, आइ अहाँकेँ बड़ खुशी देखै छी तेकर की कारण?"

हमर बात सुनि हीरालाल बाबाक खुशीमे जेना सह भेट गेलैन तहिना आरो खुशियाइत बजला-

"बौआ लीलाधर! चौरासी बर्खक अपन उमेर भऽ गेल अछि। गामेमे नजैर उठा कऽ देखहक जे हमरा एते उमेरक के सभ छैथ।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"से तँ दोसर कियो नहियेँ छैथ। अधिक गोरे जे साठि-सत्तैर बर्खक बिच्चेमे मुइला तइ हिसाबे अहाँ तँ भाग्यवान छीहे।"

भाग्यवान सुनि आकि अपन जीवनक दिनचर्या देखि हीरालाल बाबा बजला-

"बौआ, हठयोग क्रियासँ सेहो लोक साए के कहए जे साएसँ ऊपरो वरिस जीबै छैथ, मुदा जहिना हाथी शरीरे सभ जानवरसँ भारियो आ निरोगो तँ होइए मुदा कर्मक क्षेत्रमे ओकर केतेक महत्व अछि.! बेसी-सँ-बेसी यहए ने जे दू-चारि गोरेकेँ पीठपर चढ़ा सवारीक काज करैए, मुदा बकरियो-जोकर दूध दइए। तहूमे ओहन सवारीक काज करैए जेते लोक अपनो पएरो चलि सकैत अछि। कोनो कि घोड़ा जकाँ दौड़ैत चलैए जे समैयोक बँचत होइत।"

हीरालाल बाबाक हठयोग सुनि बुझबे ने केलौं जे बाबा की बजला। तँए पुछलयैन-

"से की बाबा?"

हीरालाल बाबा बजला-

"बौआ, शरीरक संग मनुक्खमे चेतन शक्ति सेहो अछि। तैठाम जँ चेतन शक्ति सुतले रहै आ शरीर हाथी जकाँ निरोगो आ भारियो बनि जाइ तइसँ की लाभ। मनुक्खक तँ मानवीय गुण श्रेष्ठ भेल से थोड़े होइए।"

हीरालाल बाबाक विचार कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। तँए विचार भेल जे दोहरा कऽ पुछिऐन मुदा जे बात बुझए चाहि रहल छेलौं तइसँ हटि दोसर विचारमे ओझराएब नीक नहि बुझि बजलौं-

"बाबा, रंग-बिरंगक विचारो आ जीवनो दुनियाँमे भरल अछि। अनेरे केते समुद्र उपछब। अपन जे जीवन अछि, जीवनक काज आ विचार अछि बस तेतबेमे किए ने अपनाकेँ राखी जे अनेरे दुनियाँ दिस वौआएब।"

हमर विचार जेना हीरालाल बाबाकेँ जँचलैन तहिना मुड़ी तँ डोलबए लगला मुदा बजला किछु नहि। दुनू गोरेक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। अपन मन जहिना हीरालाल बाबाक खुशीपर लटकल छल तहिना भरिसक हीरालाल बाबाक मन सेहो कोनो विचारमे ओझराएल छेलैन। तैबीच पोती चाह नेने पहुँचलैन। ई पोती तेसर बेटाक बेटी छिऐन। माने हीरालाल बाबाकेँ चारि बेटा छैन। चारू बेटाक परिवार अलग-अलग छैन। हीरालाल बाबा अपने चारिम बेटाक परिवारमे रहै छैथ। तेसर बेटाक बेटी–फुलकुमारी–केँ अपनो चिन्है छिऐ जे ओ हीरालाल बाबाक तेसर बेटा माने रघुनाथक बेटी

छी जेकरासँ अलग माने भिन्न चारिम बेटामे–माने मनोहरक परिवार–मे हीरालाल बाबा रहै छैथ, तँए कनी मनमे भेल जे बेटा भीन छैन तइ परिवारसँ चाह आएल.! मुदा से हीरालालो बाबा बुझि गेला। बुझि ई गेला जे लीलाधरकेँ शंका भऽ रहल छै जे दोसर परिवारसँ माने भीन भेल बेटाक परिवारसँ चाह आएल। हीरालाल बाबा मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, तूँ पुछने छेलह जे आइ बड़ खुशी देखै छी तेकर की कारण।”

अपन प्रश्नपर हीरालाल बाबाकेँ अबैत देखि बजलौं-

“हँ, से तँ अखन तक मनमे अछिए। तइ बीच कैकटा विचार उठि गेल।”

हीरालाल बाबा पुन: मुस्कियेला। मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, बुझले छह जे चारिटा बेटा अछि। चारूमे श्यामानन्द सभसँ जेठ, रविकान्त माझिल, रघुनाथ साझिल आ मनोहर सभसँ छोट अछि। जेकरा संग अपने दुनू परानी रहै छी।”

अपनो ई बात बुझल अछिए, बजलौं-

“हँ, से तँ बुझले अछि।”

हीरालाल बाबा बजला-

“चारू बेटा एक-दोसरसँ अलग अछि। भीन अछि। सम्पैत, खेत-पथार सेहो बँटाएल अछिए।”

बजलौं-

“हँ, सेहो बुझले अछि।”

एकाएक हीरालाल बाबा गम्भीर हुअ लगला। जेना किछु अतीतक विचार मनमे उपैक गेलैन। अपन बीतल दिनक चर्च करैत

बजला- “बौआ लीलाधर, बच्चेसँ एहेन विचार मनमे पनैप गेल छल जे सम्मिलित परिवार माने संयुक्त परिवार, सभसँ नीक परिवार होइए। बच्चामे माने बाबाक अमलदारीमे से बीतबो कएल। ओना, बाबाक एक पुरखियाह परिवार छेलैन। माने परबाबा सेहो भैयारीमे असगरे रहैथ, बाबा सेहो असगरे छला आ पिताजी सेहो असगरे छला जइसँ भिनौजीक कहियो प्रश्ने नहि उठल। बेटीक बाढ़ि तँ छल मुदा ओ सभ बिआह-दुरागमनक पछाइत सासुर बसैत गेली।”

विचारक प्रवाहमे मुहसँ निकैल गेल-

“ई तँ दुनियाँक रीतिये छी। सभकेँ होइ छै।”

हीरालाल बाबा बजला-

“हमरा लग आबि परिवारक रूप बदलल। माने हमरा चारिटा बेटा भेल, बेटी एकोटा ने भेल।”

बजा गेल-

“अहाँ सन भाग्यवान समाजमे कियो-कियो होइ छैथ। तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे भगवान जेकरा दुइयोटा बेटी देने छथिन ओइ परिवारक रूपेँ विकृत भऽ गेल अछि। माने दान-दहेजक तेहेन बाढ़ि आबि गेल अछि जे परिवारक कोनो दशा बाँकी थोड़े रहैए।”

हमर बात सुनि हीरोलाल बाबा स्वीकार करैत बजला-

“हँ, से तँ भइये गेल अछि। मुदा अपना परिवारमे दोसरो आफत आबि गेल। आफत ई आबि गेल जे चारू बेटाकेँ चारि रंग धिया-पुता भऽ गेल। माने जेठका श्यामानन्दकेँ पाँचटा बेटी आ एकटा बेटा अछि, दोसर रविकान्तकेँ चारिटा बेटा आ एकटा बेटी अछि, तेसरकेँ माने रघुनाथकेँ दूटा बेटा आ एकटा बेटी अछि आ चारिमकेँ माने मनोहरकेँ मात्र एकटा बेटेटा अछि।”

हीरालाल बाबाक विचार सुनि हँसी लगि गेल जइसँ बजा गेल- “भगवानोक किरदानी की कोनो नीक छैन।”

हमरा बातपर हीरालाल बाबा कोनो धियाने ने देलैन। बजला- “अपन विचार किछु अलग छल मुदा चारू बेटो आ चारू पुतोहुओक तँ अपन-अपन विचार छैन्हे। ओना, भैयारीक बीच जे वैचारिक सम्बन्ध अछि ओ नीक अछिए मुदा बेटा-बेटीक बीचक जे सामाजिक परिवेश बनि गेल अछि ओ लाख परियासक बादो समहैर नहि सकल। चारू बेटा भीन भऽ गेल।”

हीरालाल बाबाक मनक भावसँ बुझि पड़ल जे चारू बेटाक भिनौजीसँ हृदयमे भारी कचोट लगल छैन। मुदा उपाइयो तँ दोसर नहियेँ अछि। बजलौं- “बाबा, अपना विचारे सभ किछु थोड़े होइए, ऊपरबलाक जे विचार रहै छैन सएह ने होइए।”

एकाएक हीरालाल बाबा अपन विचारक पाशा बदलैत बजला-

“बौआ, ऊपरबलाक कोनो दोख नहि छैन, सभ मनुक्ख निरमित छी।”

ओना, अखन तक अपनो यएह बुझै छी जे बेटा-बेटी भगवानक इच्छानुसार होइए, तँए बजा गेल-

“बाबा, भगवान जेकरापर खुशी रहै छथिन तेकरा बेसी बेटा दइ छथिन आ जेकरापर बिगड़ल रहै छथिन तेकरा बेसी बेटी दइ छथिन।”

हमरा विचारपर धियान नहि दैत पाशा बदलैत हीरालाल बाबा बजला- “बौआ, संयुक्त परिवार अपना ऐठाम नीक मानल जाइत रहल अछि मुदा...।”

बजलौं- “मुदा की?”

हीरालाल बाबा बजला- “ओना, लोक बुझैए जे पूर्वमे माने पहिने संयुक्त परिवारक चलैन छल जे धीरे-धीरे टुटैत गेल आ एकजना परिवारक चलैन बढ़ि गेल। मुदा से बात नहि अछि। पहिनौं गोटिपङ्गरा संयुक्तो परिवार समाजमे छल आ बेसी एकजने परिवार छल। अखन समाजमे दान-दहेजक चलैन बेसी बढ़ि गेल अछि जइसँ जेहो संयुक्त परिवारक चलैन छल सेहो समाप्त भऽ गेल अछि। मुदा से बात नहि अछि। पहिनौं जे परिवार सुभ्यस्त छल, ओइ परिवारमे कोनो अभाव नहि रहने मेल-मिलाप बेसी छेलै जइसँ सम्मिलित परिवार निमहै छल मुदा जे परिवार अभावग्रस्त छल, जइ परिवारमे सभ कथुक अभाव रहै छेलै ओ परिवार एकजना छल। ओना, पहिने बेसी अभावग्रस्ते परिवार छल, एक्की-दुक्की सुभ्यस्त परिवार छल। जइसँ अदौसँ कहबी अछि ‘भाए-भैयारी महींसिक सींग जखने जनमल तखने भीन।”

अपना मनमे अखनो तक शंका बनले छल जे पूर्वक (पहिलुका) सभ परिवार संयुक्त होइ छेलै आ आब ओ प्रथा बदैल एकजना भऽ गेल अछि, तँए बजलौं-

“पहिलुका लोकक आ अखुनका लोकक विचारेमे बदलाव आबि गेल अछि तँए संयुक्त परिवार आब नहि रहल।”

हमर विचारकेँ परिमार्जित करैत हीरालाल बाबा बजला-

“बौआ, समय परिवर्तनशील अछि। समयेटा नहि दुनियाँक सभ किछु परिवर्तनशील अछि। काल्हि जे छल ओ आइ नहि अछि आ आइ जे अछि ओ काल्हि नहि रहत। तँए, मनुक्खकेँ समैयक परिवर्तित रूपकेँ चिन्हक चाही। जे ओइ रूपकेँ चिन्ह अपनाकेँ ओइ अनुकूल बना चलैए से आसानीसँ जीवन-यापन करैए आ जे नहि चिन्ह पबैए ओकरा समय सदिकाल धक्का दइते रहै छै।”

हीरालाल बाबाक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। तँए बजलौं- “बाबा, नीक जकाँ अपनेक विचार नहि बुझि पेब रहल छी।”

हमर बात सुनि हीरालाल बाबा गुम भऽ मने-मन विचारए लगला। की विचारए लगला से तँ वएह जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे बाबा अपन विचारकेँ असान ढंगसँ बुझबैक रस्ता खोजि रहल छैथ। किछु समय सोचला पछाइत हीरालाल बाबा बजला-

“बौआ, संयुक्त परिवारकेँ लोक मात्र आर्थिक रूपेँ बुझैए, मुदा ओ वैचारिक परिवार छी। जे परिवार विचारसँ जेते विचारशील अछि ओ परिवार ओते शान्त आ क्रियाशील रहि अपन महत्व समाजमे बनौनहि अछि।”

हीरालाल बाबाक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। बजलौं-

“बाबा, नीक जकाँ अपनेक विचार नहि बुझि पेलौं?”

हीरालाल बाबा बजला-

“बौआ लीलाधर, मनुक्ख वैचारिक जीव छी से तँ बुझै छहक।”

बजलौं-

“हँ।”

हीरालाल बाबा बजला-

“ईहो बुझै छहक जे धरतीपर जेते मनुक्ख अछि सभकेँ दूटा हाथ, दूटा पैरक संग बुधि-विवेक सेहो अछि?”

बजलौं-

“हँ।”

हीरालाल बाबा बजला- “जखन दूटा हाथ, दूटा पएर आ

बुधि-विवेक सभकेँ अछि तखन सभकेँ ने एक्के रंग सम्पैत भेल?”

बजलौं- “हँ।”

ओना, बजैक क्रममे ‘हँ’ बजा गेल। मुदा लगले अपन मन दोसर दिस चलि गेल। दोसर दिस जाइते पुन: बजलौं-

“बाबा, तखन सभ मनुक्खक विचारो आ काजो एक्केरंग किए ने होइए?”

हीरालाल बाबा बजला-

“बौआ, मनुक्खकेँ खाली दूटा हाथे-पएर आ बुधिये-विवेकटा नहि अछि, ओइ संग सामाजिक परिवेश सेहो अछि। जइ समाजक जेहेन परिवेश बनल रहैए ओइ समाजक किरिया-कलाप सेहो ओइसँ प्रभावित होइते अछि।”

हीरालाल बाबाक विचार कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। तँए बजलौं-

“बाबा, कनी खरियारि कऽ बुझा दिअ।”

हीरालाल बाबा बजला-

“देखैमे ऊपरसँ सभ मनुक्ख एक्केरंग बुझि पड़ैए मुदा भीतर जे ओकर ज्ञानशक्ति–चेतनशक्ति–अछि ओइमे अन्तर अछि। किछु गोरे बेकतीगत स्वार्थमे बेसी लीन रहैए। जेकर माने भेल जे दुनियाँमे केकरो किछु होउ मुदा अपने नीक जकाँ जीबी, यएह ओकर मनोवृति होइए। आ किछु गोरे एहनो तँ होइते अछि जे दुनियाँक आने-आन जकाँ अपनो जीवनकेँ बुझि सदैत सबहक जीवनक संग अपनो जीवन चलबए चाहैए।”

हीरालाल बाबाक विचार सुनि जेना अपन भक खुजल। बजलौं- “बाबा, कनी आरो स्पष्ट करियौ।”

हीरालाल बाबा बजला- “बौआ, मानि लाए अपन परिवार अछि। चारिटा बेटा आ चारिटा पुतोहु सेहो अछि। तइ संग पोता-पोती आ नाति-नातिन सेहो अछि। मुदा अपने अपन जीवन आ सम्बन्धकेँ चिन्ह सबहक संग माने जेकरा संग जेहेन सम्बन्ध अछि तइ अनुकूल, अपन विचारो आ काजो रखने छी जइसँ कखनो ई नहि होइए जे कियो आन अछि। तइ संग समाजोक परिवारकेँ अपने परिवार जकाँ सामाजिक सरोकार (सम्बन्ध) सेहो रखने छी जइसँ समाजो अपने परिवार जकाँ अछि।”

अपनहि बजा गेल-

“आब बुझलौं।”

हीरालाल बाबा बजला-

“चौरासी-पचासी बरख उमेर भऽ गेल अछि। परिवारसँ समाज धरि सभकेँ अपन बुझि, अपना काज–सम्बन्ध–केँ चिन्हैत जीब रहल छी, तँए मने नहि जीवनोमे खुशी अछि। जइसँ मनो खुशी अछि।”



शब्द संख्या : 2278, तिथि : 24 अप्रैल 2020

लजाउ काज

आजुक परिवेश, जइमे अनेको रंगक विचारो आ बेवहारो मनुक्खक जीवनकेँ चौबगली घेर लेलक अछि, तैठाम जीवनलाल कक्काक अपन विचारो आ बेवहारो अपना ढंगक छैन माने अपन विचारानुकूल छैन। कहब जे जीवनलाल काका ओहन दार्शनिक वा जीवनज्ञाता छैथ जे सभसँ भिन्न अपन जीवन आ बेवहार बना जीब रहला अछि? नहि, तेहेन नहि छैथ, मुदा ओहन जरूर छैथ जे मनुक्खक जीवनक मूल्यकेँ बुझै छैथ जे समाजक संग शास्त्रीय पद्धतिक आधारपर अपन जीवन स्थापित केने छैथ। आजुक परिवेश माने जीवन जीबैक परिवेश, अनेको विचारधारो आ सामाजिक रीतो-रिवाज माने बेवहारोसँ बहुआयामी भइये गेल अछि। तेकर कारण ग्रामीण जीवन आ ग्रामीण वातावरणसँ लऽ कऽ जे अविकसित अवस्थामे अछि, तइसँ आगू अर्द्धविकसित, विकसित आ अतिविकसित अवस्थाक समाजक सरोकार माने जीवनक सरोकार भेने जीवनमे मोड़ एबे कएल अछि। सुदूर गामसँ, जे बाढ़ि-रौदीसँ सदैत अक्रान्त रहल अछि। जइसँ गरीबीकेँ सदैत अनुकूल वातावरण भेटैत रहल अछि, तैठामसँ लऽ कऽ ओहन समाज धरि बनले अछि जे जीवनक सभ साधनसँ सम्पन्न भेला उपरान्त जीवनकेँ असान बना नेने अछि।

जीवनलाल काका जीवनक मूल्यकेँ अपन विचारक ओइ कसौटीपर अपनाकेँ स्थापित केने छैथ जे मानवकेँ मानवीय मूल्य माने मनुक्खक बीच मनुक्खक इष्टमय सिनेह आ सरोकार स्थापित

केने अछि। ओ स्पष्ट बुझै छैथ जे मनुक्खक जीवन केतेटा अछि। माने मनुक्ख केते दिन जीवित रहैए आ ओइ बीच कोन-कोन अवस्थासँ गुजरए पड़ै छै। तैबीच भौतिक जे परिवेश अछि ओ निसचिते जीवनकेँ असान बना देलक अछि। तैबीच दुनूकेँ माने जीवन आ परिवेशकेँ कोन रूपेँ सामंजस करैत सुखमय–प्रेममय–जीवन स्थापित करैत शान्तिसँ ओकर निर्वहन करैत जीवन लीला समाप्त करी।

ओना, मनुक्खकेँ एहेन गुण अवश्य रहल अछि जइसँ सभ चाहि रहल अछि जे अधिक-सँ-अधिक अपनाकेँ ऊपर उठाबी। एहेन विचार जीवनक एक पक्ष भेबे कएल जे सबहक मनमे हेबोक चाही। किए तँ ईहो सभकियो बुझिते छैथ जे मनुक्खक जीवन दोहरा कऽ नहि भेटैत अछि। दुनियाँ रंगमंच छी, तँए अधिक-सँ-अधिक आ नीक-सँ-नीक अपन प्रदर्शन करैक विचार सबहक मनमे छैन्हे। अही संग जीवनक दोसर पक्ष सेहो अछि जे मनुक्खक जीवन सीमेन्ट-बालुक मकान जकाँ निसचित अवधिक गारंटी नहि करैए। कुम्हारक काँच बर्तन जकाँ रोग-वियाधि सेहो रहिते अछि। जइले एक-दोसराक मदैतिक खगता सेहो होइते अछि, जे मानवीय सरोकार रहनहि भेट पबैए।

ऐठाम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि मनुक्खक आध्यात्मिक आ नीतिवान–नैतिक–जीवन प्राप्त करब। भारतीय चिन्तनधारा सदैतसँ नैतिक मूल्यकेँ श्रेष्ठ मानैत आएल अछि जइसँ दुनियाँक बीच सदैत अपन मूल्यवान स्थान प्राप्त केनहि अछि। प्रश्न अछि जे आध्यात्मिक जीवन आ नैतिक जीवन की दुनू एक्के छी? एक रंग चरित्र रहला पछातियो दुनू दू छीहे। आध्यात्मिक जीवन बेकतीगत होइए जखन कि नैतिकता समाजसँ जुड़ल अछि। व्यक्तिगत जीवन जँ आध्यात्मिक नहियोँ अछि तैयो नैतिकताक

आधारपर सामाजिक जीवन नैतिक भऽ सकैए। ओना, जखने मनुक्खमे नैतिकताक मूल्य विकसित करैए तखने आध्यात्मिकताक गुण सेहो मनुक्खमे आबियो जाइ छै, मुदा से नहियोँ एने माने आध्यात्मिकताक गुण, नैतिकताक गुण मनुक्खमे आबिये सकैए। बहुतमे एबो कएल अछि। आध्यात्मिक गुण बेकतीगत छी जइसँ मनुक्खक आचरण- मन, बुधि, विवेकमे गुण झलैकते अछि। मुदा नैतिकताक मूल्य मनुक्खकेँ सामाजिक सरोकारक बीच क्रियान्वित होइए। जेना अपन आचरण वा अपन मनक चिन्तन, विचार वा अपन विवेक अपना भीतर निहित रहैए जे दोसर नहियोँ बुझि पबैए मुदा नैतिकता समाजसँ जोड़ल विचारो आ आचरणो छी जे सभकेँ सभ देखबो करैए आ भोगबो करिते अछि। नैतिकता जे मनुक्खक गुणक श्रेष्ठ मूल्य छी, ओइ विषयमे भारतीय चिन्तनधारामे कहल गेल अछि-

एतद्देशप्रसूतस्य, सकासादय जन्मन:

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:

जीवनलाल काका अपन जीवन आ अपन परिवारक जीवनसँ पूर्ण सन्तुष्ट छैथ तँए अपन ऐगला पीढ़ीकेँ सेहो ओहने जीवन धारण करैक इच्छा मनमे रखने छैथ जइसँ मनमे एहेन विचार बनले छैन जे जहिना अपने किसानी जीवन जीब रहल छी तहिना बेटो जीबए। ओना, आइये नहि बल्कि सभ दिनसँ एहेन अछिए जे मनुक्ख अनेको जीवनक घेरामे घेराएल अछिए। पहिल घेरा छी बेकतीगत जीवन, दोसर छी सामाजिक जीवन आ तेसर छी राष्ट्रीय जीवन। दुनियाँक बीच आइये नहि, सभ दिनसँ देश-देशक बीच लूटो-पाट आ लड़ाइयो-झगड़ा होइते आबि रहल अछि। आजुक परिवेशमे, वैज्ञानिक विकास भेने, ओ आरो विकराल रूप पकैड़ लेलक अछि।

विज्ञानक विकास भेने लड़ाइक रूप सेहो बदैल गेल अछि। पहिने जैठाम लाठी-भाला, तोप-तलवारसँ युद्ध एक-दोसर देशक बीच होइत छल तैठाम आइ अणु-परमाणुसँ युद्ध भऽ रहल अछि। जइसँ मनुक्खक जीवन संकट ग्रस्त भइये गेल अछि। कोनो देश तखने सुरक्षित रहि सकैए जखन कि ओकरा अपन सुरक्षाक सभ साधन मौजूद होइ।

दोसर अछि सामाजिक जीवन। सामाजिक जीवनमे सेहो काफी बदलाव आएल अछि। जैठाम पहिलुका समाज किसानी जीवनपर आश्रित छल तैठाम आइ नव-नव औद्योगिक विकास भेने नव-नव शहरो आ नव-नव काजोक विकास भेबे कएल अछि। आवागमनक सुविधा सेहो बढ़ल अछि। जैठाम लोक पएरे एक गामसँ दोसर गाम जाइ-अबै छला तैठाम आइ तेज सवारीक संग हवाइ मार्ग सेहो भरपूर आगू बढ़ल अछि जइसँ देशक एक कोण-सँ-दोसर कोणक कोन बात जे एक देशसँ दोसर देशक भ्रमण असान भइये गेल अछि।

अखन तक जे समाजक जीवन अपन रीति-रिवाजसँ चलि रहल छल ओइमे काफी बदलाव भेल अछि। मनुक्खक एहेन सोभाव अछिए जे अधिक-सँ-अधिक सुविधा चाहिये रहल अछि। ओना, आजुक परिवेशमे माने मशीनी जुग एने, उत्पादन एते तेज गतिसँ बढ़ि रहल अछि जे जीवनक मूल आवश्यकताकेँ सेहो असान बनाइये देलक अछि। जीवन जीबैक मूल आवश्यकता प्राप्त करैक साधन भलेँ असान किए ने भेल हुअए मुदा मानवीय संवेदना आ मानवीय सम्बन्धमे विघटन नहि भेल अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। किए तँ जहिना आवश्यक वस्तु किछु खास वर्ग वा बेकतीक हाथमे अछि, जे रंग-बिरंगक चालि चलि ओइसँ लूट-खसोट मचौने अछि, तहिना दोसर दिस बहुसंख्य आबादी अभावक (गरीबीक)

ओहन घेरामे घेराएलो अछि आ घेराइयो रहल अछि जइसँ ओकर जीवन संकटसँ संकटग्रस्त भइये रहल अछि। एहना स्थितिमे मनुक्ख बेकार भेल जीवन-जापन कऽ रहल अछि। जीवन भारी भेल जा रहल छइ। खास कए ओहन मनुक्खक जेकरामे बेकारी पसरल छै, हाथकेँ काज नहि भेट रहल छै, जइसँ ने अपन बाल-बच्चाकेँ भरि पेट अन्न दऽ पबैए, ने भरि देह वस्त्र दऽ पबैए, ने स्कूल पठा पबैए आ ने बीमारीक इलाज करा पबैए।

जीवनलाल काकाकेँ मात्र दुइयेटा सन्तान भेलैन, एकटा बेटा आ एकटा बेटी। बेटी जेठ आ बेटा छोट। ओना, जीवनलाल काका दुनू परानी दुनू सन्तानसँ पूर्ण सन्तुष्ट छैथ। किए तँ माइयो-बापमे सन्तानक भेद-भाव भेने असन्तुष्टि आबिये जाइए, से जीवनलाल काकाकेँ नहि भेलैन। असन्तुष्टि अबैक कारण होइए जे जँ किनको चारिटा सन्तान भेलैन आ चारू बेटे भेलैन, बेटी नहि भेलैन, तखन बापकेँ भलेँ दहेजक लोभमे सन्तुष्टि किए ने हौनु मुदा माइक मनमे असन्तोष बनियेँ जाइ छैन जे बेटी नहि भेल। तहिना किनको जँ चारि वा पाँच बेटीए भेलैन, बेटा नहि भेलैन तखन पितोक मनमे आ माइयोक मनमे असन्तुष्टि आबिये जाइ छैन जे बेटा नहि भेल। ओना, दुनूक अपन-अपन महत्व सेहो अछि। बेटीकेँ लोक परधन बुझिते छैथ जे सोभाविक सेहो अछिए, किए तँ बिआह-दुरागमन भेला पछाइत बेटी अपन माए-बापकेँ छोड़ि दोसर घर चलि जाइए। जइसँ अपन बाप-पुरुखाक परिवारो अन्त भऽ जाइए आ संग-संग जीवनक जे अवस्था अछि माने बच्चासँ बुढ़ापा धरिक, तइमे बाधा सेहो उपस्थित होइते अछि। बाधा ई जे जहिना बच्चाकेँ माता-पिता वा दोसर सहाराक जरूरत होइए तहिना बुढ़ापामे माइयो-बापकेँ शरीर गिरला पछाइत माने रोगग्रस्त वा बुढ़ापाक चलैत दोसराक जरूरत सेहो होइते अछि। खाएर जेतए जे हुअए मुदा जीवनलाल काका दुनू

परानी अपन दुनू सन्तानसँ पूर्ण सन्तुष्ट छैथ।

बेटी जखन बिआह करै-जोकर भेलैन तखन दुनू परानी जीवनलाल कक्काक बीच सेहो विचार-विनिमय भेला पछाइत एक विचारपर आबि निर्णय भेलैन। निर्णय एना केलैन जे पत्नी–सुदामा–ई नहि बुझै छेली जे जाबे जीबै छी ताबे बेटी केना बेटी जकाँ परिवारसँ–माने माता-पितासँ– बेटीक रूपमे जुड़ल रहत। तँए सुदामाक मनमे आने जकाँ विचार रहबे करैन जे केतौ बेटीक बिआह भऽ जाए। मुदा जीवनलाल कक्काक मनमे रहैन जे जेहेन अपन परिवार अछि माने किसानी जीवनसँ जुड़ल परिवार अछि तेहने परिवारमे बेटीक बिआह करब जइसँ ओकरा जीवनमे कहियो विषमता नहि औत। विषमता ई जे एक रंगक परिवारक जीवन एकरंगाह बनल रहैए, मुदा दू रंगक परिवार रहने विषमताक सम्भावना बनियेँ जाइए। भलेँ मनुक्ख रहने लोक अपन अँटावेश किए ने कऽ लिअए मुदा जीवनक जे पद्धति अछि ओइमे किछु-ने-किछु खाँच-खरोंच आबिये जाइए।

बेटीक बिआहक समय जीवनलाल काका सुदामाकेँ कहलैन-

“रंग-बिरंगक लोक रंग-बिरंगक बात कथा-कुटुमैतीक समय बजबो करैए आ करबो करैए मुदा बेटी अपन छी तँए सभ किछु देखि-सुनि हम कुटुमैती करब। माने बेटीकेँ बिआहब।”

पतिभक्त सुदामा एक्के शब्दमे बजली-

“जेना अखन तक बेटीकेँ अन्न-वस्त्र भेटैत रहल तहिना भेटैत रहौ, तेहने परिवारमे बेटीक बिआह करब जे कोइ कहियो आँगुर नहि बतौत जे फल्लाँ दान-दहेजक दुआरे बेटीकेँ गरदैन काटि लेलक।”

पति-पत्नीक बीच विचारक साम्य हेबाक मुख्य कारण ईहो अछि जे सोभावगत कोन माए-बाप एहेन छैथ जे अपन बेटीकेँ अपन

किरदानी (काज) सँ अधला सोचै छैथ, मुदा सामाजिक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जइसँ बाध्य भऽ माता-पिता अपन बेटीक बिआहक भार उतारै पाछू ओकर भविसकेँ नजरअन्दाज कइये रहला अछि। मुदा जेतए जे हुअए, जीवनलाल कक्काक मनमे से नहि रहैन। जीवनलाल काका अपन मनमे रोपि नेने रहैथ जे हमरा सम्पैतमे जेते अधिकार बेटाकेँ छै ओते अधिकार बेटियोकेँ ने अछि, तँए जँ अपन जोगारसँ बेटीक बिआह करैमे पछड़ए लगब तखन खेतो-पथार बेच ओकर पूर्ति करबे करब। मुदा एहेन काज कोनो हालतमे नहि करब जइसँ बेटी घरक मोख लग बैस कानि-कलैप जीवन भरि गरियबैत रहत। अपन दुनू परानीक मन जेहेन जीवनलाल कक्काक छेलैन, बेटीक बिआह तेहने भेलैन।

बेटा–मनोहर–केँ सेहो जीवनलाल काका पढ़ै-लिखैमे अभाव कहियो नहि होमए देलखिन। मनोहर कलाक विद्यार्थी। बी.ए. पास केलक। ओना, आवश्यकतानुसार शिक्षाक सेहो जरूरत अछिए। दुनियाँक जे युद्धोन्मुख परिवेश बनि गेल अछि तइले वैज्ञानिकक जरूरत सेहो समाज आ देशोकेँ अछिए। ओना, खाली अस्त्रे-शास्त्रटा ले नहि बल्कि अपन आन्तरिक विकासक ले सेहो वैज्ञानिकक जरूरत अछिए। तहिना स्वास्थ होउ आकि इंजीनियरिंग वा अन्य कोनो विधा, विज्ञानक अध्ययनक जरूरत सेहो अछिए। वैज्ञानिकक निर्माण केना हएत तइले स्कूल-कौलेजक जरूरत सेहो अछिए। तहिना बहुआयामी जीवनक लेल वाणिज्य, कलाक जरूरत सेहो अछिए। सबा अरब जनक देश भारत मानव संसाधनसँ सेहो सम्पन्न अछियो। जहिना अनेकोरंगक गुणक खगता अछि तहिना अछियो। खाएर जेतए जे अछि से तेतए रहअ। जीवनलाल कक्काक अपन विचार अपन जीवनानुकूल छैन। जहिना अपने सभ दिन अध्ययन-अध्यापनसँ जुड़ल रहि समाज सेवाकेँ जीवनक मुख्य उदेस बुझि

किसानी वृतिसँ संलग्न रहला, तहिना अपन बेटाकेँ सेहो देखए चाहि रहला अछि। ओना, पढ़ल-बिनु-पढ़ल लोक जे बजारोन्मुख भेल अछि तइ विचारक विरोधी जीवनलाल काका छथिए। तँए अपन जेहेन जीवन बनौने छैथ तेहने जीवन बेटोक देखए चाहै छैथ। जइसँ जहिना अपने अपन माता-पिताकेँ अन्तो-अन्त माने जीवनक अन्तिम क्षण तक सेवा केलैन तहिना अपनो बुढ़ापा बीतैन, एहेन विचार मनकेँ घेर पकड़नहि छैन।

बी.ए. पास जखन मनोहर केलक तखन जीवनलाल काका कहलखिन- “बौआ! अपना ऐठाम–माने गाम-समाजक लोकक बीच खेतीकेँ माने कृषि वृतिकेँ, बजैक क्रममे तँ नीक वृति सभकियो जरूर कहै छैथ मुदा जखन पढ़ल-लिखल लोक ओइ वृतिकेँ अपनाबए चाहैए माने खेती करए लगैए तखन मूर्खसँ पढ़ल-लिखल तक ओकरा ताना मारैए। जेकर परिणाम भेल अछि जे पढ़ल-लिखल लोक कुवृति-सँ-कुवृति करैले तैयार होइए मुदा कृषि वृतिसँ अपनाकेँ अलग रखए चाहि रहल अछि।

ओना, कृषि वैज्ञानिक जे कृषिक महतकेँ बुझै छैथ आ अपनाकेँ वैज्ञानिक रूपमे स्थापित सेहो केने छैथ, दोसर वैज्ञानिकक समकक्ष अपनाकेँ बुझि जीवन-जापन करै छैथ तइ दिस गामक पढ़ल-लिखल लोकक नजैर नहि पहुँच विपरीत दिशामे भाँसिये रहल छैन जे देशेक नहि समाजक सेहो दुर्भाग्य छी। पढ़ल-लिखल लोककेँ कृषिसँ विमुख भेने देशक किसानी जीवन आ कृषि कार्य चौपट भइये गेल अछि। कहैकाल सभ कहै छैथ जे देश किसानक छी मुदा किसान आ देशक किसानीक की दशा अछि तइ दिस कियो ढंगसँ– माने गहराइसँ–नहि देखि पेब रहला अछि। मनुक्खक जीवन खाली खेबे-पीबे आ सुखे-भोगटा नहि छी। एकर अतिरिक्त मानवीय सम्बन्ध सेहो छी। दुनियाँक जेते जीव-जन्तु अछि तइमे मनुक्ख

सभसँ श्रेष्ठ मानले-टा नहि जाइए, वस्तुत: अछिये। कोनो जीव-जन्तुकेँ ने जीबैक अपन कोनो आधारक बोध छै आ ने विचारे वा विवेके छै।”

मनोहर विचित्र द्वन्दमे फँसि गेल। एक दिस समाजक जे बहरबैया माने जे गामसँ बाहर नोकरी करै छैथ, हुनकर जे रहन-सहन आ जीवन छैन ओ अपना दिस मनोहरकेँ आकर्षित कऽ रहल अछि, तँ दोसर दिस अपन माता-पिता आ सर-समाजक सम्बन्ध सेहो आकर्षित कइये रहल अछि। तइ संग अनपढ़ समाजक जे कुट्टी-चाल पढ़ल-लिखल कृषकक ऊपर होइए सेहो मनमे नाचिये रहल छेलइ। ओना, मनोहर ईहो बुझि रहल अछि जे पैघ-सँ-पैघ पद–ऐठाम पदक माने राजनीतिसँ शिक्षा धरिक अछि–पर आसीन, अपनाकेँ कृषक परिवारक आ किसानक बेटा कहैमे गौरव सेहो महसूस करिते छैथ मुदा किसानीक जे दशा बनि गेल अछि तइ दिस अपनाकेँ बदलैमे हिचकिचाहटो छैन्हे।

दरबज्जापर असगरे बैसल जीवनलाल काका अपन परिवारक अतीतसँ भविस दिस, मने-मन सोचि रहल छैथ। अतीतक अपन परिवार सेहो देखि रहल छैथ आ बदलैत परिवेशमे परिवारक भविसकेँ निसचित आधार नहि भेट रहल छैन। जइसँ परिवारक उगैत-डुमैत रूप सेहो देखि रहल छैथ। ओना, मनकेँ ईहो प्रवल विचार पकड़नहि छैन जे जइ मनुक्खकेँ देव बनैक शक्ति छै ओ अपन शक्तिकेँ नहि परेख जीवनक मझधारमे डुमि रहल अछि। अन्तो-अन्त जीवनलाल कक्काक विचार ऐठाम आबि अँटैक जाइ छैन जे मनोहर पढ़ल-लिखल अछिए, जइसँ कोनो बात बुझैक क्षमता अपनो छै आ जँ कोनो बात नहि बुझि पेब रहल अछि तँ किए ने अपन जीवनक अनुभवसँ ओकरा अभिभूत करी जे बुझला पछाइत अपन विचारानुकूल जीवन धारण करत। यएह सोचि

जीवनलाल काका पत्नियोँ आ बेटोकेँ सोर पाड़लैन। अबिते मनोहर बाजल- “की कहै छी?”

सुदामाकेँ बगलमे बैसबैत जीवनलाल काका मनोहरकेँ कहलैन- “बौआ, तोहर पढ़ाइ समाप्त भऽ गेलह। ओना, पढ़निहार जिनगी भरि अपनाकेँ पाठक बना चिन्तन-मनन करैए। मुदा से नहि, कौलेजक पढ़ाइक एक सीमापर पहुँच समाप्त भऽ गेलह। आगूक जीवन केहेन बनबैक विचार छह, सएह बुझैले बजौलियह हेन। अखन माइयो सोझहेमे छथुन, ईहो अपन जीवनक अनुभव कहबे करथुन।”

पिताक बात सुनि मनोहर गुम भऽ गेल, किए तँ अखन तक अपन जीवनक सम्बन्धमे किछु ने विचारने छल। थोड़ेकाल मने-मन सोचि मनोहर बाजल- “अहाँक की विचार अछि?”

अपनापर भार पड़ैत देखि जीवनलाल काका बजला- “बौआ, साठि बर्खसँ ऊपर उमेर दुनू परानीक भइये गेल अछि। केते दिन आब जीबे करब। मुदा जएह दिन जीब से केना जीब, ई तँ एकटा प्रश्न अछिए। किएक तँ मनुक्खकेँ एको दिनक पीड़ा ओहन होइए जे अपने-आपकेँ या तँ हत्या कऽ लइए वा अपन जिनगी भरिक विचारकेँ गोबरखत्तामे फेक दइए। जइसँ जीवनक सभ केलहा मेटा जाइ छै। अपना ओते खेत-पथार अछिए जे जँ समुचित ढंगसँ ओकर उपयोग करबह तँ कहियो कोनो तरहक दिक्कत नहियेँ हेतह।”

तइ बिच्चेमे सुदामा बजली-

“बौआ, जहिना बच्चामे तोरा पोसलिय तहिना आब हमरो दुनू परानीक हूबा तँ दिनो-दिन घटबे करत, तइले ते तोंही दुनू परानी ने सहारा हेबह।”

समाजमे देखैत विचारकेँ माने पढ़ल-लिखल लोक जँ हर-

कोदारि चलबैए, ओना मशीनी जुग एने हर-कोदारिक स्थान ट्रेक्टर लइये लेलक अछि, तँ पढ़लो-लिखल ओकरा मूर्ख बुझै छै आ बिनु पढ़ल-लिखल सेहो पढ़बकेँ पानिमे देब बुझिते छै, जइसँ हँसी उड़ैबते अछि। अही विचारकेँ धियानमे राखि मनोहर बाजल-

"बाबू, लोको लाज तँ.?"

जीवनलाल काका बजला-

"बौआ, लोके निरलज अछि.! जे काज लोक-लाजक अछि–माने नीच काज–ओ सीना तानि करबो करैए आ सीना तानि समाजमे चलितो अछि, मुदा किसानी तँ एक जीवन छी। जेकरा करैमे लजाइक कोन बात अछि।"

सह पाबि सुदामा बजली-

"बौआ, जे लजाउ काज अछि तेकरा लोक हँसि-हँसि करैए आ जे जीवनक मूल आवश्यकता छी, तेकरा लजाउ बना लोक निन्दा करैए। यएह तँ निरलज समाज छी। तेकर लाज किए करै छह।"

मुस्कुराइत मनोहर बाजल-

"सएह.!"

जीवनलाल काका बजला-

"हँ, सएह।"



शब्द संख्या : 2394, तिथि : 02 मई 2020

सीमावद्ध जीवन

रबनापुर एकटा गाम। आने गाम जकाँ सभ रंगक माने जहिना आन-आन गामक सभ सभवृतिक, सभ रंगक माने गोर-कारी, आ सभ तरहक माने लम्बाइ-चौड़ाइक लोक तहिना रबनापुरक लोक सेहो। ने एकछाहा फ्रान्सीसी-इटालियन जकाँ गछगरे सभ आ ने साइबेरियन-मंगोलियन जकाँ खजुरीए। ने अफ्रीकन जकाँ सभ कारीए आ ने अमेरिकन जकाँ सभ दुधगोरीए। अड़ोस-पड़ोस गामक लोक जहिना गोर-कारी, नमगर-चौड़गर तहिना गोरो-कारी, गछगरो-बौनो आ भुटो लोक रबनोपुरमे अछिए। एकटा अन्तर आन गामक अपेक्षा रबनापुरक लोकमे जरूर अछि, ओ अछि जे आन-आन गाममे जेना पुरुखक संख्या किछु बेसी रहैए आ नारीक संख्या कम, से रबनापुरमे नहि अछि। विधाता सोल्होअना इमानदारी रखि जेते बेटा गढ़ै छैथ तेतबे बेटी माने लड़का-लड़की बरबैर, सेहो आइये नहि, सभ दिनसँ गढ़ैत आबियो रहला अछि आ अखनो ओही इमानदारीकेँ निमाहि रहल छैथ। जेते औरत गामसँ आन गाम–दुरागमनक पछाइत–जाइए तेते आन गामसँ अबितो अछि तँए पूरम-पूर हिसाब विधाताक छैन। रबनापुरक लोक साले-साल सामूहिक समारोह मना विधाताक किरदानीकेँ नमनो करै छैन, धन्यवादो दइ छैन आ शुभकामना सेहो दइते छैन। किए ने देतैन.! आन गाम जकाँ जखन मनमे कोनो खटुका नहि छैन माने दूजा-भाव नहि छैन, तखन गौंउए किए अपन बदनेती देखौत। तँए जेते खुशी विधाता गौंआँपर छथिन तइसँ मड़ुओ बरबैर कम गौंउओ विधातापर नहियेँ छैन। भेल

तँ जहिना महींस-पर्डुक मिलान आ ठेहुनो पानि दुहान तहिना विधि-विधाताक मिलान आ शुभ-शुभ कल्याण। यएह ने सभ चाहितो अछि, हौ नहि हौ, ई दीगर भेल।

मेघौन जकाँ अकास, बुन्दा-बुन्दी कखनो-कखनो पानियोँ होइत आ कखनो-कखनो बुनछेको करैत। खेत-पथारमे काज करै-जोकर अनुकूल समय नहि पेब, बैसारी भऽ गेल। दोसरो कारण अछि, ओ अछि जे तेते ने बरखा भेल जे घर-आँगन छोड़ि, सभकिछु पानिमे डुमल अछि। पढ़ै-लिखैसँ ओते सिनेह नहि जे कोनो किताब उठा पढ़ितौं आ समयकेँ आगू मुहेँ ससारितौं। बुझले अछि जे बैसारी लोकक मन औनाइते अछि, जइसँ नीक काज नहि बुझने वा रहने जहिना सभ अधले काज हथियाबए लगै छैथ तहिना कखनो-कखनो मनमे हुअए। मुदा जीवनक अभ्यासोक तँ अपन महत् छइहे, जइसँ अधला काज दिस मन जरूर हुरकए मुदा अपने दोसर मन महाभारतक कृष्ण जकाँ ओइ मनकेँ तेना रोकि दिअए जे सभ योजना एक्केबेर ढहि-ढनमना जाइत रहए। ने समय अनुकूल देखिऐ जे किछु करितौं आ ने कोनो विचारे एहेन मनमे उठए जे तैपर विचार करितौं जइसँ मरियाएल समय जे जीवनक अछि ओ कटैत। किछु फुरबे ने करए जे की करी। आगू दिस देखी तँ किछु दूर तँ फरीच बुझि पड़ए मुदा तइसँ आगू अन्हराएले सन देखि पड़ए। पाछू दिस तकलौं कि बाबाक ओ बात मोन पड़ि गेल जे मरैकाल अन्तिम रूपमे कहने रहैथ। ओ अछि, ‘जँ अपने कोनो काज वा विचार ऐना जकाँ मनमे झलकैत नहि बुझि पेबिऐ वा कोनो काजे नहि कऽ पेबी तँ दोसरकेँ पुछि लिऐन’, बाबाक विचार मनमे अबिते देहमे जेना फुन-फुनी उठल।

फुनफुनी उठिते मनमे विचार आएल जे ‘अखन जे प्रतिकूल समय बनि गेल अछि तैबीच केना जीब सकब?’ प्रश्न भारी अछि कि

हल्लुक से अपने बुझबे ने करैत रही तँए बाबाक कहल विचारकेँ मनेमे रखि विचारनाथ काकासँ विचार पुछए विदा भेलौं।

दरबज्जापर बैसल विचारनाथ काका अपन पत्नीसँ माने बुधियारि काकीसँ गप-सप्प करैत रहैथ कि पहुँचलौं। पहुँचते दू लग्गा पाछूए-सँ दुनू हाथ जोड़ि बजलौं-

“गोड़ लगै छी काका.!”

ओना, हमरा पहुँचै आ गोड़ लगैसँ पहिनहि विचारनाथ काका बाजब शुरू केने छला-

“आबह, आबह भजन। बहुत दिनक पछाइत चेहरा देखलियह हेन.!”

बिच्चेमे हम हाथ जोड़ि गोड़ लगने छेलिऐन तँए हमर बात जहिना ओ सुनलैन कि नहि सुनलैन तहिना हमहूँ अपन बात बजै पाछू छेलौं तँए हुनकर सभ बात तँ नहि मुदा पैछला बात ‘देखलियह हेन’ से नीक जकाँ सुनलौं। कक्काक असीरवादक भाँज मोन नहि रहल, अपन भाँज पुरबैत मुहसँ निकलल-

“बहुत दिनसँ काका नइ देखने छेलौं तँए मन भेँट करैले उवियाइ छल, समयो पकड़ाएल।”

अपन जे मनक विचार छल ‘एहेन दिन केना कटत?’ तेकरा मनेमे दाबि लेलौं। किएक तँ अपने मन कहि देलक जे ‘जखन कुशल-क्षेमसँ गप उठत तँ बिच्चेमे अपन विचार घोंसिया देब। जइसँ विचारनाथ काका बुझबो ने करता आ अपने उत्तरक बात बुझि लेब।’ एकर माने ई नहि बुझब जे हम काकाकेँ चलाकी मारलयैन। भाय! जखन दुर्काल समय भेल अछि से कि कोनो हमरेटा ले भेल अछि आकि सभ ले भेल अछि, जखन कुशल-क्षेमसँ गप उठत तखन अपनो जीवनक बात ने काका बजता। तही जीवनक बातक

संग अपनो जीवनक ने बात बीचमे रखि देब। जीवनो तँ जीवन छीहे किने। जइमे चुट्टी-पीपरीसँ लऽ कऽ हाथी सन हथगर-मोटगर सेहो अछि आ हाथीकेँ चाङ्गुरमे लऽ उड़ैबला चिड़ै सहदुल सेहो अछिए।

ओना, जहिना हम विचारनाथ काकाकेँ लंकाक विभीषण बुझै छिऐन तहिना ओहो हमरा सुग्रीवक हनुमान जकाँ बुझिते छैथ, तँए गप-सप्प करैमे ने हमरे कोनो असोकर्ज होइए जे मनमे हएत जे कक्काक मुँह-कान किछु आरो छैन आ काम-धाम किछु आर, आ ने वएह बुझै छैथ जे भजनक चालि-वाणि किछु और अछि आ चालि-ढालि किछु और।' तँए बेनग्न विचार जहिना हुनकर छैन तहिना अपनो बनबए चाहै छी, मुदा ओ ढहि जाइए। लंकामे जहिना विभीषणक असगरूआ परिवार छेलैन माने एकाकी परिवार, तहिना विचारनाथ कक्काक परिवार अपना गाममे माने रबनापुरमे सेहो छैन। विभीषणक परिवारक कथा तँ त्रेता-जुगक छी तँए देखल तँ नहि अछि मुदा सत्ताइसो रामायणिक कथा तँ सुनल अछिए। सत्ताइस रामायणिक माने भेल सत्ताइस भाषामे लिखल रामायण। ओना, जखन कोनो उलझनमे पड़ै छी माने समाजक कोनो काजेक आकि विचारेक, तखन मन खिसिया कऽ कहबे करए लगैए, राम अपन घरवाली ले एकटा देशकेँ नाश कऽ देलखिन से उचित भेल? हमरा जकाँ जे सौंसे गामक लोककेँ माने गामवालीकेँ, एक्के दिन एक्के घड़ीमे संग छोड़ि जाइत सोझामे देखै छी, जँ एहेन भार रामकेँ पड़ल रहितैन तँ ओ दुनियेँकेँ उजाड़ि दइतैथ। ..मुदा लगले मन विचारकेँ रोकि आगू बढ़ल जे अनेरे अतीतमे बेसी समय व्यतीत करब उचित नहि, जे समय चलि रहल अछि तैसंग ने चलब अछि आकि बाबाकेँ हाथी छेलैन आ अपने अनका हाथीक फिलमानी कऽ रहलौं अछि, आ मने-मन बाबाक हाथीपर भ्रमणक भ्रममे पड़ल छी तखन भरमल छी आकि जनमल छी से तँ अपने ने बुझब। अनकर

मुँहक बात सत्यो भऽ सकैए आ फूसियो तँ होइते अछि।

विचारनाथ कक्काक परिवारक अपन पहचान छैन। ओना, अपनो हुनके परिवारक देखा-देखी करए चाहै छी मुदा से समय-कुसमय भसैक जाइए, जइसँ काँच घैलक पानि जकाँ छिड़ियाइते धरती सोंखि लइए। भाय जीवन छी कि ठठ्ठा। ओना छी ठठ्ठे। जाबे उठिकऽ ठाढ़ जीवनक घर-दुआर नहि बान्हब, ताबे जीवन जान छोड़ि काते-काते नचैत रहत आ अपने कठपुतली नाच जकाँ पाँखिबला पक्षी छी कि चिड़ै छी आकि पाँखिबला टुकलीए छी, सेहो भेद ने बुझि सकब।

विचारनाथ कक्काक सात गोरेक परिवारमे दूटा छोट बच्चा अछि, बाँकी पाँच गोरे समकस छथिए। पाँचोक अपन खुलल जीवन ऐ तरहेँ छैन जे जहिना कलमी आमक गाछ होइए। कलमी आमक गाछ जकाँ एक जीवन माने पीपही गाछ, दोसर जीवनक डारि पकैड़ माने जइ गाछमे कलम लगौल जाइए, नव जीवन बनि दुनियाँमे ठाढ़ होइए, तहिना छैन। पानिक चलैत जेना गामक लोकमे बैसारी भेल माने रबनापुरक लोककेँ, तेना विचारनाथ काकाकेँ नहि भेलैन, किए तँ नारदे जकाँ त्रिकालदर्शी दुनू परानी माने विचारोनाथ काका आ बुधियारियो काकी, छथिए। तँए अपन जान ले प्राण लगबै पाछू दुनू परानी जीवनक गप-सप्प करै छला तैबीच हम पहुँचलौं। ओना, हमरा पहुँचैसँ पहिनहि बुधियारि काकी पुछने छेलखिन जे बाड़ीमे तँ पानि सटैक गेल। अहीं परसू कहने रही जे मामा गाम बाढ़िमे दहेबे ने कएल आ बरखेमे दहा गेल। तेहेन पाइनिक बेग मारलकै जे बिच्चे गाम देने धार फुटि गेल आ सबहक घर स्वाहा भऽ गेलइ। जखन एहेन दुर्काल समय भऽ गेल अछि जे जीवन जटिले नहि जटिलतम स्थितिमे पहुँच गेल अछि तखन तँ पहिने अपने जीवन ने रोपब, जइसँ दोसरो-तेसरोकेँ रोपैक रस्ता भेटतै।

ओना, मुड़ी डोला विचारनाथ काका सूहकारि रहल छला जे पत्नी सोल्होअनाकेँ के कहए जे बत्तीसोअनासँ ऊपर चौंसैठोअना विचारणीय बात बजली अछि, मुदा कर्मस्थल, धर्मस्थल आ मर्मस्थलक बीच जे अखन दूरी बनि गेल अछि, किए तँ खेती केनिहार किसानक सभ खेत पानिमे डुमि गेल छैन जइसँ अनेको समस्या, जेना माल-जालकेँ पोसैक संग अपनो जीवनक आनो-आन समस्याक घेरा तँ लगिये गेल छैन। विचारनाथ काका बुधियारि काकीकेँ पुछलखिन-

"केना जीवन रोपब?"

सोचल बात बुधियारि काकीकेँ रहबे करैन, मुहेँ लागल बजली-

"अखुनका समयमे घास-पात छोड़ि कोनो आन तीमन-तरकारीक अनुकूल समय नहि अछि, बाड़ीक पानि सटैक गेल, बुझब जे जुए खेलेलौं, तँए अखुनका समैयक जे साग अछि, ओकर बीओ अपना घरेमे अछि, काल्हि ओइमे छीटि देबइ।"

जिनगीक परखल पत्नी बुधियारि काकी छेबे करैथ, अपन विचारक निर्णय विचारनाथ काका मने-मन सूहकारि मुँह बन्न केने रहला। तही बीच अपने पहुँचल छेलौं, जे बात, माने दुनू परानीक बीचक बात विचारनाथ काका गप-सप्पक क्रममे बजला। अपना जनैत विचारनाथ काका सभक सभ बात बाजि गेला मुदा अपने से बात ठेकनेबे ने कएल। किए तँ भुजंगप्रयात छन्द जकाँ साँप तँ सभ बात 'भुजंग-प्रयात, भुजंग प्रयात., बाजि गेल मुदा अपने जे गरूड़े जकाँ आँखि मुइन कऽ सुनैत रहलौं तइमे अपन विचार मुनाएले रहि गेल। खाएर किछु भेल तँ भेल, गामक बात छी, एक बेरकेँ के कहए जे हजारो बेर उठि सकैए। तइले अनेरे जे मथहानि केने रहब सेहो

नीक थोड़े भेल। नव सिरासँ फेर मनकेँ बोइस पोनगेलौं। पोनैगते मनमे उठल- आइये नहि, जहियासँ ज्ञान प्राण भेल तहियेसँ, ओना, अपन उमेरे केते भेल अछि तहूमे ज्ञान-प्राणक, मुदा बहुत नहि तँ थोड़बो तँ भेबे कएल अछि तइमे जे देखैत एलौं अछि जे आन-आन परिवारमे भोर होइते धिया-पुता चाँए-भाँए करए लगैए आ अभावी मन माइयक रहने ओइ धिया-पुताकेँ शान्तिसँ चुप नहि कऽ, दू-चारि चाट ऊपरसँ सेहो लादि दैत अछि जइसँ घन्टा भरिक कननियाँ नाच दू घन्टाक भइये जाइए। मुदा से सभ कहियो विचारनाथ कक्काक परिवारमे नहि देखलयैन अछि। देखबो केना करबैन? भाय मिथिला छी कि ठठ्ठा, जखन मण्डन मिश्र सन-सन पारखी, जे साधारण चिड़ैकेँ बुधिसँ भरि दरबज्जाक पहरूदार बनौने छला, तैठाम मनुक्खक बच्चाकेँ जेकरामे बोध शक्ति छै, भोरे-भोर दू-चारि थापर सलामी भेटए, से केहेन भेल? ई बात विचारनाथ काका सेहो बुझै छैथ जइसँ परिवारक धारकेँ सूत्रसँ बान्हि एना सुतियाकऽ सूत्रधार बनि चलि रहला अछि जे बुझि पड़त जएह अछि सएह पूर्ण अछि आ जीवनक नाटकक आदि-सँ-अन्त तक जहिना सूत्रधार वयान करैए जे बुझनिहार नाटक होइसँ पहिनहि सभ नाटक बुझि जाइए, देखनिहार देखैत रहैए, समझदार समैझ जाइए, विचारवाण बिचड़ए लगैए आ बिपटा सेहो अपन बिपटाइ करिते अछि...। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहअ, अपने अपन जीवित जीवन जीबैक काजे एलौं हेन, अपना काजसँ मतलब अछि। बजलौं-

“काका, अझुका दिनक गप-सप्पकेँ अन्तिमे दिनक गप-सप्प बुझू। आब जीब कि नहि से अपनो ने ठेकान अछि जे कहिया तक आकि कखन तक छी आकि छी-छी नहियेँ छी।”

हमर बात विचारनाथ काकाकेँ मिथिलाक ओल जकाँ कबकबा कऽ नहि लगलैन बल्कि हैदरावादी ओल जकाँ, माने

अल्हुआक तरकारी वा तीमन जकाँ, ऐठाम अल्हुआक गलत अर्थ नहि लेब, अपना ऐठाम अल्हुआक तीमनो आ तरकारियोक चलैन रहल अछि। आब तँ खेतीए ने रहल, विपरीत परिवेश बनियेँ गेल अछि तँए ओइ खेतीकेँ जाएबे छल। समगमा कऽ लगलैन। बजला-

"भजन, तोहूँ भँसिया जाइ छह। भजन तँ भजन भेल, चाहे रामक हुअ आकि कृष्णक, ब्रह्माक हुअ कि विष्णु-महादेवक, जँ तोरेटा संग एहेन बिपैत भेल रहैत तखन ने, से तँ गामेक उपटान भऽ रहल अछि, के कखन अछि आ कखन नहि अछि, सएह बेठेकान भऽ गेल अछि।"

ओना, विचारनाथ कक्काक बात नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। तइ बीच अपन जिनगीक एकटा सुधार सेहो कइये लेलौं हेन। ओ छी जे एते दिन कि होइ छल तँ विदा होइ छेलौं कोनो काजे आ करए लगै छेलौं कोनो काज, तइमे सुधार ई भेल जे आब जइ काजे विदा होइ छी ओकरे सुक-नजैरिये देखैत आगू बढ़ै छी। दोहरा कऽ बजलौं-

"काका, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।"

विचारनाथ काका बजला-

"ऐबेर जे बाढ़ि आएल अछि तइमे कमला-कोसीक बान्ह आकि छहर तँ नहि टुटल अछि जे कोसी-कमलाक नाओं लगैत जे मूसक बिल देने पानि धोंसिया गेलै तइसँ बान्ह आकि छहर टुटि गेल.!"

अपनो जखन कुसहासँ बनगाम महिंसी तक ने पुबरिया आ ने पछबरिया बान्ह केतौ टुटल, तहिना कमलोक अछि मुदा तैयो जान-मालक की हाल अछि.! अखुनके जीवनटा नहि, ऐगलो जीवन संकटग्रस्त भेल जा रहल अछि.! मानि लिअ अहाँ नवयुवक छी,

किछु करैक हौसला मनमे अछि तँए गाममे रहि गाए पोसब शुरू करब। बाढ़िमे जेना खेत-पथारक जजात क्षति होइए तइमे गाइयक घासो अछि, तेकरे अभाव भऽ जाएत, बाढ़िमे डुमने, तखन अहाँक डेग केना आगू उठत? एहेन प्रश्न खाली गाइये-महींस पोसब धरि नहि अछि, खेतीक अन्न-फल-फूल सभ कथुक अछि। अखन तक अपना नजैरिये धारे-पानिटा कैँ बाढ़ि बुझै छेलिऐ, बरखा-पानिकैँ पानियेँटा बुझै छेलिऐ, से बुझि पड़ए जे बरखो पानि बाढ़ि बनैए। मुदा, भाय मिथिला छिऐ किने, लगले केना मानि लेब जे बरखा-पानि आ धारक पानिमे अन्तर नहि अछि। बाढ़ि भलेँ दुनू हुअए, घर-दुआरसँ लऽ कऽ खेतक जजात धरिक नोकसान तँ अपना आँखिसँ देखिते छी। मुदा तैयो तँ एकटा अन्तर दुनूमे अछिए। ओ अछि बाढ़िक पानिमे पाँक अबै छै जइसँ खेतक उर्वर-शक्ति बढ़ै छै, से बरखा पानिमे थोड़े अछि.! मुदा लगले मनमे उठि गेल जे अनेरे चौहद्दीए बन्हैत रहब आ जैठाम रस्ता टुटल अछि तैठाम बन्हबे ने करब तखन काज केना चलत। बजलौं-

"काका, लोकक मुहेँ सुनै छी जे समुद्र-कातक राज्य बंगाल जे बंगालक खाड़ीसँ सटल अछि, बंगला देश 1971 इस्वीक पछाइत बनल तइसँ पहिने 1942 इस्वीक बात छी, कहू जे समुद्रक महारपर बसल बंगालक लोक पानि बेतरे–माने रौदीसँ–अहुरिया काटि-काटि छटपटा-छटपटा पनरह लाख मरि जाथि, ई उचित भेल?"

ओना, बजैक क्रममे बजा गेल मुदा लगले अपने मन रोकैत कहलक जे अपन पुरुखा कहने छैथ जे ठनका ठनके तँ अपन माथपर हाथ ली। जँ से नहि लेब तँ ठनका देहेपर खसि पड़त। अपन जे दुखनामा अछि तैपर विचार भइये ने रहल अछि आ अनेरे अपनो वौआइ छी आ कक्कोकैँ वौअबै छिऐन। से बात विचारनाथ काका मुहेँक चढ़ा-उतरीसँ बुझि गेला। अपन मनक भावकैँ काका भावि

लेलैन। भविते भावुक भऽ भकमोड़मे ठाढ़ भऽ बजला- “भजन, ने धारक बाढ़ि समस्या छी आ ने बर्खाक बाढ़ि, प्राकृतिक वस्तु छी तँए ओकरा रोकल नहि जा सकैए।”

कक्काक बात सुनिते पौरुकाँ साल ब्रह्मस्थानमे जे भागवत भेल रहै, तइमे व्यासजी एहने विचार कहने रहैथ ओ धक-दे मोन पड़ल। कक्को तँ सएह बात कहि रहला अछि.! विचार उत्तेजित भऽ गेल, जइसँ बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, से तँ ठीके।”

हमर मनक आवेगकेँ विचारनाथ काका बुझि गेला तँए बिच्चेमे रोकैत बजला-

“भजन, अगुतेने नइ हेतह। ओना अखन जे पानिक समस्या, एकर माने पीबैबला पानि नहि, भऽ गेल अछि जइसँ गाम-गामकेँ उपटान लागि रहल अछि आ उन्टे तैपर सँ बाहरक रोजगारीकेँ से आनि रहल अछि, की धिया-पुताक खेल छी। कृषिसँ सम्बन्धित भोज्य-विन्याससँ लऽ कऽ कल-करखाना धरिक संकट उपस्थित भऽ गेल अछि।”

ओना, कक्काक बात सुनैमे नीक लागल मुदा नीक जकाँ बुझि नहि पेब रहल छेलौं। मुदा अपने मन कहलक जे पौराणिक ऋृषि-मुनिक चर्च सदिकाल सुनै छी, एक-सँ-एक साधक भेला, जइमे किछु बेवस्था दइक पाछू जिनगी भरि सेहो परियासरत रहला आ किछु नहियोँ रहला, मुदा अपन जे नैतिक जीवन रहलैन तेकरा आगूमे ठाढ़ कए कऽ ने अपनो चेहरा देखब...। मन हारए-थाकए लगल। बजलौं-

“काका, तत्खनात की करी?”

विचारनाथ काका बजला- “जे जेते जरूरी बुझि पड़ह तेकरा

तइ हिसाबसँ करैक परियास करह। बुझिते तँ छहक जे मनुक्खक जिनगीए केतेटा अछि।”

विचारनाथ कक्काक विचार नीक नइ लागल। बजलौं-

“जएह अछि आकि जेतबे अछि, ओहीमे ने फगुआ खेलबो करब आ गेबो करब, तहिना ने दिआरी बारि दियाबाती सेहो करब। ओना, अपनो मन सदिकाल तंगे रहैए, तंगो केना ने रहत, भोर होइते जे गाममे रमझौआ शुरू होइए ओ सुतली राति तक चलैए, कहू जे लंकासँ कम रबनापुर गाम अछि।”



शब्द संख्या : 2420, तिथि : 01 अगस्त 2020

कर्ताक रंग कर्मक संग

भिनसुरका समय, जगरनाथ काका चाह पीब पान खा काज दिस हियास करिते रहैथ कि पहुँचलौं। पहुँचते जगरनाथ काका बुझि गेला जे भोलानाथ जरूर घरवालीक कटाह बोल सुनि खिसिया कऽ आएल अछि, मुदा तेकरा अपन मनक भीतरे रखलैन। बुझिते ते छिऐ जे यएह बोल केकरो फाँसीपर चढ़ा दइए आ केकरो ठेलैत-ठेलैत नर्कक दुआरि लग पहुँचा भीतर धकेल दइए। पहुँचते, प्रणाम करैसँ पहिनेसँ मन गरमाएल रहबे करए तँए हुअए जे पहिने अपन बात माने जइ विचारै गेल छेलौं, कहि दिऐन पछाइत प्रणाम करबैन। जगरनाथ काका कि केतौ पड़ाएल जाइ छैथ जे अपन अभिवादन छुटि जाएत। मुदा मनमे ईहो हुअए जे जँ कहीं काका कहि दैथ जे भोलबा तूँ सभदिन भोलबे रहि गेलेँ। सोझेमे नइ देखै छीही जे गलबा केहेन गोलबा होइत आइ बोलबा बनि गेल आ तूँ सभ दिन, एकैसमियो शताब्दीमे लोमस बाबा बनि लोहिये ओढ़ने रहमेँ, से सुनि मथहानि हएत की नहि.? सभ विचारकेँ समेट बजलौं-

“मनसँ असीरवाद दिअ।”

जगरनाथ काका बुझि गेल छला आकि की, असीरवादक तरे माथ कने झुका लेलैन आ पुछलैन-

“की हाल-चाल भोला?”

पत्नीपर तेतेक तामस उठि गेल रहए जे बुधिये हेरा गेल छल, तँए गाम-समाजसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँ धरिक सभ बात तर पड़ि गेल

आ बजा गेल- “काका की हाल-चाल रहत। दुर्दिन कपारपर चढ़ि गेल।”

हमर बात सुनि जगरनाथ काका गुम भऽ अपना नजैरिये विचारए लगला। अपन नजैरिक माने भेल जेकर जेहेन जीवन रहल तइ अनुकूल नजैर सेहो बनिते अछि। जगरनाथ काका बच्चेसँ संघर्षशील रहला जेकर फलाफल विद्यार्थी जीवनमे परीक्षाक परिणामसँ भेटलैन। तैसंग ईहो मनमे भेटलैन जे अपन जे बपौती सम्पैत अछि, ओकरे जँ सुरक्षित राखि समुचित ढंगसँ उपयोग करी तँ सुरक्षित जीवन बनियेँ सकैए। जइसँ साठि बर्ख उमेर टपला पछातियो विचारमे ओ ओज बनियेँ गेल अछि जे अखनो संघर्षशील छी आ आगूओ रहब। दुर्दिनक चर्च जे केने छेलौं भरिसक सएह जगरनाथ कक्काक मनमे घुरिया रहल छेलैन। दुर्दिन कपारपर चढ़ि गेल, ई अधले की भेल। सभ तँ भविसे दिस ने ताकि-ताकि चलै छी, से तँ चलबे करत। भऽ सकैए जे समाजमे जे दुर्दिन शब्दक चलैन अछि ओ संकटग्रस्त जीवनसँ अछि.! बड़ीकालक पछाइत जगरनाथ काका बजला- “की दुर्दिन भोला?”

कक्काक बात सुनि मन कने धकमकाएल जे परिवारक बात माने पत्नीक बात केना काकाकेँ कहबैन जे चाह पीबैले जखन बैसलौं तखन पत्नीक अपन मन जराएल छेलैन्हे, अपन मन ऐ दुआरे जराएल छेलैन जे अपने कने पाछूके बथान छोड़ै छी मुदा पत्नीकेँ से नहि छैन, वेचारी बिलकुल लक्ष्मी पात्र छैथ। अपने ओछाइनपर पड़ले रहै छी आ ओ अपना हाथक कारोबार रहने भोरे उठि पहिने चाह बना पीबै छैथ। तइकालमे मिसियो भरि ई दया नइ लगै छैन जे पति सेहो छैथ, हुनको एकबेर पुछि लिऐन। अपने बुझै छैथ जे ओछाइनपर छैथ तँ सुतले हेता आ जँ कहीं अपने चाह बना पीबैत रही आ ओ दुखताह जकाँ ओछाइनपर सँ टुटुर-टुकुर तकैत रहता

तखन हुनकर आत्माराम सीताराम बनतैन की नहि। मुदा से सभ किछु ने छेलैन, छेलैन एतबे जे चाह-चीनी घरमे नइ रहने, लॉक-डॉनमे दोकान-दौरी बन्न भेने, भोरुका चाह नहि पीने छेली, तही चोटसँ मन चोटाएल छेलैन तँए चोटाएल ढोंर साँप जकाँ हबैक नेने छेली। ओना, जगरनाथ काका एतबे बजला जे की दुर्दिन भोला? सेहो अपना दिससँ नहि बाजल छला, हमरे बातकेँ उन्टा बाजल छला। बजला पछाइत मुँह दिस देखए लगला। जवाबक खियालसँ मुँह दिस देखै छला आकि मनक भावकेँ जोख-तौल करै छला से तँ ओ जनता मुदा अपना बुझि पड़ै छल जे काका नीक जकाँ बातकेँ सुनि नीक उत्तर देता। ओना, तैयो मन धकमकाइते छल जे कहीं पत्नीक बात कहिऐन आ लगले कहि दैथ जे एहने पुरुख छँह जे पत्नीकेँ मुँह उठा बजैक रस्ता दइ छुहुन। भीतरे-भीतर मन औनाइते छल कि एकाएक परसुका बात मोन पड़ल।

घरक बगलेमे पड़ोसी मुनमाक घर अछि। रातिमे दुनू परानीमे की भेल रहै से तँ सुतली रातिक गप भेल मुदा जखन नीन टुटल तखन सुनलौं जे मुनमाकेँ घरवाली–लुखिया–कहि रहल छै जे ‘डाँड़मे डोराडोरि नइ छेलह तखन हाथ पकैड़ किए अनलह’ आ वेचारा मुनमा निराश भेल पत्नीक मुँह देखै छल जे जँ कहीं अही तामसपर छोड़ि कऽ चलि गेल तखन भानस कऽ कऽ के खाइले देत। जखन भनसिये नइ रहत तखन भोज की आ भोजैत के? मुदा मुनमाक दशाक विपरीत प्रतिक्रिया अपना मनमे भेल। भेल ई जे मुनमे सन मरद की हमहूँ छी, तीन साए डण्ड आ अढ़ाइ साए बैसक अखनो दुनू साँझ करिते छी। विचारसँ जेना कनी बल उठल। उठिते इरखालु–इरखादार–जकाँ मन तनल। जइसँ विचारो बदलए लगल।

विचार बदैलते मनमे उठल जे केकरो गलतीकेँ छिपाकऽ राखब उचित नहि, हँ एते विचार कएल जा सकैए जे कोन विचारकेँ

केतए राखक चाही। जँ गलतीकेँ झाँपि कऽ राखब तँ ओकर धार दुनू दिस बढ़त। माने भेल जे गलती बढ़बो करैए माने एकसँ दू, तीन-चारि आ घटबो तँ करिते अछि जखन गलतीकेँ अनुचित बुझि लोक विचार करैए, तखने ने गलतीकेँ वस्त्रक मैल वा दाग बुझि छोड़ाइये लेब हितकर बुझैए...।

विचार जेना सबल बनए लगल जइसँ मनमे उपकल, अपना ऐठाम गरीबी (मजबूरी)केँ लोक छिपाकऽ रखए चाहैए, दोसर-तेसरक बीच नहि बाजए चाहैए जइसँ ओ समाजमे पसैर सामाजिक मुद्दा (समस्या) बनि समाजमे ठाढ़ हएत। एहेन रोग माने अपन मजबूरीकेँ लोकसँ दाबब, पुरुखक अपेक्षा महिला संस्कारमे बेसी अछि, जेकर फलाफल सेहो सबहक सोझहेमे अछि। मन जेना निर्बलसँ सबल हुअ लगल। जइसँ विचार उफैन निकलल-

“काका, भोरे-भोर लोक भगवानक नाओं लैत शुभ-शुभकऽ जीवनलीला दिस बढ़ैए आ हमरा बज्जर सन कथा पत्नीक मुहेँ भेटल।”

‘बज्जर सन कथा’ सुनि जगरनाथ काका पुन: गुम भऽ विचारए लगला जे बज्जर सन केतौ कथा हुअए। बज्जर वस्तु होइए, कथा भाव छी, तखन एहेन तुकमिलान केना भेल? मुदा लगले मन ससैर हमरापर पड़लैन। पड़िते बुझि गेला जे भोलानाथ, भोलेनाथ छी। सर्वव्यापी महादेव जहिना जीरो बैलैंसमे सभदिन चलैत रहला तहिना भरिसक भोलोक समस्या अछि। अपने बात उठबैत जगरनाथ काका बजला-

“भोला, की कहबह! कहियो चीनी घरमे नइ रहने नून देल चाह पीबै छी तँ कहियो दूध नहि रहने नेबोक पात देल आ कहियो चाह पत्ती नइ रहल तँ तुलसी-पत्ता देल पीबै छी। भेल तँ मनकेँ

खाली बुझाएब जे चाह छी।”

जगरनाथ कक्काक विचार सुनि, भानस करैबला चुल्हिक पाछू राखल मोम जहिना अपने पघिलए लगैए तहिना अपनो मन पघिल गेल। जइसँ निरभिकता सेहो जगल। बजलौं-

“काका, ठीके लोक अपना ऐठाम कहैए जे ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा घर-घर एक्के लेखा।”

हमरा बातमे जगरनाथ काकाकेँ की भेटलैन से अखनो धरि नहि बुझि पेलौं मुदा मन हर्खसँ हरखित जरूर भऽ उठलैन। बजला-

“बौआ, दुनियोँ बड़ीटा अछि आ अपन देश सेहो बड़ीटा अछि, ओतेकेँ समटब से पार लागत तँए अपन पैछला सालक कहै छिअ। एकटा कहह तँ अखन गाम केहेन देखै छहक?”

बजलौं- “एकदम चानी जकाँ सौंसे गाम पानिसँ झलैक रहल अछि।”

जगरनाथ काका बजला- “एना किए भेल?”

‘एना किए भेल’ से की कोनो हमरे कएल अछि जे बुझल रहत। अन्दाजसँ किछु बाजब तँ ओ झुठो भऽ सकैए, भाय अपन मुँहक बात फुसि भेने लोक फुसियाह बनैए आ जँ अनकर मुँहक सुनल बात ओकर नाम कहि बजलौं तखन केना फुसियाह भेलौं। ओना, फुसियाहक सेहो कोनो आड़ि-धुर नहियेँ अछि। किए तँ केतौ लोक फुसि बजैए आ केतौ भगवाने (प्रकृति) ओकर प्रकृति बदैल फुसि बना दइ छैथ। जगरनाथ कक्काक बात ‘एना किए भेल’क जवाब फुरबे ने कएल, मुदा मुहोँ बन्न राखब उचित नहियेँ होइत तँए विचारकेँ बदलैत बजलौं- “काका, पैछला सालक अपन बात तँ कहबे ने केलिऐ?”

जगरनाथ काका बजला- “बेस मोन पाड़ि देलह नहि तँ ओ

बात छुटिये जाइत। पहिने एकबेर चाह पीब लएह।”

कहि सुमित्रा काकीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन चाह बनौने आउ।

सुमित्रा काकीकेँ चाह-दे कहि जगरनाथ काका मने-मन जेना किछु मोन पाड़ए लगला। मोन पाड़ैक क्रममे देखलयैन जे कखनो मुस्की भरि रहल छैथ, कखनो तामसे आगि जकाँ लहैर रहल छैथ तँ कखनो सोल्होअना शान्त भऽ जाइ छैथ। तैबीच सुमित्रा काकी लोटामे पानि आ गिलास नेने एली। लोटो आ गिलासोकेँ बीचमे रखि चाह आनए आँगन गेली कि बिच्चेमे जगरनाथ काका अपने फुरने बजला-

“दुनियोँ अजीब अछि। ठीके तुलसी बाबा कहने छैथ जे भाँति-भाँतिक लोकसँ दुनियाँ भरल अछि।”

तैबीच सुमित्रा काकी चाह नेने पहुँचली। दुनू गोरे चाह पीलौं। ओना, मनमे ई बात औनाइये लगल जे साढ़े तीन हाथक मनुक्ख, अपना हाथे सभ होइए, तैठाम काका किए तुलसी बाबाक नाओं लगाकऽ कहलैन जे भाँति-भाँतिक लोक संसारमे अछि। मुदा किछु बजलौं नहि। चाह पीब जहिना जगरनाथ कक्काक मन सर्ड़ास भेलैन तहिना अपनो मन हुअ लगल मुदा भेल नहि। नइ होइक कारण भेल जे पत्नी मोन पड़ि गेली। मोन पड़ैक कारण भेल जे अपने तँ चाह पीलौं मुदा चाह-चीनी दुआरे भरिसक ओ नइ पीने हेती। द्रवित मन ठमकल। ठमकल ई जे हरिवासय सन पाबैन जे तीन दिन सहि करै छैथ ओ एक बेर माने एकटाइम चाह नहियेँ पीती तँ की हेतइ। तइले अनेरे मनमे माया पसारने छी। बजलौं-

“काका! पैछला सालक बात पछाइत कहब, पहिने भाँति-भाँतिक लोक तुलसी बाबा किए कहलखिन से कहियौ।”

हमर बात सुनि जगरनाथ काका मने-मन खूब हँसला मुदा

हँसीकेँ मुहसँ बाहर नहि हुअ देलखिन। ओना, मन मधुआ गेले रहैन, बजला- “भोला, बजबोकाल आ गोड़ो लगला पछाइत सभ आसीरवचन दइते छैथ जे ‘भगवान नीक करथुन’, मुदा ओइ आसीरवचनकर्ताक अपन कोन भगवान छिऐन जे.! हाथ-पएर ठीक विपरीत दिशामे चलि रहल छैन।”

जगरनाथ काका जइ प्रवाहमे बजला तइसँ बुझि पड़ल जे दमगर बात काका बाजि रहला अछि मुदा अपने से बुझि नहि पेब रहल छी। बजलौं- “काका, ऐ बातकेँ कनी दोहरा दियौ।”

मुड़कट्टीमे जगरनाथ काका बजला- “भोला, जेना लोक बजैए तेना जँ करबो करए तँ तीन-दिनमे दुनियाँक रूप सुन्दर भऽ जाएत, यएह बात तुलसीबाबा कहलैन जे काजकेँ कियो जीवनक मर्म बुझैए आ कियो एकटा शब्द, यएह भेल भाँति-भाँतिक लोक।”

अखन तक अपने ई बात नहि बुझै छेलौं जे बुझलौं। बुझिते आरो बुझैक मन भेल। जगरनाथ काकाकेँ चरियबैत बजलौं-

“काका, पैछला सालक गप पछुआ गेल।”

जगरनाथ काका बजला-

“जहिना अखन देखै छहक ने जे चानी जकाँ सौंसे गाम पानिसँ झलैक रहल अछि, माल-जालकेँ जहिना घास-पातक दिक्कत भऽ गेलैए तहिना लोककेँ तीमन-तरकारीक, एक दिस आमदनी कम भेल आ दोसर दिस अभाव भेने महगी बढ़त, अही बीचमे सभ पड़ि गेलौं हेन।”

कक्काक मुँहक बात सुनैत-सुनैत अपन मनक मोटा तेते ने भरिया गेल जे बिनु बोझेक भारी लगए लगल। बजलौं-

“काका, छोड़ू दुनियाँदारीक बात अपन दिन-दुनियाँक विचार करू।”

हमर बात जगरनाथ काकाकेँ नीक लगलैन। बजला- “पानि देखि लेलह। आब गामक बाध देखह। ओना, गामसभ चरिबधुओ होइए आ पँचबधुओ-छहबधुओ होइए।”

बजलौं-

“काका, कनी फरिछा कऽ कहियौ?”

काका बजला-

“चरिबधुआ भेल, गामक चारूकातक उपजाऊ जमीनक बाध, तैसंग ईहो होइए जे बाधमे बास भेने व नहर, छहर, सड़क भेने बाधो कटि-कटि टुकड़ी बनि जाइए। अपना गाममे चारूकात बाध अछि जे पानिमे डुमल अछि आ बीचमे गाम देने मुख्य मार्ग अछि जइसँ बाधक रूप सेहो बदलिये गेल अछि। खाएर जे अछि, अपन जे जीवन अछि ओ गामक बीच जे बाध अछि, तइसँ चलैए।”

ई बात नजैरपर चढ़ि गेल तँए उत्साहित होइत बजलौं-

“हँ, से तँ चलबे करैए.!”

जगरनाथ काका बजला-

“उत्तरे-दछिने जे गामक मुख्य सड़क अछि, जे उत्तरसँ एन.एच. 57मे मिलैए आ दच्छिन आन-आन गामक मुख्य सड़कसँ मिलले अछि। ओही सड़कसँ माने मुख्य सड़कसँ टोलक सड़क बनि पुन: ओही मुख्य सड़कमे मिलल अछि।”

जगरनाथ कक्काक बात सुनि मने-मन हियासि कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे चारि-पाँच टोलकेँ ओ सड़क जोड़ि रहल अछि, बजलौं-

“हँ, से तँ मिलल अछिए।”

हमरा बातसँ जेना काकाकेँ सह भेटलैन। तहिना अपन

विचारकेँ सहेजैत बजला- “टोलक जे सड़क बनल ओ अनुमण्डलक इंजीनियरक जवाबदेहीमे बनब शुरू भेल। माटियोक काज भेल आ ढलाइ-सड़क सेहो बनल।”

जगरनाथ काका की बाजए चाहै छला आ अपने की बुझै छेलौं से बुझिये ने पेलौं, जइसँ बजा गेल-

“हँ, से तँ बड़ सुन्नर ढलाइ सड़क बनल।”

हमर बात जगरनाथ काकाकेँ नीक नइ लगलैन, ओना किछु बजला नहि मुदा अपने बुझि पड़ल जे जहिना भाँटिक टुस्सा पेटक कीड़ा मारै दुआरे लोक मुँहमे लइए आ दाँतसँ कुचिते मन तीता जाइ छै तहिना भरिसक कक्कोरेँ भेलैन। मुदा सोझमतिया बुझि आकि अधविचड़ा बुझि जगरनाथ काका अपन विचारकेँ मने-मन थीर केनहि बजला-

“भोला, जेकरा तूँ ऊपरसँ देखि बड़सुन्नर कहलहक ओ बड़ सुन्नर भेल कहाँ। जँ बड़सुन्नर रहैत तँ अस्सी मीटर ढलाइ सड़क काटि कऽ किए पानिक निकासी नाला बनल?”

‘किए बनल?’ से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। केतबो चारू दिस आँखि उठा-उठा ताकी मुदा केतौ किछु ने देखिऐ। मनकेँ थतमारि बजलौं-

“काका, कनी जड़ियेसँ कहियौ जे सभ बात सुनने नीक जकाँ बुझबो करब आ विचारबो करब।”

हमरा बातमे जगरनाथ काकाकेँ की भेटलैन से ओ जानैथ मुदा मनमे खुशी जरूर भेलैन। बजला-

“भोला, कान ठाढ़ करिकऽ सुनबहक तँ सभ बात नीक जकाँ बुझि जेबहक जे केना खेल अछि आ केना बेल अछि।”

कान ठाढ़ करैत काका दिस आँखि उठा कऽ देखए लगलौं मुदा मुहसँ किछु ने बजलौं। आँखिमे आँखि मिलिते जगरनाथ काका आगू बजला-

“भोला, सड़क बनब भेल काज आ ओकरा नीक बना कऽ करब भेल सुकाज, जइसँ लोककेँ सुफल भेटै छै। तइमे खेल शुरू होइए, ओ खेल एहेन होइए जे सुकाज कुकाज बनि जाइए आ सुफल कुफल बनि जाइए।”

ओना, जगरनाथ कक्काक विचार सुनैमे नीक लागल मुदा ई नहि बुझि पेलौं जे काका अपन विचार की कहलैन। तँए बजलौं-

“काका, कनी दोहरबैत अपन ठेँठ बोलीमे कहियौ जे नीक जकाँ ठिकिया कऽ बुझब।”

हमर जिज्ञासा सुनि आकि अपन मनक विचार लोकक बीच रखैक खियालसँ आकि की से जगरनाथ काका जानैथ मुदा निर्विचारी होइत बजला-

“पहिने काजक जड़िक रूप बुझि लएह। अनुमण्डलक इंजीनियरक हाथमे गामक ओ सड़क बनबैक काज देल गेल। सरकारी-सेवाक ओ रूप बनियेँ रहल अछि जे सेवासँ बदलैत उपार्जनक रूपमे परिवर्तित भेल जा रहल अछि। अपन गोटी चालैत इंजीनियर स्कीम देखि गाममे एकटा खाइ-पीबैबला जमात बनौलक। काज शुरू भेल, केत्ता गोरेक अँगनाक डेढ़िया वा दरबज्जाक आगूक माटि उठा सड़क भरल गेल। करीब बीस बीघा जमीन आ करीब पचास परिवारक बास ओइ सड़कक बीच पड़ैए। तँए धनखेतीसँ लऽ कऽ भीठ जमीन धरि ओइ बीस बीघाक बीच अछि। बरखोक पानि आ बाढ़ियो-पानिक आमदनी गाममे होइते अछि। पानिक निकास जेमहर होइत निकलैत ओइ टोलबैयासँ बेरादरी स्थापित करैत

विवादक रूप इंजीनियर तैयार केलक। जाबे गाममे छोट-मोट विवाद गौंआँक बीच नइ हएत ताबे योजनाक लूट केना हएत।”

हँसी लगि गेल। हँसी ऐ दुआरे लगल जे जे बात अखन तक नइ बुझै छेलौं से बुझिमे आबि गेल तँए मन खुशी भऽ गेल। ओना, हमर हँसीकेँ देखि जगरनाथ काका नजैर उठा-उठा हँसीक नारी[1] पकड़ए चाहैथ, मुदा से कोन रूपेँ पकड़ाइ छेलैन से तँ वएह ने जनता। बजलौं- “काका, अपना गाममे जे भेल तेतबे कहियौ। ओना, लोक सभ केतेको रंगक बात दुनियाँक बजैए मुदा ओतेक समुद्र उपछए जाएब से पार लागत।”

अपना जनैत ई बाजल छेलौं जे अपन गामक काजक बात छी तँए नीक जकाँ बुझी। मुदा गामक कोन बात जे देशेक समस्याकेँ, हनुमान जकाँ, जे एक्के तड़पानमे समुद्र तड़ैप गेला, तहिना जगरनाथ काका तड़पैत बजला- “बौआ भोलानाथ, समुद्रो मनुक्खे उपछैए आ ओकरो मथानीमे मथि-मथि अमृत-बीख सेहो वएह निकालैए तँए समुद्रसँ डरेबाक नहि अछि, तखन हँ अपन-अपन जे समस्या अछि तइले जँ अपने नहि ठाढ़ हएब, तखन समाधान केना हएत।”

जगरनाथ कक्काक विचारकेँ अपनो मन सूहकारलक जे जगरनाथ काका ठीके कहि रहला अछि। जे बीमार पड़त से जँ दबाइ नहि खाए आ दोसर जँ खेबे करत तइसँ ओकर बीमारी केना छुटतै। देहक बीमारी आ जीवनक बीमारी एक्केरंग थोड़े होइए। जीवनक बीमारी पुस्त-दर-पुस्तक जीवन जँ जुड़ल अछि जखन कि देहक बीमारी देहा-देही होइए। बजलौं-

“आगू की भेल?”

---

[1] नब्ज

जगरनाथ काका बाजए लगला- "माटिक काज होइते माने सड़कपर माटि पड़िते, गामक लोकक बीच एहेन विचारक माहौल बनि गेल जे जँ ओइठाम माने बलउमकी काज लग, भविष्यकेँ दृष्टिमे राखि किछु बाजल जाए तँ नमहर घटना घटि जाएत। समाजक बीच जाति-धर्मक जहर सदिकाल परसल जाइते अछि।"

बजैत-बजैत जगरनाथ काका जेना आगूमे कोनो खतरा देखि गाड़ीक ड्राइवर गाड़ी रोकि रस्ताकेँ तजबीज करैए तहिना चुप भऽ तजबीज करए लगला। मुदा अपन जिज्ञासा तँ आगूक बात सुनैले तनफनाइये रहल छल, पुछलयैन- "तब की केलिऐ?"

जगरनाथ काका बजला- "कानूनी प्रक्रिया शुरूहेसँ शुरू कऽ देने छेलिऐ। अनुमण्डलमे आवेदन कऽ देने छेलिऐ जे महीना दिनमे अनुमण्डलसँ ब्लौक आ ब्लॉकसँ विभागीय कार्यलयमे पहुँचल आ ओही इंजीनियरकेँ जाँच-परतालक संग आदेशोक अधिकार भेटल। अजीब स्थिति बनि गेल। सैंया भेल कोतबलबा, हम नँगटे सुतब ना..।"

बजलौं- "की अजीब स्थिति बनि गेल कका?"

जगरनाथ काका बजला- "नीक कमाइ इंजीनियरकेँ भेल। समाजमे माने गाममे एते तना-तनी बढ़ि गेल जे पैघ-सँ-पैघ घटना घटि सकै छल। मुदा समस्या तँ मात्र पाइनिक छल।"

बजलौं- "ठीके काका अमती काँट जकाँ ओझरी अछि.!"

हमरा नजैरपर बात चढ़ैत देखि आकि जगरनाथ काकाकेँ अपन कएल कोनो काज मोन पड़लैन कि की से तँ वएह बुझैत हेता मुदा मन कलशने मुँह फुटलैन- "बौआ भोल, हमहूँ कि बैसल रहलौं। जइ दिन अनुमण्डलमे आवेदन देलिऐ तेकर प्राते जिला कार्यालयमे सेहो दऽ देलिऐ आ तेसर दिन राजधानीक लोक अदालतमे केस सेहो

कऽ देलिऐ।”

घोड़ा जकाँ धुरफन्दा चालि जगरनाथ कक्काक देखि मुहसँ अपने निकैल गेल- “वाह.!”

अपन वाह-वाही सुनि जगरनाथ कक्काक मनक उत्साह जेना आरो बढ़लैन। बजला- “राजधानीक लोक अदालतक केस जिला अदालत आबि गेल आ फैसलो विपक्षमे भऽ गेल। ढलाइ सड़क सेहो बनि गेल। छह माससँ घर छोड़ि आँगनमे पानि अँटकल छेलएहे।”

ओना, आँखिक सोझक सभ बात छी मुदा नइ बुझने तँ अनभुआर छेलौंहे, बजलौं- “माल-जालकेँ तँ बड़ दिक्कत भेल हएत?”

जगरनाथ काका बजला- “जे भेल से देह लगा मारि लेलौं। छह मासक पछाइत वएह इंजीनियर सहाएब जाँच करए पहुँचला तखन जे भेल तेकरे फल अस्सी मीटर ढलाइ सड़कक बीचो-बीच पाइनिक निकासक नाला बनल।”

बजलौं- “कियो मददगार नहि भेला?”

जगरनाथ काका बजला- “जहिना जिला कार्यालय तहिना समाजक लोक सेहो मददगार भेबे केलाह।”



शब्द संख्या : 2757, तिथि : 06 अगस्त 2020

जिनगीक हिसाब

एक पनरहियासँ, ओना एक पनरहिया एक पक्ष सेहो होइए, किए तँ मासमे दूटा पक्ष होइए, एकटा भेल अन्हरिया आ दोसर भेल इजोरिया, ओना अन्हरियाक आठ दिन आ इजोरियाक सात दिन मिला सेहो पनरह दिन भेल मुदा ओ पक्ष भेल कि नहि, परमानन्द काका आ खण्डिता काकीक बीच मुँह फुलौऐल शुरू भेलैन मुदा दुनू अपन मने-मन गुड़-चाउर फँकैत रहलैथ। सात दिनसँ माने पनरहिया–पक्ष–क आधासँ दुनू गोरेक बीचक मुँह फुलौऐल लोकक जानकारीमे आबए लगल। लोको तँ लोक छी, जहिना ऐँठल अछि तहिना जुठल सेहो अछिए, तँए कियो अपन लगक लोक लग मुँह खोलि तँ बजैत अछि जे परमानन्द काका आ खण्डिता काकीक बीच मुँह-फुलौऐल चलि रहल छैन मुदा खुलिकऽ, खुलिकऽ माने भेल तेसरक बीच। दू गोरेक बीच तँ अपनत्वक सम्बन्ध भेल, जे अपना जकाँ अपन पेटमे अप्पन बात बुझि सौंतिकऽ राखब जइसँ तेसरक बीच पसरैमे विघ्न-बाधा उपस्थित करैए। तँए कहब जे भरथरी-पिंगला सन लोक समाजमे नहि छैथ सेहो केना नइ कहल जाए। भरथरी-पिंगलाक माने भेल जहिना भरथरी अपन जुआनी पिंगलामे निहित केने देखि रहल छला तहिना पिंगला दरमानमे देखि रहल छेली आ दरमान बेश्यामे देखि रहल छल। खाएर जे छल ओ भरथरी-पिंगलाक बीचक भेल।

तीन दिन पहिने माने चारिम दिन, ऐठाम तीन-चारिक बात

छोड़ू, अपनो भनक लागल जे परमानन्द काका आ खण्डिता काकीक बीच एक पनरहियासँ मुँह-फुलौऐल चलैत आबि रहल छैन। जहिना परमानन्द कक्काक संग तहिना खण्डिता काकीक संग सम्बन्ध अछिए तँए तेसर लग जँ किछु बाजब से उचित नहि हएत, किए? एक तँ अपने दोसरक मुहेँ सुनलौं हेन, दोसरो तँ दोसरे भेल, झुठो बजैए। से तँ बिना जड़िक भाँज बुझने नहि हएत। ओना, तोहूमे दू परानी माने पति-पत्नी होथि आकि भाय-भैयारी वा समाजक भैयारी। दुनू अपन-अपन पक्ष सक्कत बनबैले झूठ-सचक बीचक समुद्रमे अपनाकेँ नहि भँसियबै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, देखिते छी जे वएह आदमी केकरो-ले सच्चा छैथ तँ केकरो-ले झुट्ठो छथिए। एहेन सर-समाजक बीच एको डेग ससरब तँ कठिन अछिए। मुदा जीबैले जीबैक उपाइयो तँ अपने ने करए पड़त, जँ पोखरिक समाढ़क डर माछ करत तँ अपन जीवन केना चलौत।

वर्तमानक कोनो रस्ता नहि देखि मन दुतकारलक। दुतकारलक ई जे सभ दिन जखन हास्य-व्यंगक बीच दुनू बापूत माने परमानन्द काका आ अपने, गप-सप्प करै छी तखन अनेरे धखाएब नीक नहि। हुनकेसँ किए ने पुछि लिऐन। मुदा फेर अपने मन कहलक जे एते अधिक श्रद्धासँ काका-काकीकेँ देखै छिऐन, तैठाम केना मुँह खुजत जे काका अहाँ काकीसँ किए मुँह फुलौने छी, आकि काकियेकेँ केना कहबैन जे अहाँ काकासँ किए मुँह फुलौने छिऐन। केतबो मनक विचारकेँ उठाबी तैयो विचारक संकोच दाबि दिअए। मुदा लगले मोन पड़ल जे केतेको दिन दुनू बापूतक बीच कथा-पिहानी होइते रहल अछि। तखन किए ने जहिना-जहिना दुनू परानीक बीचक बात सुनने छी तहिना-तहिना एकटा कथा गढ़ि सुना कहिऐन जे काका ऐपर अपनेक की विचार अछि। अनेरे तँ अपने दुनू

परानी मुँह-फुलबैक कारण उगलए लगता। जखने काका उगलब शुरू करता आकि काकियो थोड़े मानथिन, ओहो उतारा देबे करथिन, अनेरे तँ सभ बात खुजि जाएत। पछाइत दुनू बापूत संयुक्त वकतव्य बना लोकक बीच बाजब। मन मानि गेल। बेरू पहर भेँट करैक समय मनमे बना लेलौं।

अढ़ाइ बजे, बेरू पहर जखन सुतिकऽ उठलौं माने दिनका सुतबसँ, तँ मुँह-हाथ धोइते मोन पड़ल जे परमानन्द काका ऐठाम जाएब अछि। बेरू पहरकेँ चाह सेहो पीबिते छी तँए इच्छा भेल जे अपना ऐठाम चाह नहि पीब, हुनके ऐठाम माने परमानन्दे काका ऐठाम पीब। किए तँ गैस्टिकक शिकायत भेने चाह पीबकेँ बन्हौटा बना नेने छी, एक बेर भिनसरमे पीबै छी, एकबेर बेरू पहरमे आ एकबेर साँझू पहर। जखने ऐसँ बेसी चाह पीबै छी तँ गैस बनब शुरू भऽ जाइए जइसँ मन तेना औल-बौल करए लगैए जे कोनो काज करैमे नीके ने लगैए। काजक कोन बात जे गपो-सप्प करब नीक नहि लगैए। अनेरे मनमे धुन्धकारी जकाँ उठैत रहैए। मुदा लगले विचार बदलए लगल। बदलए ई लगल जे अखन परमानन्द काकाकेँ काकीक संग मुँह-फुलौऐल चलि रहल छैन जँ कहीं ओइ मुँह-फुलौऐलक चलैत काकी चाह नहि बनौती तखन चाह भेटत केना? ओना, गुनधुनी मनमे जरूर उठि गेल मुदा लगले विचार जगि गेल जे दादी सदिकाल कहबो करै छेली जे केतौ जाए लगी तँ कम-सँ-कम एको मुट्ठी अन्न मुँहमे लऽ ली आ केतौ जाइकाल किछु खाइ-पीबैले सेहो दइते छेली।

..अपनो मन मानि गेल जे नीक यएह हएत। माने अपना ऐठाम चाह पीब लेब आ जँ कहीं परमानन्द काका ऐठाम सेहो बनत तँ अपन बात स्पष्ट कहि देबैन जे काका गैस्टिकक शिकायत अछि तँए दोहरा-तेहरा कऽ चाह नहि पीबै छी।

घड़ीक समयक हिसाबसँ ठीक तीन बजे परमानन्द काका ऐठाम पहुँचलौं। शुरूहेसँ बुझल अछि जे परमानन्द काका गाए-महींसि जकाँ डोरीमे तँ नहि मुदा विचारक काजरूपमे अपनाकेँ बन्हनहि छैथ। तीन बजेसँ चारि बजेक बीच सभ दिन समाजक संग माने एके-दुइये जे एला, विचार-विमर्श करै छैथ। ऐनिहारो तँ समाजमे छथिए। जिनका कोनो घटना होइ छैन आकि कोनो बेर-बेगरता होइ छैन ओ तँ दोसरक दरबज्जापर जाइते छैथ। समाजोमे कम कि बेसी, ऐ सबहक अपन-अपन पहचान सेहो लोकक बीच बनले रहैए, ओना बहुरूपिया लोक समाजमे बेसी अछिए मुदा जे अछि, जइ समाजमे अछि तइमे रहअ, तइसँ अपना कोन मतलब अछि।

संजोग नीक बैसल। परमानन्द काका बेरूका चाह पीब पान खा जेना केकरो प्रतीक्षे करैत होथि कि तखने पहुँचलौं। पहुँचते कनी फरिक्केसँ बजलौं-

"गोड़ लगै छी काका.!"

जहिना अपना मुहेँ अपने बाजल छेलौं तहिना काका सेहो आदर करैत बजला-

"आबह, आबह रौदी। ऐबेर तँ तूँ दाही बनि गेलह।"

एक्केबेर दुनू गोरे बाजल छेलौं, तँए अपन बात जहिना परमानन्द काका अपने सुनलैन तहिना अपने सेहो अपन बात सुनलौं। ओना, तइ बातकेँ कबुल ने अपने मन केलक आ ने हुनके मन केलकैन। दुनू गोरेक मनमे बिसवास बनले रहि गेल जे हमरो बात ओ सुनलैन आ हुनको मन मानिते रहैन जे हमरो बात रौदी सुनलक। जँ से नहि रहैत तँ दोहरा कऽ तँ ओहो कहितैथ, से तँ ने हमहीं कहलयैन आ ने वएह कहलैन, तइसँ तँ सएह बुझि पड़ल।

तैबीच अपनो दरबज्जाक चौकी लग पहुँच गेल छेलौं। परमानन्द काका बजला-

“की हाल-चाल रौदी?”

अपना बुझि पड़ल जे अवसर आबि गेल तँए अवसरकेँ छोड़ब बुड़िपना हएत। बजलौं-

“काका, हाल-चाल की कहब, नाकोदम भेल छी। देखिते छिऐ जे केहेन डुमा पानि गाममे पसरल अछि। सभ बाध एकेरंग झलकैए। खुटापर दूटा माल रखने छी, वएह ने जीवनक आशा छी। केतौ एक मुट्ठी घास नहि भेटैए, तेही पाछू रेजानीस-रेजानीस रहै छी। अपना दिसक की हाल-चाल अछि?”

तैबीच खण्डिता काकी सेहो दरबज्जापर पहुँच गेली। अपन परिवारक झाँपन-तोपन केने खण्डिता काकी बजली-

“बौआ रौदी, हम चाह बनौने अबै छी आ तूँ दुनू बापूत गप-सप्प करह।”

‘चाह’क नाओं सुनि परमानन्द काका बजला-

“अखने तँ चाह पीलौं हेन, दोहरा कऽ नहि पीब।”

अपनो तँ पीब कऽ आएले रही तँए बजलौं-

“काकी, छोड़ू चाह-ताहक झमेल। हमहूँ लगले पीब कऽ चलल छेलौं।”

पत्नीकेँ माने खण्डिता काकीकेँ गड़पर चढ़ल देखि आकि अपन कनारि उतारैक खियालसँ परमानन्द काका बजला-

“बौआ, गामक हाल-चाल की कहबह अपने परिवार बेहाल भेल अछि।”

ओना, परमानन्द कक्काक विचारकेँ मने-मन विचारिये रहल

छेलौं कि बिच्चेमे खण्डिता काकी बजली-

"तइमे केकर दोख?"

हाइ रे बा, ई की भेल.! अपने कि कोनो झाड़-फूक केनिहार मनतरिया छी आकि कोनो गहबरक भगता छी जे शिक्षाक कतौ पता नहि आ दीक्षाक सर्टिफिकेट बाँटैत रहब। असमंजसमे पड़िये रहल छेलौं कि परमानन्द काका बजला-

"रौदी, तोरा लिए जेहने अपने छी तेहने ने चाचियो छथुन, तँए पहिने हुनकेसँ पुछि लहुन जे केकर दोख?"

चाहे परिवार हुअ कि समाज एहेन के अछि जे गलती केलो पछाइत अपन गलती कबुल करैले तैयार अछि। ओहने समाजो आ परिवारोमे ने सभ रहै छी, तखन खण्डिते काकी किए अपन दोख कबुल करैले तैयार हेती। बजली-

"बौआ रौदी, स्त्रीगण केतबो मुँहजोर किए ने रहए मुदा अछि तँ पुरुखेक अधीनमे किने, तँए हमर बात ऊपर थोड़े हएत।"

ओना, खण्डिता काकीक बात सुनि अपनो मन अपन परिवार आ गामो-समाजक परिवार दिस बढ़ल। अपन दुनू परानी-बीचक सम्बन्धकेँ भँजियाबए लगलौं। अपने तँ अपन परिवारकेँ माने पत्नीकेँ ओइ नजरिये देखलौं जे वेचारी काजक पाछू सदिकाल बेदम रहै छैथ, पाइ-कौड़ीक हिसाबक मामलामे अखनो एक-दू-सँ बीसक आगू जोड़ए नहि अबै छैन, जँ अपने हाथे दोकानसँ सभ वस्तु कीनि आनि, बैद जकाँ चूर्ण दबाइयक खोराकक पुड़िया बना कऽ नहि देबैन तँ सात दिनक दबाइ लोक जकाँ तीनिये दिनमे खा-पी कऽ बैस जेती, तहिना साँझक-साँझ मिरचाइ गनि कऽ आ कड़ूतेल नप्पासँ नापि नहि कहि देबैन तँ एक पनरहियाक खर्चा साते दिनक सप्ताहमे सठा देती। भलेँ खाइक वस्तु जेहेन बनए। मन आगू समाज दिस

बढ़ल। पड़ोसियापर नजैर पड़िते देखलौं जे घरक गारजनियेटा नहि, पाइ-कौड़ीक हिसाब धरि जीतन भायकेँ घरवाली सभ दिन साँझू-पहरकेँ लइ छैन। ओना से अधलो नहि बुझि पड़ल, किए तँ परिवारक सभ काजक हिसाब जँ परिवारक सभ कियो रखैत तँ घीबोसँ चिक्कन। ओहन परिवारमे जहिना विग्रह नहि औत तहिना एक-दोसरक बीच अबिसवास सेहो नहियेँ औत। तैसंग जखने परिवारक सभ बात सभ बुझए लगता तखने जहिना पानिक बून समटा धारा बनि आगू मुहेँ प्रवाहित होइए तहिना हुअ लगत। जहिना परिवारक सभ अपन कल्याण चाहै छी तहिना ने समाजो समाजक कल्याण चाहिते छैथ। सीक-पटइक भार जकाँ एक दिस वौस आ दोसर दिस बटिखाड़ा मनमे टाँगि समाज दिस बढ़लौं। दू तरहक लोक समाजमे छैथ, पढ़ल-लिखल आ बिनु पढ़ल-लिखल। दुनू तरहक परिवारमे विपरीत ढर्ड़ा अछि। अखन से नहि, अखन एतबे जे पुरुखक मुँहपुरखी आ महिलाक मुँहपुरखी केते परिवारमे अछि। मुदा तैबीच परिवारो आ समाजक काजोक मुद्दा तँ अछिए। अनेरे मनकेँ ओनाइत देखि ओकरा पकैड़ मुरदा जकाँ सुता विचारकेँ आगू बढ़बैत बजलौं- "काकी, जहिना परिवार अहाँक छी तहिना ने कक्कोक छिऐन?"

खण्डिता काकी बजली- "हँ, तइमे हम नै कहाँ कहै छिऐन।"

अपना मनमे शंको हुअए जे जैठाम माने जइ परिवारकेँ परमानन्द काका नहि सम्हारि सकला तैठाम अपने कोन खेतक मुरै छी। एक दिस मन जहिना अपना देखि झुझुआइत रहए तहिना दोसर दिस मनमे ईहो उठल जे अपनाकेँ अनेरे झुझुआन बुझै छी, जइसँ डरे मन कच्छड़ कटैए आ मनो झुझाइए। मुदा लगले मनमे उचड़ल। उचड़ल ई जे जखन पनरह दिनसँ दुनू परानीक बीच मुँह फुलौऐन छैन तखन जड़ि पकड़ब कठिन भऽ जाएत। एक गोरे

त्रेताक बात उठेताह तँ दोसर सतजुगक विचार रखि ओकरा सम्पन्न करता, तहिना कियो द्वापरक बुझि उठेबो करता तँ कियो कलयुग कहि राजा-रानीक संग सत्-युग-त्रेता गेबे करता। मन मानि गेल जे एहेन समाजमे परिवारकेँ गतियाएब कठिन अछिए। मुदा प्रश्न तँ आगूमे अछिए जे जाबे परिवारमे गति नहि औत ताबे ओ धारा केना बनि सकैए। वौआइत मनक प्रश्नकेँ माने परमानन्द काका आ खण्डिता काकीक बीचक, जड़ि पकैड़ बजलौं-

"काकी, अहूँकेँ कहै छी आ कक्कोकेँ कहै छिऐन जे मुँह फुलैक जड़ि कारण की छी। अपन-अपन कारण अपना-अपना मुहेँ बाजू। जखने दिनक बात दिनक-दिन हुअ लगत तखने अपने फरिछाइत सेहो चलि जाएत। जखने फरिछा जाएत तखने फुला-फुली मेटा जाएत।"

परमानन्द काका तँ विचार मानि लेलैन मुदा खण्डिता काकीक मनमे तीन-तेरह उठए लगलैन। भाय, राज-दरबारमे शून्नाक घटी-बढ़ी केने माने जेकर हिसाब अंकमे नइ छै, केतेको जमीन्दारी बसि गेल आ केतेको उजैड़ियो गेल, तैठाम तीन-तेरह तँ बहुत भेल। ओना, से विचार खण्डिता काकीक मनमे नहि रहैन, रहैन यएह जे जहिना गाम-गाममे अधिकांश जाइतिक मनमे रहै छैन जे अपन जे देवता (भगवान) छैथ ओ दोसरसँ नीको छैथ आ शक्तिशालियो छथिए, मुदा एहेन विचारक तँ तखन निर्णय कऽ सकै छी जखन जहिना अपन भगवानकेँ तहियाकऽ तह धरिक बात बुझै छी तहिना आनो-आनक तहक बात बुझिऐ। आनक विषयमे किछु ने बुझै छी आ सोझे नीक-बेजाएक निर्णय करब तखन तँ मुरुखोसँ मुरुखक विचार भेल। से बात खण्डिता काकी बुझिये ने रहल छेली। मुदा परमानन्द काका बुझि रहल छला। ओ अपन तड़ी-घटीसँ लऽ कऽ आनो-आनक तड़ी-घटी बुझै छैथ तँए मनमे मिसियो भरि हल-चल

नहियेँ छैन। विचार दृढ़ छैन जे जखन अपन विचार जीवनक आभूषण जकाँ शरीरमे सटल अछि तखन किए ने विचारक मैदानमे हीय खोलि ठाढ़ रहब। जँ से नहि रहब तँ झूठ-फूस, कच्ची-पक्की सभ तेना घालमेल केने रहत जे की नीक की अधलासँ भाँजेपर ने चढ़त। जखन मूलक भाँज, माने मूल समस्याक भाँज आकि मूल भाँज सोझामे एबे ने करत तखन ओकर डारि-छीपक समुचित विचार केना कऽ सकै छी.! तैबीच तीन-तेरह करैत-करैत खण्डिता काकी बजली-

"पनरहम दिनक बात छी, पोता-पोती सभ अँगनामे खेलाइते-खेलाइत झगड़ा कऽ लेलक। चारूमे दूटा बुफगर अछि आ दूटा देहचोर। दुनू बुफगरहा दुनू देहचोराकेँ फुटा-फुटा एक दोसरकेँ मारलक। दुनू देहचोरा तेते जोरसँ बपहारि कटलक जे चारू दिससँ चारू दियादनी, माने चारू पुतोहु, अपन-अपन बच्चा लग पहुँच पुछलखिन जे की भेलौ?"

तही काल परमानन्द काका कनडेरिये आँखिये खण्डिता काकी दिस तकलैन कि खण्डिता काकी जेना किछु बिसैर गेल होथि तहिना मुँह बन्न करैत किछु मोन पड़ए लगली। परमानन्द काका अपने मने मतंग रहैथ जे जखन दुनू गोरे पाहिपर चढ़ि गप-सप्प कइये रहल छैथ तखन बीचमे अनेरे धानक भूस्सा जकाँ टन-टन बाजब से नीक नहि। गामक लोक अहिना नइ ने ऐ मंतरकेँ जपै छैथ जे धानकेँ पुछलौं ते बजबे ने कएल आ भुस्सा टन-टन मन्दिरक आगूक घण्टी-घण्टा जकाँ पहिने बाजि उठैए। खण्डिता काकीकेँ चुप देखि बजलौं- "काकी, पनरह दिनक गप-सप्प छी, एक मिनटक जे बात रहैए तेकरा बुझैमे कोट-कचहरीकेँ पचासो बर्ख लागि जाइ छै, तैठाम जँ विचारकेँ समटैत नहि चलब तखन विचार छिड़िऐने

समटाइमे देरी लगबे करत किने।”

पुन: आगू बजलौं- “काकी, अखन तक एको दिनक बात सम्पन्न नहि भेल अछि, अखुनका समयमे बैसैक पलखैत अछि। दूटा माल-जाल पोसने छी, घास-पात देखिते छिऐ जे केते जागल अछि। तँए आगूक बात बाजू।”

पनरह दिनक अन्तराल भेने खण्डिता काकी मने-मन ई निर्णय कइये ने पेब रहल छेली जे कोन घटना सतयुगक छी आ कोन त्रेताक, माने ई जे चारू दियादिनीक जखन खण्डिता काकी बुझौऐल करए लगली तखन दूटा बच्चा मारिखौक छल आ दूटा मरतरिया। जइसँ चारू दियादिनीक बीच कटौज बढ़ि गेल छल, जे खण्डिता काकीक काबूसँ बाहर भऽ गेल रहैन। चारू दियादिनीकेँ अँगनेमे छोड़ि देलखिन। सभ कियो अपन-अपन बच्चाकेँ पकैड़ कियो चुप करए लगली तँ कियो चुप बच्चाकेँ पुछए लगली जे की भेल छेलौ। आ खण्डिता काकी असगरे दरबज्जापर आबि परमानन्द काकाकेँ कहलखिन- “चारू बच्चामे झगड़ा भेल, जइमे दूटा मारि खेलक आ दूटा मारलक। बच्चाक बात छिऐ फेर सभ एकेठाम रहत, तइले चारू दियादिनीक बीच तूफान ठाढ़ भेल अछि से चलि कऽ देखियौ।”

खण्डिता काकीक मनक सभ बात सठल छेलैन कि नहि, मुदा तइ बिच्चेमे परमानन्द काका बजला- “हम की देखबै, देखिते छी जे घर-घरमे सासु-ससुरक की महत्व बेटा-पुतोहु रखने अछि, तैठाम कि अपने तइसँ अलग छी। तखन अनेरे किए देखबै। देखतै अपन माए-बाप। जहिना समाजमे परिवारक सीमा अछि तहिना परिवारमे सेहो जन-जनक सीमा, माने खाड़ीक हिसाबसँ, अपन-अपन अछि। अपने तँ चौसलिया बाँस जकाँ बाँसक बीटमे भऽ गेलौं, तँए कटै-काटैक अनुकूल समयपर पहुँचिये गेल छी।”

अपना जनैत परमानन्द काका अपन पल्ला झाड़ि कात हुअ चाहि रहल छला, मुदा खण्डिता काकीक मनमे अपन गारजनीक चिन्ता समाएल छेलैन, बजली- “जँ हाँटि-दबारि सभकेँ शान्त नहि राखब तँ अनेरे ने परिवारमे विग्रह हएत।”

ओना, परमानन्द कक्काक विचार खण्डिता काकी नीक जकाँ नहि बुझि पेने छेली, जे बात परमानन्द काका सेहो बुझि रहल छला मुदा तैयो अपन वर्चस्व रखैक खियालसँ खण्डिता काकी बाजल छेली। परिवारक प्रति अपन विचार स्पष्ट करैक मन परमानन्द काकाकेँ भऽ रहल छेलैन। तेकर अनुकूल कारणो सोझामे देखिये रहल छला। अनुकूल कारण ई देखि रहल छला जे अखन दुनू परानी–पति-पत्नी–क बीच परिवारक प्रति माने चारू पुतोहुक प्रति, की सम्बन्ध हेबा चाही से भने रौदियो सुनत। सुनबेटा किए करत, जँ बीचक विचारमे केतौ कम-बेसी हएत तेकरो समादर बनेबे करत। परमानन्द काका बजला-

“एकटा बात कहू ते, चारू पुतोहुक हम के भेलिऐ?”

परमानन्द कक्काक प्रश्न सुनि खण्डिता काकी भकचका गेली मुदा अपना हँसी लगि गेल। अपने हँसी लगैक कारण भेल जे जे परमानन्द काका परिवारक काजक पाछू राति-दिन एकबट्ट केने रहै छैथ, सएह बुझै छैथ जे परिवार अपन छीहे नहि। ओना तेसर साल जे मुनीलाल दासक सुवचन सुनने रही ओहो अहिना कहने रहैथ जे ‘बेटा-बेटी, कुटुम-परिवार कियो ने अपन छी’ तहिना परमानन्द काका सेहो बाजि रहला अछि। जे बात खण्डिता काकी बुझि नहि पेब रहली अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे ऐठाम एहेन विचार नहि बाजि रहल छी जे खण्डित देव-दानवक जखन अपन पूरम-पूर रूप सोझामे अबैए तखन ओहन विचार अनेरे विलुप्त हुअ लगैए।

छीपापनार हर जकाँ आकि छीपापनार करीन जकाँ नख-शिखक मिलान देखबे ने करी। जँ दुनूक विचारक बीच विचार कनी-मनी हटल रहैत तँ ओकरा हूक बीमारीक कड़ची जकाँ दू फाँककेँ सटा दैतिऐ, मुदा से तँ देखि नहि पेब रहल छी। एक दिस परमानन्द काका बाँसक बीट जकाँ अपन वंश-वृक्ष देखि रहला अछि जे जहिना बाँस जुआनी पेब अपन परिवार बना तेसर-चारिम साल अबैत-अबैत माने तेसर-चारिम पीढ़ीमे बढ़ैत-बढ़ैत मुक्तावस्थामे पहुँच जाइए, जइसँ ओकर जीवनक काज बदैल जाइ छै माने घर-दुआर बनबैक काज, तहिना बुझि पेब रहल छैथ आ दोसर दिस खण्डिता काकी परिवारक बीच कोठरीमे कोठरी गढ़ि दर्जनो कोठली बना नेने छैथ, माने भेल जे परिवारक जइ सदस्यमे जे गुण अछि ओइ गुणकेँ उपयोगमे आनि आगू मुहेँ चलब। मुदा तइ संग ईहो दुर्गुण तँ छेलैन्हे जे 'हम जेकरा जे कहिऐ से से करह', मुदा ऐसँ तँ काजक स्वतंत्रता मराएत। जखने काजक स्वतंत्रता मराएत तखने अपन प्रतिभा आ विचार सेहो मराएत। किछु फुरिये ने रहल छल। ओना, परमानन्द काका मने-मन झुमि रहल छला आ अपने बेदम भेल छेलौं। अपनोसँ बेसी खण्डिता काकीक चेहराक रंग-रूप सिलेब भेल जाइ छेलैन।

धड़फड़ाइत खण्डिता काकीकेँ कहलयैन- "काकी, कनियेँ थमि जाउ, एकटा हलतलबी काज आगूमे उपस्थित भऽ गेल अछि, पहिने ओ सम्हारि लइ छी, पीठेपर कक्काक संग अहूँक सभ बातक विचार करब।"



शब्द संख्या : 2711, तिथि : 11 अगस्त 2020

अपना जनैत

परसुए रघुवंश काका समाद पठौलैन जे परसू एकटा विचार करैक अछि तइमे अहाँक रहब आवश्यक अछि। अपनो बुझल छल। ओना, रघुवंश कक्काक असल दोस्ती पढ़ुआ काकासँ छैन, किए तँ दुनू संगे-संग गामक स्कूलसँ कौलेज तक पढ़ने छैथ मुदा दुनूक दोस्ती पारिवारिक भऽ गेल अछि। जहिना अपन परिवारक अछि तहिना रघुवंश कक्काक परिवारकेँ सेहो छैन। पारिवारिक दोस्तीक माने भेल दुनू परिवारक बीच सम्बन्ध। गाम-समाजमे दोस्तियारीक बीच होइतो अहिना अछि जे जँ कोनो परिवारमे काज-उदम रहल तँ बेकतीगत रूपमे नहि परिवारक रूपेँ ओइमे शामिल होइक बेवहार अछिए। तैबीच एहनो कोनो-कोनो काज होइए जइमे अनुभवक हिसाबसँ सेहो शामिल होइले कहले जाइए। माने भेल जे परिवारमे सबहक सूझ-बूझ एक्के रंग नइ रहने, जानकारीक हिसाबसँ सेहो फुटा कऽ होइते अछि, मुदा ओहन काजक एक श्रेणी अछि, जखन कि परिवार-परिवारक बीच अनेको श्रेणीक सम्बन्ध अछि जइमे सामूहिके रूपेँ जानकारियो भेटैए आ ओइमे सागिरदारियो सामूहिके होइए, जइसँ परिवारक कियो, जे ओ काज करै-जोकर छैथ, हुनका शामिल भेने परिवारक मोजगरा भइये जाइए।

बेरू पहर माने तीन बजेक पछाइत ओइ विचार-विमर्शक बैसारमे जाएब छल तँए बेरूको उखड़ाहाक काज भिनसुरके उखड़ाहामे किछु सम्हारियो लेलौं आ किछु काल्हिले छोड़ियो देलिऐ।

जहियासँ पढ़ुआ काका रोगेला तहियासँ हुनकर काज अपने करए पड़ैए। अपना ने पत्नी छैन आ ने एकोटा बाल-बच्चा। दुरागमनसँ पहिनहि पत्नी मरि गेलखिन, एकोटा सन्तान नहि भेल छेलैन, मुदा दुनू भाँइ माने हमर पिताजी आ पढ़ुआ कक्काक बीच माने दुनू सहोदर भाँइक बीच एहेन प्रेम शुरूहेसँ माने बच्चेसँ रहलैन जे भैयारीक भिनौज केकरा कहै छै से बुझबे ने केलैन। ओना, एकटा प्रश्न अछिए जे जेना हम एक माता-पिताक पाँच भाए-बहिन छी, तेना पढ़ुआ काकाकेँ नहि छैन। सन्तान भेबे ने केलैन आ पत्नी दुरागमनसँ पहिनहि मरि गेलैन। ओना, परिवारोक आ समाजोक लोक जोर देबे केलकैन जे दोसर बिआह कऽ लिअ मुदा पढ़ुआ काका एक्केठाम जिद्द रोपि लेलैन जे दोसर बिआह नहि करब, आ से नहियेँ केलैन। पितेक अमलदारीमे जे परिवार छेलैन तेकरा अपन बपौती परिवार बुझि अखनोधरि मानियेँ रहला अछि। तैठाम तँ अपनो ने दायित्व बनैए जे अपने पिता जकाँ, ऐठाम पिताक माने पालनकर्ता नहि, आंगिकसँ अछि, जिनगी जीबैमे संग रहिऐन। तँए जहियासँ पढ़ुआ कक्काक रोग जेना-जेना बढ़ैत गेलैन तहियासँ तेना-तेना अपन काज बढ़ैत गेल। पढ़ुआ काका ओहन रोगसँ नहि रोगाएल छैथ जे मुँह नुका घरसँ बाहर नहि जेता, आ ने ओहन रोगसँ रोगाएल छैथ जे ओछाइनपर सँ उठि नहि होइ छैन, ओ रोगाएल छैथ राजरोगसँ।

आजुक परिवेशमे जे खान-पान आ जीवन-यापन भऽ गेल अछि तइमे ब्लड-प्रेशर, डायविटीज, राजरोगक श्रेणीमे आबि गेल अछि। कहब जे केना बुझै छिऐ? केना बुझै छिऐ तइले ते राजधानीसँ गामधानी तक भ्रमण करए पड़त। मुदा से सभ नहि, बाबेक अमलदारीसँ परिवारमे खुशहाली आबि गेल छल। जहिना एकबोलिया तहिना एकचलिया चरित्रक लोक बाबा छला जे अपन

बाँहिबलकेँ बुधिबलसँ जोड़ि जिनगीकेँ आगू बढ़ौलैन। जइसँ जहिना खेबा-पीबाक स्तरमे बढ़ौत्तरी भेल, रहै-सहैक घर-दुआरक स्तरक बढ़ौतरी भेल तहिना पढ़ै-लिखैक बढ़ोत्तरी सेहो भेल। पढ़ुआ काकाकेँ बच्चेसँ अपन मनोनुकूल खाइ-पीबैक बेवस्था बाबा केने छेलखिन। तइमे केना मूसक बसेरा भेल आकि छुछुनरिक, से नहि बुझि पेब रहल छी। मुदा एते तँ आँखिसँ जरूर देखै छी जे ब्लड-प्रेशरो आ डायविटीज सेहो नीक जकाँ काकाकेँ पकड़ने छैन।

रघुवंश काका ऐठाम जाइसँ पहिने गुरुकाकासँ विचारि लेब दुनू हिसाबसँ नीक बुझि, माने परिवारक विचारक हिसाबसँ सेहो आ परिवारमे श्रेष्ठक संग संगियो तँ हुनके छिऐन, तहू हिसाबसँ गुरुकाका लग पहुँचलौं। ओना, परसू जे समदिया आएल छला से पहिने गुरुएकाकासँ भेँट केलकैन। बात बुझला पछाइत गुरुकाका शोर पाड़ि सभ बात समदियाक संग मुहाँ-मुहीं केने छला। पुछलयैन-

“काका, रघुवंश काका ऐठाम जाइ छी, केना गप-सप्प करब से कने नजैरपर दऽ दिअ।”

ओना, भोजक चर्च समदिया केने छल मुदा भोजक कारण माने किए भोज कऽ रहला अछि से ने समदिये बाजल आ ने अपने पुछि सकलयैन जइसँ मूल कारण हेराएले छल। जहिना अन्हार घर साँपे-साँप होइ छै तहिना छल। भोजो भोजमे अन्तर होइते अछि से खाली खेबे-पीबेक वस्तु-विन्यासमे होइए, तेतबे नहि अछि, विचार आ विचारानुसार बेवहारोमे होइते अछि। जेना, देखिते छिऐ जे कोनो काजे समाजक लोककेँ खुऔबै छिऐन तेकर बेवहार आ जँ कहीं बाहरक लोक वा कथे-कुटुमैतीक कथकिया-कुटुमक खाएब-पीबमे अन्तर भइये जाइए। अपन पल्ला झाड़ि गुरुकाका बजला- “बौआ चेतू, आब कि तोहूँ धिया-पुता छह जे सुग्गा-मेना जकाँ बुझा कऽ

कहबह तखन बुझबहक, आब तँ तोहूँ धीगर-पुतगर भेलह अपनो ने आब बुझि-सुझि कऽ कोनो विचार करबह।”

गुरुकाका कोनो तेहेन विचार नहियेँ देलैन जे मनकेँ छुबैत, किए तँ परम्परासँ जे बजैक चलैनमे आबि गेल अछि तेही अनुकूल कहलैन। अपन पुछैक कारण ऐसँ भिन्न अछि। ओ अछि जे गुरुकाका बच्चेसँ रघुवंश कक्काक संगी रहला जइसँ अपन बेवहारिक अनुभव जेते हुनका छैन माने गुरुकाकाकेँ छैन, तेते अपना नइए। दोसर ईहो मनमे छल जे जखन रघुवंश काका नोकरीमे छला तखन समाजसँ बेसी समर्पित ओइ संस्थाक छला, जइसँ समाजक बीच जे विवाह-दान, भोज-काज रहल तइमे ओ तेना कतिया गेला, माने शामिल नइ भेने, जे खेबा-पीबाक सूत्र जे सामाजिक बन्धनमे अछि ओ टुटि जकाँ गेलैन। ओना टुटैक, सामाजिक सम्बन्ध भोज-काजक आधारपर, एहनो कारण समाजक चलैनमे सेहो आबिये रहल अछि जे कियो तेहेन अधला वा नीच काज केने रहला तँ हुनका भोज-बन्धनसँ वहिष्कृत सेहो कएल जाइत अबैत रहल अछि। तेहेन दण्डित तँ रघुवंश काका नहियेँ छैथ। अपन विचारकेँ जक-थक रखैत गुरुकाका बाजल छला। ओना, काल्हिसँ केते गोरेक मुहेँ सुनैत आबि रहल छी जे रघुवंश बाबा अपन श्राद्धक भोज अपना आँखिये देखए चाहै छैथ, तँए भोज कऽ रहला अछि। केते गोरेक मुहेँ ईहो सुनलौं जे मास्टर सभकेँ तेते दरमाहा भऽ गेल छैन, तैसंग ईहो छैन्हे जे जँ नोकरीमे बन्हाएल तँ ओ पाइ की हएत? बुझिते छी जे सम्पैतिक गति की सभ होइए। तँए भोज कऽ रहला अछि। केकरो-केकरो मुहेँ ईहो सुनी जे रघुवंश काका अपन पानि चला रहला अछि। जहियासँ नोकरीमे गेला तहियासँ सबहक ऐठाम माने आन-आन जातियो आ समाजोमे, संग मिलि सेहो खाइत-पीऐत आबि रहल छैथ, तँए अजाति भेने जातिक पानि

चलबैले भोज कऽ रहला अछि…।

मनमे छगुन्तो हुअए जे नान्हिटा गाम अपन अछि, पंचायत छीहो नहि, एकटा वार्ड छी, तइ बीच जखन हेरा रहल छी तखन एते भारी दुनियाँक भाँज केना पएब। जइमे दर्जनो लोक-सतलोक, झूठलोक, फूसलोक इत्यादि नहि जानि केते लोक अछि। शास्त्रो-पुराणक हिसाबसँ चौदह लोको आ भुवनो अछिए। तेतबे टा नइ ने अछि, हजारो सुर्ज, हजारो धरती, हजारो समुद्र सेहो सभ अछिए। तरेगनक तँ कोनो हिसाबे ने अछि जे केते अछि। राइ-तोड़ी जकाँ छिटाएल अछिए। अपने मन अकछाइत कहलक जे अनेरे बातक बतंगर मनमे उठैए। मनकेँ मनबैत शान्त केलौं कि रघुवंश काकापर नजैर गेल।

रघुवंश काकापर नजैर पड़िते अपन अन्दाज लगेलौं तँ बुझि पड़ल जे जहिया अपन जन्मो ने भेल छल तहियो ओ–रघुवंश काका–शिक्षके छला आ मास दिन पूर्व तक तँ बन्हौटा शिक्षक छेलाहे। आब खुजला अछि तँए अपन विचारक जिनगी आ वास्तविक जिनगी एकेरंग रहलैन आकि कम-बेसी, से तँ हुनकेसँ बुझब ने नीक हएत। मनमे रोपि विदा भेलौं।

घरपर सँ थोड़ेक आगू बढ़लौं कि मनमे उठल जे जइ विचारे रघुवंश काका-ऐठाम जा रहल छी ओइ विचारक तँ अपन खास महत्व सेहो अछिए।

खास महत्व ई जे महत्वो दू रंगक होइए, एकटा होइए ‘आम’ आ दोसर होइए ‘खास।’ आम महत्व सभजाना भेल आ खास महत्व बेकती विशेषक भेल। रघुवंश काका भोज करता, जेकर विचार करैले बजौलैन अछि, हमहींटा नहि आरो-आरो विचारक हेबे करतैन, जइसँ सामूहिक विचार हएत, मुदा अपन जे पारिवारिक सम्बन्ध

अछि माने गुरु कक्काक संग, ओ तँ दुनूमे सँ किनको मुइने समाप्त भऽ जाएत। किए तँ अखन तकक जे सम्बन्ध रहल ओ देहा-देही रहल माने गुरु कक्काक संग रघुवंश कक्काक रहलैन। मुदा जहिना अपन परिवारमे ऐगला पीढ़ीक अपने भेलौं तहिना रघुवंश काकाकेँ सेहो छैन, ओइ बीच केना आगूक सम्बन्ध बनैत चलत, ईहो बनबैक मौका तँ आबिये गेल अछि। ऐगला सम्बन्ध मनमे अबिते एकाएक जेना बहुत रास विचार मनमे जगौ लगल आ बहुत रास विचार मेटौ लगल। दुनूक अपन-अपन कारण सेहो मनमे उठिये रहल छल। उठि रहल छल जे एते दिन रघुवंश काका गाममे नहि रहै छला, नोकरी करै छला, मुदा आब तँ नोकरी समाप्त भऽ गेलैन तँए समैयक हिसाबसँ जे जीवन छेलैन ओ बदलबे करतैन। जखन एके गाममे दुनू गोरेक घर अछि तखन ओहुना टहलै-बुलैले ओहो एबे करता, तहूमे गुरुकाका बच्चेक संगी छैथ। जखन ओ अपना ऐठाम औता आ अपने हुनका ऐठाम नहि जेबैन सेहो केहेन हएत। समाजमे तँ सभ दिनसँ एहेन चलैन चलैत आबि रहल अछि। ओना, रस्ते-रस्ते जाइत रही, जइसँ बहुत चीज देखिते जाइत रही, तँए अपन विचारकेँ माने रघुवंश काका परिवारक संग अपन परिवारक सम्बन्ध, कोन रूपेँ भविस दिस बढ़ाएब से निर्णय नहि कऽ सकलौं।

रघुवंश कक्काक घरो-दुआर अखन ओहने बनि गेल छैन जेहेन घरमे लोककेँ नहि रहने होइए। ओना, पनरह-बीस दिनसँ घराड़ीक मुँह-कान सेहो बनौलैन आ तत्काल रहै-जोकर घरोक मुँह-कान सेहो बनाइये लेलैन अछि। दरबज्जाक नाओंपर एकटा एकचारी ठाढ़ केने छैथ। मनमे बिसवास छेलैन्हे जे मिथिला तँ ओ धरती छी जैठाम आमोक गाछीमे आ खेतो-पथारमे माने अन्न-उपजल खेतमे, भूमि-पुत्र–किसान–बाँसक खोपड़ी आ मचानपर एक

दिन नहि, सालक-साल आनन्दसँ रहैत आबियो रहला अछि आ अपन सम्पैतिक रक्षा सेहो करैत आबि रहला अछि, तैठाम जँ रघुवंश काका रहैले एकचारी (दरबज्जा) बनौलैन अछि तँ ओहो कम नहियेँ भेल।

एते तँ भेबे कएल अछि जे समाजमे एकटा ओहन शिक्षक आबि गृहवासू बनि रहला अछि जिनकासँ प्रौढ़ विचारक संग बच्चा सभकेँ सेहो पढ़ै-लिखैक लाभ हेबे करत।

भाय, मनुक्ख केहनो किए ने होथि मुदा सद्गुणक संस्कार हुनकामे नहि छैन से बात थोड़े अछि, तखन तँ ईहो बात नहि अछि जे हुनकर सद्गुणकेँ दुर्गुणक चद्दैर तेहेन झाँप लगा देने अछि जे मन दाता मन नहि खाता मन बनि रहल अछि, जइसँ दुखानुभूत भेबे कएल।

दरबज्जा सून देखि जोरसँ बजलौं-

"रघुवंश काका छी यौ?"

अनका जकाँ 'मास्टर साहैब' केना कहितिऐन, परिवारोक तँ अपन संस्कार अछिए। जइसँ बेवहारो अछिए। कक्काक महत्व शिक्षकक नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाए, सेहो तँ अछिए। ऐठाम ई विचार नहि बुझब जे केते गोरे पितोकेँ काका कहै छैथ आ कक्कोकेँ पिता कहै छैथ। खाएर जे जे कहैत होथि मुदा अपने रघुवंशे काका कहि शोर पाड़लयैन। घर आ एकचारीक बीच–माने आँगन आ दरबज्जाक बीच–अबैत-अबैत रघुवंश काका बजला-

"बौआ चेतू, आबि गेलह। तोरासँ किछु खास विचार करैक अछि। भोज तँ बहन्ना छी। अही बहन्ने ने गामक ओहन दस गोरे भेटता जे अखन तक हेराएल छैथ।"

'तोरासँ किछु खास विचार करैक अछि' सुनि मनमे तेहेन

झमार लागल जे ऐगला बात सुनियेँ ने पेलौं। बजलौं- “काका, अहाँ सन ज्ञानी पुरुखक दर्शन बिरले लोककेँ होइ छै, भाग्यशाली छी जे दुनू बापूतक भेँट एकान्तमे भऽ रहल अछि।”

अपन मनक विचारकेँ झाँपन दऽ ऐ दुआरे बाजल छेलौं जे रघुवंश कक्काक मन टोबा जाएत। से भेल, रघुवंश काका बजला-

“बौआ, तूँ कहुना भेलह तँ हमरा आगूमे बाले-बोध भेलह किने मुदा तोरा परिवारक संग आइये नहि, दू पीढ़ीक सम्बन्ध बनल आबि रहल अछि।”

रघुवंश कक्काक बात सुनि अपना बुझि पड़ल जे भरिसक नोकरी छुटलैन अछि तँए मन वौड़ा रहल छैन। भाय, नोकरीक माने सोल्होअना नोकरे बनब टा नइ ने होइ छै। मालिको बनब होइ छै किने। मोटा-मोटी कहब तँ दुनू होइ छइ। एकटा ओहनो होइ छै जइमे मालिक, जिनकर नोकरी करै छी, पीठपर करे-कमान भेल एक काजक पछाइत दोसर काजक अढ़ौती करै छैथ आ दोसर भेल जे नोकरीक ओहन काज भेल जइमे एकटाक कोन बात जे दर्जन-दर्जन नोकर भेटल जइसँ मालिक जकाँ आदेशकर्ता (हुकुम केनिहार) भेलौं। खाएर जे भेलौं जेतए भेलौं से तेतए रहअ, ऐठाम रघुवंश कक्काक गप अछि जे हाइ स्कूलक भूगोल आ अर्थशास्त्रक शिक्षक छला।

रघुवंश काकापर जखन नजैर घुमल तखन मुँह खोलैक मन भेल, मुदा तइ बिच्चेमे सुचित्रा काकी सेहो आबि गेली। ओना, रघुवंश काका जहिया नोकरी शुरू केलैन तइ दिनमे माए-बाबू दुनू जीबैत रहथिन जे धीरे-धीरे माने पहिने बाबू मरलैन, पछाइत माए, पनरह बर्ख पुरैत-पुरैत दुनू मरि गलैन। तैबीच रघुवंश कक्काक जीवनमे अनेको चढ़ा-उतरी सेहो भेलैन। एक दिस सरकारीकरण

भेने दरमाहामे दोबरोसँ बेसी बढ़ोत्तरी भेलैन, तहिना किछु शिक्षककेँ सेवा निवृत्त भेने अपन खाढ़ी सेहो उच्च भेलैन। समयमे सेहो मोड़ आएल, समयमे की मोड़ औत, परिवेशमे (बेवहारमे) मोड़ आएल। ओ ई आएल जे जहिया रघुवंश काका नोकरी शुरू केलैन तहिया बिड़ले गोटे शिक्षक होइ छला जे अपन परिवार अपना संगमे माने जेतए नोकरी करै छी, रखै छला, से आब सहरगंजा तँ नहि मुदा बहुगंजा तँ कहले जा सकैए जे परिवारकेँ अपना संग राखए लगला अछि, जइसँ एहेन उतरी तँ भइये गेल अछि जे एक दिस गामो-समाज आ दोसर दिस अपनो माता-पिता, भाय-बन्धु सेहो छुटिये रहला अछि। ऐठाम भाय-बन्धुक किछु विशेष मतलब अछि, मतलब ई अछि जे भैयारीमे जँ सभ कियो निरोग छी ई एक भेल, दोसर कि ई नहि अछि जे कियो शरीरसँ रोगी छैथ। जे सभ तरहेँ नीक भेला हुनका प्रति विचार आ जे शरीरसँ रोगी छैथ हुनका प्रति विचार, एक रंग थोड़े हएत।

अपन जिनगीक चढ़ा-उतरी देखि रघुवंश कक्काक मन सेहो डगमगाइये रहल छेलैन। पानिमे डुमैत कियो जहिना दोसरकेँ पकैड़ अपनाकेँ बँचबए चाहैए भरिसक तेहने मन रघुवंश काकाकेँ सेहो भऽ रहल छेलैन। आशु-तोषक स्वरमे बजलौं- “ऐँह काका.! ई बात कोनो चोरौल अछि। बेसीकाल गुरुकाका चर्च करैत रहै छैथ जे संगी रहितो रघुवंश केतेक आगू बढ़ि गेल आ अपने माए-बापक तेहेन दुलारू बेटा भेलौं जे राजरोगसँ तेना पीड़ित छी जे केतौ टहलैयो-बुलैले जाएब से नइ होइए।”

हमर विचार सुनि रघुवंश काकाकेँ जेना सह भेटलैन तहिना मन खुशी भेलैन। अपन अतीतकेँ जगबैत रघुवंश काका बजला- “बौआ चेतू, दुनू गोरे इस्कूले टाक संगी नइ ने रही, बेसी काल दुनू गोरे संगे रहैत रही, कखन अपना ऐठाम खाय आ कखन तोरा

ऐठाम, से ठेकाने ने रहए।"

रघुवंश कक्काक बात सुनि मनमे उठल जे जइ काजे रघुवंश काका बजौलैन से भइये ने रहल अछि, समय निकलल जा रहल अछि आ अपने अतीतमे बेतीत कऽ रहल छी। बजलौं- "काका, गपो-सप्प होइते रहतै। तहूमे आब सेवा निवृत्त भइये गेलौं, अहाँसँ बहुत किछु सिखैक अछिए। अखन जइ काजे बजेलौं हेन तइमे आरो गोरेकेँ नहि देखै छिऐन?"

रघुवंश काका बजला- "आन गोरेकेँ आइ नइ कहलयैन अछि। तोरा परिवारक संग सभ दिनसँ सम्बन्ध रहल तँए पहिने तोरासँ विचारि लेब, जे नीक हएत से करब।"

रघुवंश कक्काक विचारसँ बुझि पड़ल जे भोज करैक विचार मनमे नहि छैन, तखन किछु वाध्यता छैन तँए...।

बजलौं- "काका, अपन जे विचार पेटमे अछि से पहिने बाजू। अपने जे बुझै छी से विचार देब आ पछाइत जे अनुकूल बुझि पड़ए से करब। अहाँसँ किछु जीवनक बात बुझबाक अछि तँए आहे-माहे छोड़ू आ अपन काजपर आऊ।"

रघुवंश काकासँ बेसी मन खुशी सुचित्रा काकीक भेलैन, किए तँ ओ बुझि रहल छेली जे आजुक परिवेशमे बेटा-पुतोहुक आशा लोककेँ केते रहि गेल अछि, तखन तँ समाज ओहन धर्मस्थल बनि अखनो जीवित अछि जैठाम स्वर्ग नहि अछि तँ नरको नहियेँ बनल अछि। रघुवंश काका बजला- "बौआ, जहियासँ नोकरी शुरू केलौं, अपन कटान तहियेसँ समाजक भोज-काजसँ हुअ लगल, तइ बीच पिताजी छला, जहिया पिताजी मरि गेला तहियासँ सोलहन्नी कटान भऽ गेल। तँए मनमे अछि जे भोज करी।"

रघुवंश काका अपन विचारक छैथ, अपना जे मन फुरतैन से

अपन करता। बजलौं- “काका, भोज केतेको रंगक होइए तइमे जे अपना नीक बुझि पड़ए से करब। समाजमे कोनो कि छान-पगहा लागल अछि जे कियो नोकरीसँ निवृत्त भऽ औता तँ हुनका भोज करए पड़तैन। छोड़ू ऐ विचारकेँ। अहाँसँ किछु खास विचार बुझैक अछि।”

‘खास विचार बुझैक’ आकि की, रघुवंश काका उत्साहित होइत पत्नीकेँ माने सुचित्रा काकीकेँ कहलखिन-

“एकबेर फेर चाह बनाउ। बहुत गप-सप्प करैक अछि।”

पैछला जिनगीक बेवहार बुझैले मन तेते उताहुल भऽ गेल जे बजा गेल-

“काका, ताबे चाह अबैए तइ बीच गप-सप्प चलए दियौ।”

खेला-पीला पछाइत जहिना लोकक मन एकरंग हुअ लगैए तहिना भरिसक रघुवंश काकाकेँ सेहो भेलैन। बजला-

“चेतू, गप-सप्प कि केतौ पड़ाएल जाइए, तहूमे पैछला जिनगीक गप, ओ इतिहासक पन्नाक संग इतिहासकारक मनमे तेना गँथा गेल अछि जे जाबे गरदैन रहत ताबे हरिक हार जकाँ शोभित रहत।”

ओना, अपन मन रघुवंश कक्काक बीतल जिनगीपर टाँगल छल तँए आन-आन बात दिस नजैरकेँ जाइसँ परहेज केने छेलौं। किए मनमे उठैत जे एक वस्तु आकि एक जीवनक एक आधार भेल तँए एक चित्र भेल। मुदा रंग-रंगक कलाकारक हाथे जखन ओइ चित्रक अनुकरण कएल जाइए तखन अनेको रंग भइये सकैए, जइसँ सुचित्रसँ विचित्रक सम्भावना सेहो बनियेँ जाइए। जइसँ ऐगला दर्शक माने ऐगला पीढ़ी, जेते सुमराह हेता तइसँ कम गुमराहो नइ हेता, सेहो बात नहियेँ अछि। गुमराहो होइक मजबूत आधार अछिए। किए

तँ अपन समाजमे आइये नहि सभ दिनसँ लोक कहैत आबि रहल छैथ जे लोक दुख बिसैर जाइए, सुख मोने रहै छइ। तँए ने नोकरियो-चाकरी केनिहारक मुहसँ सुनै छी जे हमरा बाबाकेँ हाथिये टा नहि छेलैन, सरैसा घोड़ो छेलैन आ पनरह जोड़ा हरक बरदो खुट्टापर छेलैन। मुदा ई बात बिसैर जाइ छैथ जे हुनका केते अजगज आ केते कारोबारो छेलैन आ अपना केते अछि जे अनकर काज करैक सोल्होअना छुट्टी भेटल अछि। तैबीच सुचित्रा काकी चाह नेने पहुँचली। चाह देखि रघुवंश काका बजला-

“जाबे दुनू बापूत चाह पीब ताबे अहूँ हाथे-हाथे चाहो पीब लेब आ पानो लगा लेब।”

जखन सभ एक्के छी तखन एकठाम बैस किए ने अपन जिनगीक गप-सप्प करब।

ओना, अपना मनमे ईहो उठैत रहए जे जीवनीए लोक ने, गाछ-बिरीछक हौ आकि लत्ती-फत्तीक हौ, जखने ओ धरतीपर जन्म लइए तखने अपन वंशक परिचय माने जइ चीजक गाछ रहल ओकर आन रूप तँ नहि मुदा पातक रूप-परिचय दइये दइए, तेकरा चिन्ह पबैए। जखन से होइए तखने ने तुलसी पात कहैए, ‘हम छोट होइ आकि पैघ, मुदा छी तुलसीए वंशक तुलसी तँए तुलसी पातमे जेते गुण होइ छै तेते हमरोमे अछि।’ ..अपन वौआइत मनक छोरकेँ ओहिना खिंचलौं जहिना कृष्ण महाभारतक लड़ाइमे रथक घोड़ाक छोर खिंचै छला। बजलौं-

“काका, नोकरीसँ पूर्वक बात जँ गुरु कक्काक सोझामे करब तँ ओ बेसी नीक हएत, अखन जहियासँ नोकरी शुरू केलौं बस तेतबे बीचक गप-सप्प करू।”

हमर बात सुनि रघुवंश कक्काक मन कने हटकलैन। हटकैक

कारण भेलैन जे बजैक आन भूमिकामे नोकरीसँ पूर्वक समयकेँ रखने छला, बजला-

“बौआ, पूरम-पूर चालीस बर्ख नोकरी केलौं। सेहो केलौं एक्के स्कूलमे।”

पुछलयैन-

“चालीस बर्खक बीच समाजमे जेते उथल-पुथल भेल ओकर प्रभाव तँ स्कूलो-कौलेजपर आ शिक्षकोपर पड़िते रहल हएत किने?”

हँसैत रघुवंश काका बजला-

“बौआ चेतू, अपना जनैत जे समाजकेँ आँकि सकलौं तइ अनुकूल सामंजस करैत जहिना गामसँ परदेश नोकरी करए गेलौं तहिना चालीस बर्खक परदेशी जीवन बीता आइक जीवनमे छी।”

अपना जनैत रघुवंश काका सभ बात बाजि गेला, मुदा बुझैक अभावमे अपन मन नहि भरल। बजलौं-

“आरो किछु काका?”

रघुवंश काका बजला-

“सामाजिक-आर्थिक जे समुचित दिशा अछि ओ..!”



शब्द संख्या : 2881, तिथि : 16 अगस्त 2020

सुदृढ़ जिनगी

बारह बर्ख कोलकातामे रहला पछाइत मन उवियाएल जे गाम जाएब। मन तँ उवियाएल मुदा अपने मन रोकैत कहलक जे गाममे अपन रहल की? विचित्र स्थिति मनमे उठि गेल। पूर्वजक बसौल गाम, जइमे अपनो जन्म भेल, गामेक माटि-पानिमे बालपनो आ विद्यपनो[2] बीतबे कएल अछि, तखन की नइ रहल? फेर लगले भेल जे जेहो अपन पूर्वजक देल खेत-पथार छल सेहो बेचि कऽ नइ एलौं, गौंआँकेँ ओहिना छोड़ि देलिऐन जे भाय गाममे जे रहता तिनकर गामक खेत-पथार छिऐन। ने बटाइ-बँटैले गाम जाएब आ ने रौदी-दहीमे खेतीमे एकोपाइ सहयोग करबैन.! लगले मन उच्छैट कऽ नीलकण्ठ बाबापर पहुँच गेल।

नीलकण्ठ बाबापर नजैर पड़िते मन विस्मृतिसँ स्मृति आ स्मृतिसँ विस्मृत हुअ लगल। बारह बर्खक कोलकाताक प्रवासमे ने अपने कहियो चिट्ठी-पतरी लिखि नीलकण्ठ बाबाक सुधि-भाँज लेलौं आ ने नीलकण्ठे बाबा लेलैन। आखिर हमहूँ तँ हुनके पढ़ौल विद्यार्थियो ने छेलिऐन। ओना, विचार केलापर जे बात नीलकण्ठ बाबाक आब बुझै छी से तहिया माने जखन गाममे छेलौं, नइ बुझैत रही, नहि तँ किए ने बुझि पेने रहितौं जे नीलकण्ठ बाबा परिवारक बीच रहितो परिवारसँ अलग जीवन धारण केने छैथ। अपन दिनानुदिनक सभ जरूरियात काज अपने करै छैथ जइसँ जीवनक

---

[2] विद्याध्ययनक अवस्था

प्रति एते बिसवास मनमे बनले छैन जे कर्म-क्रियामे केतौ विघ्न-बाधा नहि अछि। जखने जीवनक विघ्न-बाधा हटल रहैए तखने ने आधा राधा आधा कृष्णक जुगल-जोड़ी मनमे नचैए।

रवि दिन रहने छुट्टी दिन छीहे तँए मनमे कोनो धड़फड़ी नहियेँ छल। नीलकण्ठ बाबाक संग गाम सेहो दोहरा कऽ मनमे उठल। एकाएक मनमे विचारक धुक्का उठल जे गाम जेबे करब। जहियासँ कोलकाता प्रवास भेलौं तहियासँ भर्लें अपने बिसैर गेलौं वा नीलकण्ठे बाबा बिसैर गेला। खाएर, जे समयक संग बीत गेल ओ तँ बीतल दिनक भेल मुदा जे अबैबला अछि तइले तँ गामकेँ गौंए ने पकड़ता। मन तेते उत्कण्ठित भऽ गेल जे दृढ़तासँ मनमे विचार रोपा गेल- गाम जेबे करब। अपने मनमे अनेको प्रश्न अनायास उठए लगल। पहिल उठल- जखन अपन घर-दुआर नइ अछि तखन रहब केतए? मुदा लगले जवाब भेट गेल जे मिथिलाक गाम अखनो ओ गाम छी जैठाम दरबज्जापर आएल चिन्हार-अनचिन्हार दुनू तरहक अभ्यागतकेँ एक लोटा पानिसँ आग्रह होइते अछि। मन मानि गेल जे गामक दरबज्जा खुजल अछि। गाम जेबाक खुशीमे मन मोहित भइये रहल छल कि दोसर प्रश्न उठि गेल। गाम असगरे जाएब आकि परिवारोकेँ लऽ जाएब? जँ परिवारक संग माने तीन-बच्चाक संग पत्नी, जाएब तखन रहब केतए? मरदा-मरदी ने लोक आमक गाछीक खोपड़ियोमे समय बीता सकैए मुदा अज-गजक संग केना बीतत?

परिवारपर नजैर अँटकले छल कि दोसर प्रश्न मनमे अँकुर गेल। अँकुर ई गेल जे पत्नीकेँ बिना पुछने, अपने मने चलि जाएब आ पछाइत ओ उपराग दिअ लगती जे अहींटाक स्मृतिमे गाम अछि आकि हमरो स्मृतिमे अछि। की अहाँकेँ बुझि पड़ैए जे आसीन मासमे भगवती (दुर्गा)केँ सिंगहारक फूल बीछि, स्नान-धियान कए हम नहि

पूजने छिऐन आकि से बिसैर गेलौं?

जहिना दू शक्तिक बीच क्षितिजमे चाहे मनुक्ख निर्मित हवाई जहाज हुअए आकि विधाताक गढ़ल चिड़ै हुअए, चुनमुनीकेँ तँ ओहन पाँखिये ने होइए जे ओतए पहुँचत, ओहो तँ ओइ बीच माने–क्षितिजक बीच–लसैकते अछि। लसकबो केना ने करत? एक दिस धरतीक आकर्षण अछि तँ दोसर दिस अकासोक तँ अछिए, तैबीच धरती-अकासकेँ एक करब असान थोड़े छी। असान भलेँ नइ हुअए मुदा असम्भवो तँ नहियेँ छी।

विचारक द्वन्द्व–दुविधा–क बीच अपने मन कहलक जे एकबेर पत्नीसँ टोह लेब जरूरी अछिए। जँ कनियोँ नाकर-नुकर करती तँ कनी अपनो दिससँ सह दैत सहटारि देबैन जे हमहूँ कि कोनो गाममे रहैले जाइ छी...।

जहिना अंगदकेँ सीताक टोहमे राम दरबारमे निर्णय भेल तहिना अपनो आत्मारामक दरबारमे विचार भेल जे गामो तँ गाम छी। जहिना बाइलिक बेटा अंगदकेँ रामदरबारमे निर्णयानुसार कहल गेलैन जे सीताकेँ भाँज लगबए अहाँ जाऊ, तखन अंगद यहए ने उत्तर देलखिन जे भाय लोकैन, जेबाकाल सीता सम्मुख रहती तँए समुद्र पार करैमे कोनो बाधा नहि हएत मुदा घुमती बेर ओ पीठ दिस भऽ जेती जइसँ हम बिच्चे समुद्रमे डुमि जाएब, वापस आएल नहि हएत।

समत्व रूपमे माने पति-पत्नीक विचार, मन मानि गेल जे पत्नीसँ एकबेर मुँह-छोहैन कऽ लेब बेसी हितकर हएत। कोठरियेक ओसारक कुर्सीपर बैसल रही, पत्नी भनसा घरक टहल-टिकोरामे लागल छेली, शोर पाड़ैत कहलयैन-

“कने एमहर सुनू।”

जहिना बजलौं तहिना ओहो मुहेँ लागल उतारा देली- “कने हाथ लगल अछि, लगले अबै छी।”

जहिना पत्नी मुहसँ बजली तहिना हाथ झाड़ैत ओसारपर आबि बजली- “की कहलौं?”

अपने धकमकाए लगलौं जे पत्नीकेँ कोन रूपमे कहिऐन। कोन रूपक माने पहिल भेल- पति-पत्नीक बीच जीवनक सम्बन्ध, दोसर भेल- हिनछिनाएबक अवस्था आ तेसर भेल- लैंगिक संस्कारक प्रभाव। मुदा अखन से सभ नहि, बस एतबे जे हमहूँ बजलौं-

“गामसँ एना बहुत दिन भऽ गेल से मन होइए जे एकबेर गामक दर्शन करी।”

समर्थन करैत पत्नी बजली-

“जखन नैहरसँ सासुर बसए लगलौं तखन साल पुरैत-पुरैत मन उवियाा लगै छल जे अपन गाम-घर, माता-पिता आ सखी-बहिनपासँ भेँट करिऐन।”

पत्नीक बात सुनि मनक विचार घटए लगल। घटए ई लगल जे जे चाहै छेलौं से नइ भेल। तेहेन अपन विचार पत्नी रखली जे बुझि पड़ल अपनोसँ अगुताएल वएह छैथ। दोसर बात ठिकिया कऽ बजलौं- “केते दिन गामसँ कोलकाता एना भेल हेन?”

गामसँ एना, पत्नी बिसैर गेल छेली, ओना अपनो बिसैरिये गेल छेलौं मुदा जखनसँ गाम दिस मन उवियाएल तइ बिच्चेमे महिना साल जोड़ि नेने रही जे केते साल आ केते मास वा सोझे केते मास वा केते पख भेल अछि। सपता-हपताक बात छोड़ू।

डायरी देखैत पत्नी डायरी नेनहि लगमे पहुँच बजली- “बारह बर्ख छह मास भेल अछि। जुगोसँ बेसी भऽ गेल।”

पत्नीक मुहसँ 'जुग' सुनि बजलौं-

"जुग केते दिनक होइए?"

बजैक क्रममे तँ पत्नी बाजिकऽ जुगक चर्च कऽ लेलैन मुदा मनमे एकेटा जुग माने सतजुगेटा छेलैन। बजली-

"बारह बर्खक जुग होइए से अहाँकेँ नहि बुझल अछि।"

अपना जनैत पत्नी गुरुआइ करए चाहै छेली जे बात अपनो मन कहलक। बेतुकार बात नहि बढ़ा बजलौं-

"बारह बर्खक जुग होइए से तँ अपनो बुझल अछि मुदा अखन तक केते जुग बीतल अछि आ अखन कोन जुग चलि रहल अछि से कहाँ कहलौं। आ ने यएह कहलौं जे जखन बारहे बर्खक जुग होइए तखन अपनो सबहक उमेर तीस-पैंतीस बर्खक अछिए, तखन कोन जुगमे जन्म भेल आ केते जुग टपि–कोन-कोन जुग टपि–अखन कोन जुगमे छी?"

पत्नीकेँ बुझल रहितैन तखन ने, से तँ बुझल रहैन नहि तँए लड़खड़ाइत बजली-

"सतजुगमे हरिशचन्द्र भेल रहैथ की नै?"

बजलौं-

"हँ! से तँ भेले रहैथ, मुदा जखन बुझै छी जे बारहे बर्खक जुग होइए तखन आइ तक एकेटा जुग बीतल? ई नहि बुझल अछि जे कलजुगक लोक तेहेन हएत जे लग्गी लगा कऽ भाँटा तोड़त।"

जेना कोनो बिसरल बात मोन पड़लासँ खुशी होइ छै तहिना पत्नीकेँ सेहो भेलैन। बजली-

"किए ने बुझल रहत। केता दिन दादी कहने छेली जे जखन कलजुग आबए लगल कि जेते देवी-देवता छला सभ राता-राती

जमीन छोड़ि–देश छोड़ि–समुद्रमे बास करए पड़ा गेला। संजोग एहेन भेल उनकुट्टी पहुँचैत-पहुँचैत भोर भऽ गेलै। महींसवार सभ पोसर चरबए महींसकेँ थानसँ खोलि बाध पहुँच गेल छल, जेकरा देखि सभ देवी-देवता एकेठाम माने उनी-कुट्टीमे, घौदा-माली भऽ एकटा पहाड़मे नुका रहला।”

पत्नीक बात सुनि मनमे भेल अनेरे दुनू गोरे फकचोदमे लागल छी, जे काजक बात अछि से भइये ने रहल अछि आ अनेरे जुगक फेरमे पड़ि वौआ रहल छी। बजलौं- “अखन सतजुग, त्रेता, द्वापर, कलजुगक बात छोड़ू जे केते चक्कर अखन तक काटि चुकल अछि आ बाँकी कटैक केते छइ। अखन अपन जन्मभूमि- गामक विचार करू।”

जहिना अपने बजलौं तहिना मुहेँ लागल पत्नी बजली- “अहाँक जे विचार हएत सएह ने हमहूँ करब।”

विचित्र स्थितिमे पड़ले रही, पुन: दोहरा कऽ पड़ि गेलौं। कोनो गर नहि देखि बजलौं-

“अपने विचार कऽ नेने छी जे काल्हि ऑफिसमे छुट्टीक आवेदन दऽ कौल्हके रौतुका गाड़ी पकैड़ गाम जाएब।”

संजोग बनल, पत्नी बजली-

“बच्चा सभक परीक्षा आठमे दिनसँ छिऐ, परीक्षाक एहेन घड़ीमे जाएब नीक हएत?”

बजलौं- “बच्चा सभकेँ लऽ जाएब नीक नहि हएत, मुदा ओकर साती तँ अपने परीक्षामे नहि ने बैसब जे गाम जाएब नीक नइ हएत।”

जहिना दू देशक सीमा वा दू गामक सीमा होइ छै तहिना दू विचारक सीमा सेहो होइते अछि। तहूमे महिलाक लेल सभसँ उकड़ू,

सघन आ अग्नि परीक्षाक सीमानक समय तखन अबैए जखन पति आ बेटाक बीच जीवनक संघर्ष मोड़पर पहुँच जाइए। एहने परिस्थिति पत्नीक संग भेलैन। एक दिस बच्चाक जीवन सीढ़ीपर चढ़ैक अछि तँ दोसर दिस वैचारिक धरातलपर चढ़ैत सीढ़ीपर अपने ठाढ़ रही। बेबस होइत पत्नी ओहिना आशा हारि गेली जहिना पाइक अभावमे माए-बाप बेटा-बेटीक जीवन दानसँ हारि जाइए। बेबस भेल पत्नी बजली- “अहीं सुतिहार छी, तानी-भरनीपर केना सूत बैसत जे बच्चोक जीवन खुशमय हुअए आ अपनो दुनू परानीक हुअए।”

पत्नीक टुटैत आशा देखि मलहम-पट्टी करैत बजलौं-

“दू समयमे जहिना स्त्रीगण पुरुख बनै छैथ तहिना दू समयमे पुरुखो स्त्रीगण बनै छैथ..!”

जिज्ञासा बढ़बै दुआरे विचारकेँ बिच्चेमे बिराम दऽ देलिऐ। से भेल, पत्नी बजली-

“ओ दू समय कोन भेल?”

भाय, सबाल-जवाब करब एक भेल, मुदा जैठाम पत्नीकेँ पुचकारि कऽ ठाढ़ करैक अछि तैठाम तँ तेहने धरा धारसँ ने काज चलत। बजलौं-

“स्त्रीगण दू बेर पुरुख कखन होइ छैथ पहिने से कहै छी। पुरुखोक आ महिलोक जँ एकबेर कहब तँ ओहिना गजपट भऽ जाएत जेना ललका-हरियरका रंग मिलि बनि जाइए करिया आ कहत जे हम ललके छी तँ हम हरियरके छी।”

विचारक गगनमे मगन होइत पत्नी बजली- “से कहूँ भेलैए.!”

पत्नीक विचारसँ मन भरि गेल। बजलौं- “होइले ते किछु होइए मुदा हेबक की चाही, ई विचार मनुक्खे टा कऽ सकैए, आन

नहि कऽ सकैए।”

पत्नीकेँ कानक सुनल बात जेना मोन पड़लैन तहिना अकानैत बजली-

“समाजमे जे लोक बजै छैथ जे सभ जीव-जन्तुक आत्मा एकेरंग होइए, तँए सभ एक्केरंग ने भेल?”

ओना, पत्नीक प्रश्न कानमे पड़िते मन गुदगुदा गेल मुदा घर बनौनिहार तँ ई बुझै छैथ किने जे जखन ईटाक दू-मंजिला घर बनबए लगब तखन ईहो ने हिसाब जोड़ि लिअ पड़त जे जँ दुइयो बर्ख बनबैमे लागत तँ तइले दू बर्खक ओरियानो आ घरक अभावक भोग सेहो अपने भोगए पड़त। मुदा जैठाम लोकक आइक दिन माने वर्तमान समयक घटित दिन, केना गुदस हएत तैठाम तँ पितृ-पितिरानिक जे पोखरिक घाटपर एकबोझ खरही आ एकटा बाँससँ घर बना जहिना काज चलिये जाइए तहिना ने चलबए पड़त। से तँ भेल जगह-जगहक बात, मुदा अखन जे विचार मनमे रोपा गेल अछि तेकरा छोड़ि दोसर दिस वौआएब नीक नहि। सामंजस करैत बजलौं-

“प्रश्न-पर-प्रश्न उठियो रहल अछि आ प्रश्ने-तर-प्रश्न दबाइयो रहल अछि, जइसँ जीवन-सूत्र सेहो गड़बड़ाएत।”

पत्नी की बुझलैन आ की नहि बुझलैन से तँ हुनकर मन बुझतैन, मुदा बजली एतबे-

“से की?”

‘से की’ सुनिते जहिना रस्ता बदलनिहार यात्रीकेँ एक रस्तासँ दोसर रस्ता फुटैत देखि तरे-तर मन हलैस जाइए तहिना भेल। बजलौं-

“महिला दू समय कखन पुरुख होइ छैथ आ पुरुख कखन महिला होइ छैथ से पहिने कहि दइ छी।”

बजैक क्रममे ई सोचि बजलौं जे एकोटा जवाबसँ काज चलि सकैए। किए तँ मात्र ओकरे विपरीत मोड़ मोड़ि दइक छइ। मुदा तइ बिच्चेमे पत्नी टिप देलैन- “महिला कखन पुरुख होइए?”

अपन बात बुझैक जिज्ञासा जखन मनुक्खमे आबए लगैए माने विचारक उदयसँ पहिने उदीयमान हुअ लगैए, तखन भाषाक सनचरण सेहो हुअ लगैए, जे पत्नीक विचारसँ पूर्णरूपेँ तँ नहि झलैक रहल छल मुदा झन-झना कऽ जरूर झलैक रहल छल। आशुतोष दैत बजलौं-

“जखन पुरुख विहीन परिवार रहल तखन आ जखन बाल-बच्चाकेँ पुरुखे जकाँ अपन जवाबदेही बुझि सम्हारै छैथ तखन।”

बात सुनि पत्नी की विचारए लगली से तँ अपने नहि बुझि पेब रहल छेलौं, अनका मनक बात आन बुझिये केना सकैए। बेचारी अपन जीवनकेँ परिवारमे ठाढ़ करैक विचार सोचि रहली अछि आकि अपन चुकल जिनगीक अपसोच कऽ रहली अछि। मुदा तइ बिच्चेमे पत्नी बजली-

“अहाँक मनमे जे अछि से अहूँ करू आ अपना मनमे जे अछि से अपनो करै छी।”

पत्नीक बात सुनि अपनो मन खुशीसँ लबलबा कऽ भरि गेल, बजलौं- “अखन जे कहलौं ततबे बुझू। गामसँ घुमि कऽ आएब तखन पुरुखक मौगपन कहब।”

अपन विचारक धुनिमे आकि सिरपर सवार बाल-बच्चाक भार बुझि पत्नी मुँह दिस देखि रहल छेली मुदा बकार किछु नहि निकैल रहल छेलैन। अपना बुझि पड़ल जे अवग्रहसँ जान छुटल। मन हल्लुक होइते फुदैक उठल जे कोनो काजकेँ पहिने तज-बीज नीक जकाँ करैत मनमे रोपी। जखन मनमे रोपा जाए तखन ओकर क्रिया-

प्रणाली–करैक तरीका–पर नजैर बढ़बैत कार्य-प्रणालीमे हाथक संग बुधियो चाहे बुइधिक संग हाथोकेँ एकबट्ट करैत लागि जाइ। क्रिया प्रणालीक बीच अनेको मुराम जगह अछि, ओइ मुरामकेँ सुराम बनबैत तनमयसँ तल्लीन भऽ लीन भऽ जाइ। यएह छी जीवन क्रियाक सूत्र।

गाम जेबाक तैयारीमे अपनाकेँ झोंकैत विचारए लगलौं। जे वर्तमान परिवेश अछि ओइ अनुकूल अपनाकेँ गामक दर्शन करैक अछि। परिवर्तनशील प्रकृति–दुनियाँ–अछि, मुदा ओ कोन रूपमे अछि तेकरा नीक जकाँ ठेकाइन लेब तखने ने नव जगहमे मन बसि सकैए।

गामक सीमामे प्रवेश करिते मन नीलकण्ठ बाबापर पहुँच तेना लसैक गेल जे ने गामक खेत-पथार देखि पेलौं आ ने गामक घर-दुआर। देखो केना पड़ैत, दू दुनियाँक बीच बसल जीवन जखन भीतुरका माने सूक्ष्म दुनियाँमे, बिचड़ए लगैए तखुनका दृश्य आ जखन बाहरी दुनियाँमे माने स्थूल दुनियाँमे बिचड़ए लगैए तखुनका दृश्यमे अन्तर भइये जाइए, सएह भेल। तैसंग ईहो भेल जे जइ गतिये अखन तक डेग उठि रहल छल तइमे शीलता सेहो आएल।

नीलकण्ठ बाबाक संग ओ बीतल दिन, जे अतीतक छल, वर्तमान बनि आगूमे नाचए लगल। की निष्ठा छैन बाबामे, सार्वजनिक रूपमे तँ कोनो विद्यालयमे ने शिक्षक भेला आ ने कोनो साम्प्रदायिक रंगमे कहियो रंगला मुदा अपन बनौल जीवनकेँ कोन रूपेँ निमाहि अस्सी बर्खसँ ऊपरे जीब लेलैन? आब तँ सहजे मृत्युकेँ मुँह बाबि ताकि रहल हेता जे एहेन कोनो मुराम जगह भेटए जे धरतीक वीर जवान जकाँ शहीद होइ। नीलकण्ठ बाबामे मन तेना ओझरा गेल जे अपन घर-घराड़ी, दियाद-वादक सुधिये ने रहल आ पहुँच गेलौं

नीलकण्ठ बाबाक ऐठाम।

दरबज्जेपर बैसल नीलकण्ठ बाबा चीन्हि गेला। कहब जे अस्सी बर्खक बुढ़केँ आँखिमे ओहन इजोत थोड़े छेलैन जे कनी फरिक्केसँ ओहन लोककेँ चीन्हि गेला जे बारह बर्खसँ ऊपरेसँ परदेशोमे बसै छैथ आ अपनो अपनाकेँ अनचिन्हारे जकाँ बुझि पड़ै छैन। चिन्हैक लेल खाली ऊपरके आँखिये देखलाटा सँ नहि होइ छै। चिन्हैक अनेको दुआर अछि, जेना आन्हरोमे आदमी बोली अकानि परिचितक वाण छोड़ैए। बुझले अछि जे 'चारि बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण। एतेपर सुलतान है, मत चुको चौहान', तहिना नजैरिक दोष कनी-मनी भेनौं जँ चलनिहारक चाइलिक सिरखार मोन रहने सेहो लोककेँ चिन्हिये जाइए। नीलकण्ठ बाबाकेँ ते सहजे आँखियो दुरुस छैन्हे तैसंग आनो-आन लक्षणक बोध सेहो छैन्हे।

कनी फरिक्केमे रही कि नीलकण्ठ बाबा बजला-

"आबह, आबह बौआ सुशील।"

कहब जे जखन अपने जवान छी, नजैर तेज अछि तखन पहिने अपने ने परिचित जकाँ बजितौं। मुदा तेकर कारण दोसर भेल, भेल ई जे पहिने लगमे पहुँच बाबाकेँ पएर छुबि गोड़ लगैक विचार छल, तँए अपन मुँह बन्ने छल, आ बाबा बाजि गेला। जाबे अपने बाबा-लग पहुँचलौं तइसँ पहिनहि नीलकण्ठ बाबा दोहरा कऽ बाजि गेला-

"रस्ताक झमारल एलह हेन, आब ते तूँ सब परदेशिया भऽ गेलह, तँए पहिने चाह पीबह कि पानि पीबह आकि पहिने नहेबह-सोनेबह?"

मने-मन ईहो हुअए जे अखन तक अपने बाबाकेँ गोड़ो ने लगलयैन हेन आ बाबा सौंसे जिनगीक वृतान्त सुना देलैन। लग पहुँच

नीलकण्ठ बाबाकेँ दुनू हाथ जोड़ि गोड़ तँ लगलयैन मुदा मुहसँ किछु ने बजलौं। बाजबो उचित नहियेँ बुझि पड़ल। हाथ जोड़ि गोड़ लागल जाइए तखन मुहसँ बजबाक की खगता। जखन कि जिनका गोड़ लगबैन ओहो हाथ जोड़ि पएर छुला वा नहियोँ छुलाकेँ बुझिते छैथ।

बजलौं- "बाबा! हम तँ परदेशिया भेलौं, अनका बसक लोक, तँए जिनगी सहरगंजा भऽ गेल अछि। ने खाइ-के ठेकान आ ने पीबै-के आ ने कोनो आने। तँए कनी चाहो पीब आ पानियो पीब।"

खोलैबला कपड़ा सभ खोलि चौकीपर रखलौं। मन भेल जे कलेपर[3] जा नीक जकाँ पहिने मुँह-कान धोइ ली। तैबीच चाहोक जोगारक समय भेटतैन। बजलौं- "बाबा, कलेपर जा मुहोँ-कान धोइ लेब आ पानियो पीब लेब। अखनो गाम गामे छी जे लोक टटका पानि पीबैए।"

जाबे अपने कलपर सँ हाथ-पएर, मुँह-कान धोइ, पानि पीब एलौं तइ बिच्चेमे शीला दादी चाह नेने पहुँच गेल छेली। दादीक हाथमे चाह देखि मनमे भेल जे यएह छी काज करैक अभ्यास। अभ्यासोक अपन महत छइहे। महत ई छै जे जहिना डॉक्टर थर्मामीटरसँ तापमान आ आन-आन यंत्रसँ आन-आन रोग पकड़ै छैथ तहिना जिनगीक मापक यंत्र अभ्यास सेहो छीहे। माने ई जे जखन जीवनक सभ क्रिया नियमित ढंगसँ नियमित समयानुसार चलैए तखन अनेरे ने लोक अपन स्वस्थताक परिचय पाबि जाइ छैथ। दादीकेँ देखि मनमे ईहो छगुन्ता लगए जे अस्सी बर्खसँ ऊपरक दादीक देहमे अखनो जेना जुआनीक खून दौड़िये रहल छैन। लगमे अबिते दादीकेँ ठाढ़े-ठाढ़ दुनू हाथ जोड़ि मुहसँ बजलौं-

"दादी गोड़ लगै छी।"

---

[3] चापाकल

ओना, नजैरसँ माने आँखिसँ दादीकेँ देखैमे मड़ुओ भरि असोकर्ज नहि भेलैन मुदा बिसैर गेने थोड़े ठमकली, जइसँ गोड़ लगैक असीरवाद मनेमे रखने छेली। होइतो अहिना छै जे गोड़ लागब ने एक रंग होइए मुदा गोड़क असीरवादी उत्तर तँ आदमी-आदमीक बीच अलग-अलग माने सम्बन्धक अनुसारे देले जाइए, तँए दादीक मुँह बन्न छेलैन। अपन परिचय दैत दोहरा कऽ बजलौं- “दादी, हम सुशील छी।”

नाम सुनला पछातियो दादी धकमकाइते छेली। धकमकाइक कारण भेलैन जे एक नामक लोक गाममे केते रहैए माने अनेको लोकक नाम एक रहिते अछि। तहूमे सोझे ‘सुशील’ बाजल छेलौं, जँ नामक आगू टाइटिल लगा बाजल रहितौं तँ चिन्हेमे कनी हल्लुको होइतैन, सेहो ने बाजल छेलौं। तइ बीचमे नीलकण्ठ बाबा बजला-

“सुशील, गौंआँ रहितो अखन परदेशी बनि गेल अछि, तँए अखन अहीठाम रहत।”

सभ दिन एकठाम रहनिहारि शीला दादी नीलकण्ठ बाबाक संक्षिप्त बातकेँ विस्तारसँ बुझि गेली। बजली-

“भगवान भागमन्तेकेँ एहेन अवसर दइ छथिन।”

दादीक बात नीलकण्ठ बाबा की बुझलैन से तँ वएह बुझता मुदा अपने जे बजारक हवा लगि गेल अछि तइसँ मनमे नीक नइ लागल। मने-मन मन तुरुछ गेल जे लोक अनके-ले कमाइए जे लुटबैत रहत। मुदा बजलौं किछु ने।

नीलकण्ठ बाबा लग बैस चाह पीबए लगलौं। बुझि पड़ल जे जखन आधासँ बेसी अपनो गिलासक चाह आ बाबोक गिलासक चाह सठि गेलैन, तखन नीलकण्ठ बाबा बजला- “सुशील, गाम नीक लगि रहलह अछि?”

नीलकण्ठ बाबाक मुँहक बात जे 'गाम नीक लगि रहलह अछि' सुनि भादवक अन्हरियाक ठनका जकाँ अनेको प्रश्न मनमे खसल, मुदा सभ प्रश्नकेँ मनेमे चौपेत कऽ राखि बजलौं-

"बाबा, कोनो सखे गाम छोड़ने रही जे नीक लागत आकि नीक नइ लागत। भेल तँ...।"

आगूक विचार पेटेमे रखि लेलौं। पेटमे रखैक कारण भेल जे गाममे सभ दिन रहनिहार नीलकण्ठ बाबाक अपन मन की कहै छैन। ओना, अपना जनैत झाँपि-तोपि विचार बुझए चाहलौं, मुदा से भेल नहि। जहिना कोनो विचारककेँ ओहन समयमे जखन ओ ओहने विषयक विचार करैत होथि आ तहीकाल जँ कियो ओहने प्रश्न रखैए, जेकर जवाब विचारकक जीहक टुनगीपर रहने धाँइ-दे भेटि जाइए तहिना नीलकण्ठ बाबाकेँ सेहो भेलैन। जइसँ मन हलैस कऽ कलैस गेलैन। कलैसते बजला-

"बौआ सुशील, नीक लागब वा नइ नीक लागब वैचारिक प्रश्न छी। मनुक्खमे दुनू समाहित अछि। माने जीवनक लेल जहिना ओकर भौतिक आवश्यकता अछि तहिना वैचारिक सेहो अछि।"

अपना बुझि पड़ल जे बाबा किछु आरो बजता मुदा बिच्चेमे मुँह बन्न कऽ लेलैन, जइ बुझैले चोटाएल साँप जकाँ अपन मन तँ उनटए-पुनटए लगल, तँए आरो बाजबसँ परहेज करैत बजलौं-

"हँ, से तँ अछिए।"

जेना कोनो महाकाव्य वा उपन्यासक कोनो अंश समाप्त भेने अध्याय बदलैए तहिना नीलकण्ठ बाबा उजड़ल-उपटल गामक खुट्टा जकाँ ठाढ़ भेल बजला-

"बौआ सुशील, बहुत दिनपर गाम एलह अछि, तँए कम-सँ-कम एक पनरहिया रहह। बहुत दिनक गप-सप्प सेहो बाँकी अछि।

अखन तोहूँ रस्ताक झमारल छह तँए मन भरियाएल हेतह। जइसँ नीक जकाँ गप-सप्प करैमे मन नहि लगतह।”

ओना, अपना जनैत नीलकण्ठ बाबा सामाजिक भाषामे बाजल छला, मुदा अपना बुझि पड़ि रहल छल जे मन तँ बेसी भरियाएल नहि अछि, हँ तखन देहमे थकान जरूर अछि। बजलौं-

“बाबा, मन ओते भरियाएल नहि अछि जे गप-सप्प नहि कऽ सकै छी। तहूमे परदेशी छी, अपन रहैक कोनो निसचित ठौर तेहेन नहियेँ अछि जे निचेनसँ कोनो गप-सप्प करब।”

नीलकण्ठ बाबा बुझि गेला जे सुशील गप-सप्प करैक विचारमे अछि। बजला-

“परिवारक की हाल-चाल छह?”

ओना, नीलकण्ठ बाबा विचारकेँ परिवार दिस मोड़ि देलैन मुदा अपन मन कहै छल जे परिवार तँ बेकतीगत भेल, जखन समाजक दू गोरे गप-सप्प कऽ रहल छी तखन सामाजिक गप-सप्प करब ने बेसी नीक हएत। बेसी नीक हएत, की कम नीक हएत ओ जगह-जगहक विचार छी। बजलौं-

“अपने सबहक दयासँ सभ नीक अछि।”

नीलकण्ठ बाबा बजला-

“बहुत दिनपर गाम घुरलह हेन।”

बजलौं- “हँ, से तँ घुरबे केलौ हेन।”

ओना, मनमे जे जेबाकालक माने जइ परिस्थितिमे गाम छोड़लौं आ तइ दिनमे जे विचार मनमे छल तइमे आ आजुक जे विचार अछि तइमे अन्तर भइये गेल अछि।

नीलकण्ठ बाबा बजला- “बौआ सुशील, जहिना बजरूआ

एक जीवन छी तहिना गमैया जीवन सेहो अछि। दुनूक अपन-अपन पद्धति अछि। जे बदलने जीवनक रूप-रंग सेहो बदैल जाइए।"

मने-मन अपनो सएह विचार करै छेलौं जे बात नीलकण्ठ बाबा बजला। मुदा तइसँ मन ओहिना हलैस गेल जेना टटका पढ़ल वा मुँहजुआनी याद कएल परीक्षार्थीकेँ परीक्षामे ओहने प्रश्न देखि मनमे सफलताक आशा लिखैसँ पहिनहि जगि जाइए, बजलौं-

"बाबा, अपनो मन कहि रहल अछि जे जीवनक खातिर मिथिला सन पवित्र भूमि छोड़ब नेनमति भेल।"

'नेनमति' सुनि आकि अपन विचारक प्रवाहमे, नीलकण्ठ बाबा बजला- "बौआ सुशील, देहधारी जीव धरतीपर बहुत अछि मुदा जहिना चिन्तनक दौड़मे मनुक्ख सभसँ आगू बढ़ि पंचतात्विक अछि तहिना बेवहारिक जीवनमे सेहो जीबैक उच्च कोटिक कलाकार सेहो अछिए, तखन जँ.?"

अपन जीवनक बात नीलकण्ठ बाबा पेटेमे रखि चुप भऽ गेला मुदा अपन मन बेर-बेर खुरखुरा रहल छल जे नीलकण्ठ बाबा अस्सी बर्खसँ ऊपरक जीवन गमैया परिवेशमे माने गाममे बीता चुकल छैथ, हिनको तँ अपन अनुभवक एकटा नमहर इतिहास अछिए। भाय, जखन चारू जुगक आड़ि-धुरक भाँज लगि जाएत तखन जुगक भीतर जे जीवन रहल से नहियोँ बुझल रहने लोक टप्पो-टोइया करि कऽ किछुओ अनुमान तँ कइये लइए।

बजलौं- "बाबा, अपनेसँ तँ पाँच बर्ख पढ़ने छी मुदा तइ दिनमे माने पढ़ैक दिनमे जे बात मनमे नइ आएल छल, आइ ओ आएल, तेकर उत्तर तँ बाँकी अछिए।"

काकभुशुण्डी कौआक नजैर नीलकण्ठ बाबाक छैन्हे, बजला-

"बौआ, जहिना तितिर सभ बमन खा तैतिरीय उपनिषद गढ़ि

लेलक तहिना खुदरा-खुदरी केते कहबह। एक्केबेर बुझि लहक जे 1967 इस्वीक रौदी 1971 इस्वीक सालो भरिक बरखा, 1987 इस्वीक बाढ़ि आ 1988 इस्वीक भुमकम, सभ भेल, मुदा जेही घराड़ीपर घर पहिनौं छल तेतइ अखनो अछि। ई तँ जीवनक खेल छी। सुदृढ़ भऽ खेलैक अछि।”



शब्द संख्या : 3460, तिथि : 23 अगस्त 2020

मुराम जगह

आने गाम जकाँ कुमारघाट सेहो एकटा गाम अछि। गामक चौबगली गाम जहिना ऊँचगर अछि, जइसँ चासक संग बासो ऊँचगर रहने नीक सेहो अछिए। ओना, कुमारघाटमे अखन, वर्तमानमे कोनो धार-धुर नहि अछि, जे अछियो से गामसँ आठ-दस किलोमीटर हटले अछि, मुदा गामक किछु गहींर जमीन जे उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ अछि, ओकरा लोक अखनो नदीए कहैए। आन-आन खेतसँ माटियो भिन्न अछिए। माने ई जे गामक जेतेक जमीन अछि ओ अछि मटियार, खरिआइ, चिक्कैन इत्यादि माटिक, आ नदीक बगलक जे जमीन अछि ओकर माटि दोरस, दोमट अछि आ नदी पेटक जे माटि अछि ओ गोंगा बाउल आ दोखरा बालुक तँ नहि अछि मुदा मेहिकी कोसिपुरिया बाउल जरूर अछि। गहींरगर रहने आने गहींर खेत जकाँ फसल सेहो होइते अछि। लोकक अबाहि भेने गाम-समाजक जनसंख्या सेहो बढ़िते आबि रहल अछि। जखने जनसंख्याक बढ़ोत्तरी हएत तखने परिवार बढ़त आ परिवारमे भीन-भीनौज भेने घर-अँगना बढ़बे करत, जइसँ घराड़ीक खगता सेहो बढ़बे करैए। से कुमारघाटमे सेहो भेल जइसँ नदीकेँ, माने मुइलहा नदीकेँ भरि-भरि घर-अँगना सेहो करीब पचास गोरे बना नेने छैथ। गामक माटिये जकाँ गाममे अनेको जातिक बास सेहो अछिए। ऐठाम ई नहि कहए चाहै छी जे गाम भलेँ सभ जाइतिक किए ने हुअए मुदा कहबैए खास जातिक गाम, कारण जे होइ, बस एतबे कहए चाहै छी जे जहिना सभ गाममे खूबलाल, बिपैतलाल आ

कारीलाल छैथ तहिना कुमारघाटमे सेहो खूबलालो, बिपैतलालो आ कारियोलाल छथिए। नाम भलेँ एहने आन गाममे नहि हुअए, मुदा लोक तँ ओहन छेबे करैथ जेकर किरिया-करम आ चालि-ढालिमे एकरंगाहे जकाँ अछि।

परोपट्टामे पान-सातटा सभसँ ऊँचगर गाम अछि, ऊँचगर गामक माने ऐठाम भौगोलिक अछि। भौगोलिक ई अछि जे एकोठामक दू गाम एहेन अछि जे एकटा गाम खूब ऊँचगर अछि आ दोसर गाम नीचरस। जइसँ विपरीत परिस्थिति एकठाम दूटा गामकेँ रहितो भइये जाइ छै। जँ बरखा-बाढ़िक प्रभाव बेसी पड़ल तँ ऊँचगर गामक मुँह-कान लाल भऽ जाइ छै आ नीचरस गामक मुँह मलिन भऽ कारी भऽ जाइ छै। मुदा लगले विपरीत परिस्थिति सेहो बनिते अछि। ओ बनैए जे जँ बरखा कम भेल जइसँ बाढ़ियो ने आएल आ रौदी भऽ गेल, तखन नीचरस गामक, उपजा-बाड़ी भेने, मुँह-कान लाल भऽ जाइए आ ऊँचगर गामक मुँह मलिन भऽ करिया सेहो जाइते अछि।

परोपट्टाक पाँचो-सातो गामक एहेन सौभाग्य बनियेँ गेल अछि जे उपजाक दृष्टिसँ परोपट्टामे खुशहाल गाम मानले जाइए। मानलो केना ने जाएत? मानि लिअ अहाँ आमक बजार जाइ छी, जाइते अपन मिथिलाक आम मोन पड़बे करैत हएत। जखने मोन पड़त तखने करपुरियाक करपुरक सुगन्ध आ बेलबाक बेलक सुगन्ध मनमे लगबे करत। जखने से भेल, माने आमक प्रति आकर्षण बढ़ल तखने ने विचारए पड़त जे गाम अछि कोसी-कमलाक सासुर बनल आ अपने मन दौड़बै छी फल-फुलवनपर.! ऐठाम एकटा विचारणीय प्रश्न अछि, ओ अछि जे की ओहन गाम जे गामक बीच गाम अछि, माने कोसी-कमलाक झमारसँ बाहरक गाम अछि, तेही गामटा मे करपुरियाक आ बेलबाक सुगन्ध लगि सकैए आ बाँकी गाममे नहि

लागि सकैए, सेहो बात नहियेँ अछि। जँ नीचरस गाम अछि तँ ओइमे किछुकेँ विशेष गहींर बना माछ, मखान, सिंगहार, बड़ीं इत्यादि उपजौल जा सकैए आ भरोठापर फल-फुलवन सेहो लगौले जा सकैए।

आने-आन गाम जकाँ कुमारघाटक लोक सेहो एहने छैथ जे पढ़ैक माने नोकरीए बुझै छैथ। गुलटेन आ तेतर सेहो कँवरिया जकाँ, गाम लग माने पैरक नापसँ दू कोसपर कौलेज खुजने, बी.ए. तक पहुँच गेल। पाछुआएल लोक जँ सिहन्ते करत तँ ओते ओजार-पाती जुटा केना पाबि सकैए। तखन तँ भेल जे साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए। स्नातक सेहो भऽ जाएब आ बेसी ओजार-पातीक ओरियानसँ सेहो बँचि जाएब। तँए जहिना तेतर दर्शनशास्त्र, मैथिली विषय रखि स्नातक बनए जा रहल अछि तहिना गुलटेन सेहो बनए जा रहल अछि। गामक स्कूलसँ कौलेज धरि दुनूक एके रंग जिनगी रहल तँए परिस्थिति दोस्तीक लग आनिये देने छेलइ। दुनूक बीच दोस्ती भइये गेल। ओना, दुनू दू जाइतिक छी मुदा परिवारक अर्थेपार्जनक साधन एकरंग रहने जिनगीक आचार-विचार-बेवहारमे एकरूपता आबिये गेल अछि।

संजोग बनल, बी.ए.मे जखन दुनू गोरे माने तेतरो आ गुलटेनो पढ़ै छल, दर्शनशास्त्रक शिक्षक ट्यूटोरियल क्लासमे पहुँचला, तखन मात्र दूइयेटा विद्यार्थी, तेतर आ गुलटेनकेँ दीनानाथ बाबू देखलैन। देखिते दीनानाथ बाबूक मन मुसैक गेलैन। मुसकैक कारण भेलैन जे संजोग नीक अछि। आइये किए ने दुनूकेँ जिनगीक मुराम जगह देखा दिऐ।

सामान्य क्लासमे शिक्षक पढ़बै छैथ, मुदा ट्यूटोरियल क्लास तँ से नहि छी, शिक्षके विद्यार्थीकेँ पुछै छैथ। भेल तँ जइ मुहेँक प्रश्न

उठल, उत्तर देनिहार तइ मुहेँ विदा हएत। सएह भेल। शिक्षक प्रश्न रखलैन- “अध्यात्म दर्शन की छी?”

अध्यात्मक नाओं जहिना तेतर सुनने तहिना गुलटेन सेहो सुननहि रहए मुदा दार्शनिक शिक्षक लग जवाब देब असान नहियेँ छी, मुदा तैयो जहिना तेतर जाइतिक आधारपर अध्यात्मक उत्तर देलकैन तहिना गुलटेन सेहो सम्प्रदायिक आधारपर उत्तर देलकैन।

दुनूक उत्तर सुनि शिक्षक बिगड़ला नहि, ओना दर्शनशास्त्रक शिक्षककेँ क्रोध लगले उठि जाइ छैन से गुण दीनानाथ बाबूमे नहि छैन। धिया-पुताक गलती देखि जहिना माता-पिता हँसि कऽ कहै छैथ- ‘धुर बकलेल’, तहिना दीनानाथ बाबू बजला-

“धुर बकलेल, अध्यात्म दर्शन जीवनक ओ दिशा देखबैए जे जीबैक कलामे सभसँ असान अछि।”

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि जहिना तेतरकेँ उत्कण्ठा जगल तहिना गुलटेनकेँ सेहो जगल। उत्कण्ठा जगिते जेना गुलटेनो मनमे आ तेतरोक मनमे अनेको जिज्ञासा जगि गेल, जे प्रश्न बनि मुहसँ निकलए चाहि रहल छेलै, तँए दुनू अपन-अपन प्रश्न उठबैले ब्रेंचपर सँ निच्चाँमे दुनू गोरे ठाढ़ भेल। दुनूक जिज्ञासा देख, दीनानाथ बाबू दुनूकेँ कहलैन-

“अपन-अपन प्रश्न कागजपर लिखू।”

टटका प्रवाह तँए लिखबो लेल अनुकूले भेल, दुनू गोरे अपन-अपन प्रश्न अपन-अपन कागजपर लिखि दीनानाथ बाबूक हाथमे दऽ देलकैन।

दुनूक प्रश्न देखि दीनानाथ बाबू मने-मन विहियबैत विचारलैन जे किए ने आमक आँठीए लग पहुँच, धरतीसँ अकास धरिक वृतान्त बुझा दिऐ। दीनानाथ बाबू बजला- “बौआ, एकरा नीक जकाँ बुझि

लेब जे मनुक्ख अपने काज[4] केने सुखो पबैए आ दुखो पबैए, यएह जवाब भेल अध्यात्म ज्ञान आ मानव भेल दर्शन।”

दीनानाथ बाबूक परिभाषाक शब्द एतेक असान छेलैन जे शब्दक ओझरौठक विचार दुनूमे सँ केकरो ने उठल। तँए कि परिभाषाक बीज परेख सकल, सेहो नहियेँ भेल। मुदा दुनूक मन जेना मस्त होइत आगू मुहेँ बढ़ए लगल तहिना दुनूकेँ भइये रहल छल। ओना, दीनानाथ बाबूक मनमे सेहो एकटा भ्रम पैदा लऽ लेलकैन। भ्रम ई जे अपने मने ने बुझलैन जे जहिना अपने अध्यात्म दर्शनक बाहरी रूप बुझि रहल छी तहिना गुलटेनो आ तेतरो बुझने हएत। मुदा से तँ भेल नहि, परिभाषा तँ जीवन-धारा नहि छी, जीवन-सूत्र छी, जैपर दीनानाथ बाबूक नजैर नहि गेलैन। नजैरियो केना जइतैन? अपन जानब, मानब आ करब माने अपन बुधि, विचार आ बेवहार एक बनि चलै छैन तँए नजैरसँ फड़ैक गेल छेलैन।

अध्यात्म दर्शनक परिभाषा सुनि जहिना गुलटेनकेँ भेल जे जीवनक रत्न भेट गेल तहिना तेतरोकेँ भेल। मुदा ई बुझबे ने केलक जे जखन देव-दानव समुद्र मथन केलैन तखन नूनगरहा पानिकेँ मथैत-मथैत जखन समुद्रक पेनी देखलैन माने समुद्रक थाह पौलैन तखन ने रत्न सभक खान भेटलैन। खाएर जे बुझलैन, मुदा एते आशा तँ मनमे आबिये गेलैन जे अध्यात्म दर्शन जीवनक पूर्ण सूत्र छी तँए जँ ऐ सूत्रकेँ पकैड़ जीवनक घाट पार करए चाहब तँ पार भइये सकै छी। गुलटेन बाजल- “श्रीमान्, सूत्रक धागाक धारण केतएसँ शुरू होइए?”

गुलटेनक प्रश्न सुनि दीनानाथ बाबूक मनमे दोहरी विचार जगि गेलैन, पहिल आत्मात्मिक जिनगीक शुरूआत आ दोसर जगलैन

[4] किरिया, कर्म

रंगमंचपर[5] जहिना सूत्रधार नाटकक रहस्यकेँ कवित्व स्वरमे सुना दइ छैथ तहिना सुना देब।

..दुनूक बीच माने दुनू विचारक बीच, दीनानाथ बाबूक मनमे द्वन्द्व उठिये गेल छेलैन। मुदा तेकरा ओ दर्शनक दृष्टिसँ मनेमे समाधान केलैन। समाधान केलैन जे अन्हार-इजोतक बीच द्वन्द्व रहैए, मुदा जहिना अन्हारकेँ मेटाइते द्वन्द्व समाप्त भऽ जाइए तहिना सभ किछुमे अछि। अपनाकेँ निरविचार दार्शनिकक रूपमे स्थापित करैत दीनानाथ बाबू बजला- “बौआ सभ सुनह। दुनियाँकेँ देखैसँ पहिने अपनाकेँ देखि लएह। जखन अपन रूपक थाह पेब जेबह तखन दुनियोँक, ऐठाम दुनियाँक माने अपन जीवनक दुनियाँसँ अछि, थाह पेब सकबह।”

जहिना तेतर अधा-छिधा विचार दीनानाथ बाबूक बुझलक तहिना गुलटेनो बुझलक। जखने अधा-छिधा विचार बुझलक तखने दुनूक मनमे उठल- जे नइ बुझलौं से दोहरा कऽ किए ने बुझि ली। तँए दुनू अपन-अपन प्रश्न लऽ लऽ उठि कऽ ठाढ़ भेल।

दुनूकेँ उठि कऽ ठाढ़ होइत देखि दीनानाथ बाबूक मन हलैस कऽ कलैस गेलैन। कलैसते विचार जगलैन जे किए ने पहिने अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे रखि चलैक विचार बुझा दिऐ। जखन लोककेँ जीबैक लूरि हएत तखने ने ओ आगू ताकत जे परिवार की छी, समाज की छी, कला की छी आ संस्कृति की छी...। दीनानाथ बाबू बजला- “बौआ सभ, अखन तोरा दुनू गोरेकेँ माता-पिता कोन तरहक जीवन बनेने छथुन?”

जीवनक आँकक ठेकान ने तेतरेकेँ छल आ ने गुलटेनेकेँ छल। नइ रहैक कारणो स्पष्ट अछिए। जन्मसँ लऽ कऽ अखन तक माता-

---

5 नाटकक मंचपर

पिताक आश्रयमे रहल अछि। सभ माता-पिता अपन बाल-बच्चाकेँ छातीमे सटा ऊपरसँ ऊपर पहुँचैक कामना ता-जिनगी करिते छैथ जा-जिनगी बाल-बच्चाकेँ बाल-बोध बुझै छैथ। ऐठाम बाल-बोधक माने अछि एकबट्टू दिशाक। मुदा जखन बाल-बच्चामे अगर-मगर पनपए लगै तखने ओइमे मोड़ दैत सोझ करैत चली। जेकर अभाव मातो-पितामे भइये जाइ छैन। जइले कोनो साकार-स्वरूपक उदाहरण जरूरी भइये जाइए। ओना, उदाहरण आदि मानवसँ आजुक मानव धरिक वृतान्तसँ शास्त्र-पुराण भरले अछि, अपन जीवनक करीबक घटना तँ दोसरठाम भेट सकैए मुदा स्वयं घटित घटना तँ अपन-अपन होइते अछि..। विचारक गहराइमे दीनानाथ बाबूक मन जेना-जेना तरियाइत गेलैन तेना-तेना नव-नव प्रश्नो सभ सोझमे अबैत गेलैन। विचारसँ विचार जहिना जन्म लइए तहिना दोसरो विचार बनैए आ दोसरक सहायक सेहो बनिते अछि, तँए कहब जे विचारकेँ विचार उला-पका नहि खाइए, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। ..द्वन्द्वमे पड़ल दीनानाथ बाबूक मन लगले सफेदसँ लाल हुअ लगैन आ लगले लालसँ करियाइयो लगलैन। बेसी रंग पड़ने एना होइतो अछिए।

द्वन्द्वसँ विचार निर्द्वन्द्व होइते दीनानाथ बाबूक मन गवाही देलकैन जे अपनो तँ दोसरेक अनुकरणसँ अनुक्रमित भेलौं, तहिना गुलटेनो आ तेतरो किए ने भऽ सकैए। तैसंग मन ईहो कहलकैन जे राम-रावणक थाह अथाह अछि, ने अयोध्याक ठेकान अछि आ ने लंकाक। जखन धरतियेक ठेकान नहि अछि तखन धरती-धारकक ठेकान की रहत। मुदा अपनो मिथिला जीवनदायिनी जानकीक जन्मभूमि नहि छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जानकीक जीवन दर्शन पेबिते दीनानाथ बाबूक मन तड़तड़ा कऽ फड़फड़ा उठलैन। फड़फड़ाइते बजला- “बौआ, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक नाम सुनने

छुहुन?”

दुनू गोरे अपना-अपना मने लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ ताकए बुधिक वनमे बिचड़ए लगल। लकड़ी खोजनिहारकेँ वनमे लकड़ी नइ भेटै छै आ घर दिस जखन विदा होइए तखन जहिना आशा टुटि गेल रहै छै तहिना गुलटेनोकेँ भेल। ओना, तेतरक मनक चुहचुही थोड़-थाड़ जरूर चुहचुहा गेल छेलइ। चुहचुहाइक कारण भेलै जे जखन अपना गामसँ मात्रिक जाइए तखन लखनौरमे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानक दर्शन होइ छै, जेकरा आगुए देने रस्ता अछि। स्थान बुझि जेबोकाल माने मात्रिक जेबाकाल आ एबोकाल लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानकेँ गोड़ लगिते अछि, तँए नाम मोन छेलै, जइसँ मनक चुहचुही चुहचुहा गेलइ...। तेतरक हरियर मन देखि दीनानाथ बाबू बुझि गेला जे जरूर किछु देखल वा सुनल बात तेतरकेँ अछि। दुखीकेँ दुख बेसाहब नीक नहि तँए जेत्तै दुख गुलटेनक मनमे छै ओकरा ओतै रोकि, ओइसँ काते-कात दोसर दिशामे मोड़ि किए ने जीवनक प्रवाहकेँ प्रवाहित कऽ दिऐ...।

तेतरकेँ दीनानाथ बाबू पुछलैन-

“बौआ, तोरा लक्ष्मीनाथ गोसाईंक विषयमे की सभ बुझल छह?”

ओना, दुनू गोरे माने तेतरो आ गुलटेनो अखन बी.ए.क ट्यूटोरियल क्लासमे दीनानाथ बाबूक संग गप-सप्प कऽ रहल अछि, मुदा जीवनो तँ जीवन छीहे।

तेतर बाजल- “श्रीमान्, स्थानक घर तँ खढ़े-पातक छैन मुदा कुट्टीक बीचमे एक जोड़ खराम सेहो छैन।”

ओना, दीनानाथ बाबू लक्ष्मीनाथ गोसाईंक अनेको कुट्टी (स्थान) देखनहि छैथ, तँए किए मनमे उठितैन जे वन गमनक बीच

जहिना रामक खराम अयोध्याक राजधानीकेँ सुशोभित केने रहल तहिना लक्ष्मीनाथ गोसाईंक खराम सेहो मिथिलाक धरतीकेँ सुशोभित केनहि अछि। दीनानाथ बाबू बजला- "आरो किछु?"

तेतर-

"नहि।"

जहिना कोनो किसानकेँ आँखिक देखल कोनो फसलक खेती रहल से अनुभव आ सोझे कानसँ सुनल रहल तइ विचारमे अन्तर आबिये जाइए। एक भेल अनुभवयुक्त विचार, दोसर भेल अनुभवहीन विचार। दीनानाथ बाबू बजला-

"बौआ, एक्के घन्टाक घण्टीमे केते कहि सकबह आकि तोहीं केते सुनि सकबह। तँए लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जे मुराम चारि जगह छैन, तेते तँ कहि देब आवश्यके नहि अनिवार्य सेहो अछि।"

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि गुलटेनक मनमे उठल जे जँ श्रीमान् एकलखाइते जँ चारू बात संगे बजता तखन अपनेसँ अड़ियाएब कने भारी भऽ जाएत। भारीए टा नहि भऽ सकैए, एक-दोसरमे ओझरा सेहो सकैए, तँए नीक हएत जे किए ने श्रीमानेसँ चारू बातकेँ फुटा-फुटा कहैले पहिनहि कहि दिऐन। गुलटेन बाजल-

"श्रीमान्, चारू बातकेँ अड़िया-अड़िया कऽ कहबै तँ अपना बुझैमे बेसी नीक हएत।"

ओना, गुलटेनक विचारपर दीनानाथ बाबू ओते धियान नहि देलैन, जइ धियानसँ गुलटेन प्रश्न रखने छला। तेकर कारण दीनानाथ बाबूक मनमे ई एलैन जे एक-दू-तीन-चारि विषयमे प्रवेश करैसँ पहिने अंकसँ खतिया देब। एतबो जँ नहि बुझि सकत तँ लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जीवन-दर्शन बुझि सकत। दीनानाथ बाबू बजला- "पहिल अंक, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म सत्तरह साए तिरानबे (1793)

इस्वीमे भेलैन। ओना, किछु गोरे 1788 सेहो इस्वी मानै छैन। परसरमा वासी श्री बच्चा झाक ओ कनिष्ठ पुत्र छला। हिनकर बच्चाक नाओं 'लच्छन' छल। जिनकर जेठ भाए रघुनाथ झा छला। दरभंगा जिलान्तर्गत सोखदत ठाकुरक कन्याक संग विवाह भेलैन। हिनक मृत्यु अगहनक पंचमी, 5 दिसम्बर 1872 इस्वीमे भेलैन। 1811 इस्वीसँ रचना करए लगला।"

अपना जनैत गुलटेनो आ तेतरो अपन बुझबकेँ अँकलक। जइ हिसाबसँ दीनानाथ बाबू बजला ओइ हिसाबमे दुनूकेँ केतौ चमत्कार वा आश्चर्यचकित करैबला बात नजैरमे नहि आएल। एक अंक समाप्त करैत दीनानाथ बाबू श्रोताक प्रतिक्रियाक प्रतीक्षा करिते रहैथ कि तेतर बाजल- "श्रीमान्, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जीवन तँ एक साधारणे मनुक्ख जकाँ छेलैन?"

तेतरक विचारकेँ समर्थन करैत गुलटेन बाजल- "हमरो सएह बुझिमे आएल।"

तेतरो आ गुलटेनोक विचारमे जे एकरूपता छल ओकरा पकैड़ दीनानाथ बाबू बजला-

"सोल्होअना सही बुझलह। एकटा साधारण परिवारमे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म भेल छेलैन। जहिना सबहक जन्म परिवारमे होइए।"

ऐगला विचार दीनानाथ बाबू ऐ दुआरे नहि अनलैन जे भने खत्ती दैत चलब जइसँ जिनगी खँतिया जाएत। जखने जिनगी खतियाइ छै आकि अनेरे ने लोक बुझए लगैए जे भाय पढ़ैमे अनठेलिऐ तँए भुसकौल भेलौं आ काजमे अनठेलौं तँए काजक चोर भेलौं। आब अहाँ कहब जे सर्टिफाइड कॉपी देखाउ, से हम केतएसँ देखाएब, ओ तँ अपन जीवने ने दर्शन करौत।

तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास इत्यादिकेँ अपन मनक पीपासा जहिना जगि गेल रहैन तहिना लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ सेहो आध्यात्मिक चेतना तेना प्रवल रूपमे जगि गेलैन जे कवित्व शक्ति पैदा सेहो लऽ लेलकैन। अपनाकेँ ऊँच्चकोटिक आत्मिक जीवन धारण करैक पाछू लक्ष्मीनाथ गोसाईं संघर्षशील जीवनमे डेग बढ़ौलैन, जेकरा ता-जीवन, माने जीवनक अन्तिम समय तक, निर्वहन केलैन। सएह निरविचारी महात्मा लक्ष्मीनाथ गोसाईंजी छैथ।

तेतरो आ गुलटेनोकेँ दीनानाथ बाबू ई सोचि पुछए चाहलैन जे भोजैत केहनो अकवाली किए ने होथि मुदा भोजक भाग्य लिखता भोज खेनिहार। तँए एकबेर जस-अजसक विचार बुझि ली। दीनानाथ बाबू बजला-

“लक्ष्मीनाथ गोसाईं सोल्होअना मनुक्ख छला, तइमे केतौ शंको छह?”

दुनू गोरे एकेस्वरमे बाजल-

“नहि।”

दीनानाथ बाबू बजला-

“पहिने हुनकर विचार बुझि लएह, पछाइत देवत्व शक्ति केना जगलैन आ अपना जीवनमे ओ की सभ केलैन से कहबह।”

ओना, दुनूक मन माने तेतरो आ गुलटेनोक मन क्रमसँ आगू बढ़ि ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल जेतए हुनका देवत्व शक्ति प्राप्त भेलैन। मुदा तेकरा नजरअन्दाज करैत दीनानाथ बाबू बजला- “लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ समाजमे पसरल रूढ़िवादी विचारधारा, जेना पसरल अछि, तेना जँ ओकरा तोड़ल (हटौल) नहि जाएत तँ समाजक प्रवाह अन्धकार दिस बढ़ि जाएत।”

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि तेतरो आ गुलटेनो सकपका

गेल। सकपकाइक कारण दुनूकेँ दुनू भेल। पहिल विषयक गम्भीरता आ दोसर शब्दक गम्भीरता नहि बुझि सकल। जे बात दीनानाथ बाबू सेहो मने-मन आँकि लेलैन, मुदा प्रश्नक बरखा दुनूक मनमे तेना झहरए लगल जेना बदरीहन मेघ अकासमे मड़ाइत रहैए। तँए प्रश्नक टोहकेँ टोहियबैक सीमापर दीनानाथ बाबू अपनाकेँ ठाढ़ केलैन।

विचारक गम्भीरताकेँ ने तेतरे सोझरा कऽ बुझि सकल आ ने गुलटेने बुझि सकल तँए अपन-अपन मनक आशा हारि दुनू संगे बाजल- "श्रीमान्, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं तँए नीक जकाँ कनी..?"

दीनानाथ बाबू बजला- "गमैया भाषामे बुझा दइ छिअ। दूटा विचारक प्रश्न अछि, पहिल- लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ जाइतिक रूपमे जे जागरण छेलैन आ दोसर- सम्प्रदायकेँ सघन धार्मिक सीमाक रूपमे जे जागरण छेलैन।"

गुलटेन बाजल- "श्रीमान्, नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी।"

गुलटेनक विचारकेँ दीनानाथ बाबू मने-मन आँकि लेलैन जे समाजक जे तलहत्थी छै तइमे आ वैचारिक जे धरातल समाजमे अछि तइमे अकास-पतालक अन्तर अछिए। तेकरा अकानैत दीनानाथ बाबू बजला- "दुनू गोरे नीक जकाँ सुनह। लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म जहिया भेलैन तहिया अंगरेजी शासन देशमे पसैर गेल छल। तैसंग राजा-रजबारक राजशाही शासन सेहो पहिनहिसँ आबि रहल छल। पैछला जे इतिहास रहल सेहो राजे-रजबारासँ होइत आबि रहल छल।"

इतिहासक नव बात सुनने, नव बातक माने भेल विद्यार्थी तेतर आ गुलटेनक रूपमे जहिना तेतरक जिज्ञासा जगल तहिना गुलटेनक

सेहो जगल। गुलटेन बाजल- “कनी आरो फरिछा कऽ कहियौ।”

विचारकेँ विराम दैत दीनानाथ बाबू बजला- “जेतबे समय घन्टीक शेष बँचल अछि तेतबे ने अखन कहि सकबह, तँए आन दिन नीक जकाँ कहबह। अखन एतबे बुझह जे समाजमे पसरल जे जाति-सम्प्रदाय अछि तइसँ बहुत ऊपर उठल विचार लक्ष्मीनाथ गोसाईंक छेलैन। ओ जहिना देशक प्रमुख देवस्थानक भ्रमण केलैन तहिना मिथिला-भ्रमण सेहो केलैन। अखन से सभ नहि। लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ जहिना क्रिश्चन धर्मबला शिष्य जौन-वरिआही कोठीक छेलैन तहिना मुसलमानी सम्प्रदायक मुंगेरक मुहम्मद गौस सेहो छेलैन, तहिना प्रयागक राजाराम शास्त्री सेहो छेलैन। अखन एतबे। किए तँ जन-जनमे बास करैबला लक्ष्मीनाथ गोसाईं जन-जागरण केना केलैन, मुख्य विषय से अछि।”

ओना, जन-जागरण शब्द दुनू गोरे सुनने अछि मुदा ओकर बेवहारिक पक्ष की अछि तइसँ ने तेतरेकेँ आ ने गुलटेनेकेँ भेँट भेल छल। एक तँ नव शब्द, दोसर ओइ शब्दक माने जन-जागरण शब्दक बेवहारिक रूप सुनि दुनूक मनमे एकटा आरो नव चेतनाक जन्म भेल। ओ भेल ई जे जेते शब्द अछि की ओकर बेवहारिक पक्ष माने क्रियागत पक्ष सेहो अछि? मुदा बाजल दुनूमे सँ कियो ने किछु। तेकर कारण भेल जे दीनानाथ बाबूक मुहेँ सुनि चुकल छल जे जेतबे समय घन्टीक (ट्यूटोरियल क्लासक) शेष बँचल अछि तेतबे ने कहि सकबह। दुनूक मनमे छेलैहे जे पहिनहिसँ जे कहैत आबि रहला अछि पहिने ओ सुनब प्रमुख भेल। गुलटेन बाजल-

“तीनटा बात तँ मोटा-मोटी आबिये गेल, शेष चारिम बाँकी अछि। तेकर उत्तर बुझला पछाइत जँ समय बँचत तँ रस्तो-रस्तो ऐ पश्नकेँ बुझि लेब।”

गुलटेनक बात सुनि दीनानाथ बाबूक मनमे उठलैन जे जखन मनक पिपासा एते उग्र भऽ जगि गेल छै तखन अपनो किए ने स्वाति नक्षत्रक बून जकाँ बरैसिये जाइ। मुदा लगले मन बिचड़ैत विचार देलकैन जे कोनो रोगक दबाइ खोराके-खोराक देब अधिक हितकर होइए, तहूमे जे सामाजिक रोग गाम-समाजक बीच पसरल अछि तेकरा जँ रानी सरंगाक खिस्सा जकाँ भरि राति सुनाइये देब तइसँ जे लाभक इच्छासँ सुनबए चाहि रहल छी से थोड़े हएत। ओ तखने हएत जखन एक-एक डेगकेँ हाथसँ नापि, हाथकेँ बीतसँ नापि आ बीतकेँ आँगुरसँ नापि ओकर रूप प्रकट करब। से तँ तखने सम्भव अछि जखन ओकर वैचारिक पक्षक संग बेवहारिक पक्ष सेहो राखल जाए। दीनानाथ बाबू बजला- “पहिल आ दोसर-तेसर विचार बुझैमे केतौ कोनो बाधो बुझि पड़ि रहल छह?”

गुलटेन बाजल- “नहि।”

तेतरकेँ सकपकाइत देखि दीनानाथ बाबू बजला-

“तेतर तोरा?”

तेतर बाजल- “हँ। दोसर आ तेसर माने जाति आ सम्प्रदायक बीच स्पष्ट अन्तर नहि बुझिमे आएल।”

समयकेँ नजैरमे रखैत दीनानाथ बाबू बजला-

“दुनूक बीच अन्तर की अछि से नहि बुझि पेलह। मुदा दुनू की छी, केहेन अछि से तँ बुझबे केलह?”

तेतर- “हँ।”

दीनानाथ बाबू बजला- “चलह, आगू चारिम बातमे आबह। साधारण परिवारमे जन्म नेने लक्ष्मीनाथ गोसाईं बच्चेसँ गाइयक चरवाहि करै छला। बच्चेसँ हुनकामे ज्ञानक पिपासा जगि गेलैन। जगैक अनेक कारणमे एकटा कारण ईहो रहलैन जे, ओना जन्म

अठारहम शताब्दीमे भेल छेलैन मुदा से भेल छेलैन शताब्दीक उत्तरार्द्धमे। मात्र साते-आठे बर्खक अवस्थामे अठारहम शताब्दी समाप्त भऽ गेल। मिथिलांचलमे उन्नैसमी शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी भेल अछि।"

रौदी सुनि गुलटैन बिच्चेमे बाजल-

"बहुत रौदी भेल.!"

विचारक प्रवाहमे तँ गुलटेन बाजि गेल मुदा रौदीक प्रभाव की होइए, से थोड़े बुझैत रहए। मुराम जगह देखि दीनानाथ बाबू बजला-

"पहिने एक सालक रौदीक फलाफल सुनि लएह। पछाइत दू-सलिया, तीन-सलिया, चरि-सलिया, पँच-सलिया इत्यादि केते कहबह, अपना ऐठाम माने मिथिलामे बारह बर्ख तकक रौदी भेल अछि। बुझले हेतह जे सीताक जन्म जखन भेलैन तखन मिथिला बारह बर्खक रौदीमे चलि रहल छल।"

अखन तक जहिना गुलटेन तहिना तेतर, किताबमे तँ रौदी-दाही पढ़ने छल मुदा रौदी-दाहीक प्रभाव की होइ छै से थोड़े बुझै छल। दीनानाथ बाबूकेँ विषयमे आगू बढ़ैत देखि तेतर बाजल-

"श्रीमान्, पहिने एक-सलिया रौदीक प्रभाव कहियौ, पछाइत दू-सलिया-तीन-सलियाक विषयमे कहबै।"

तेतरक खँतियाएल विचार सुनि दीनानाथ बाबू बजला-

"बेस मोन पाड़ि देलह। एक-सलिया रौदीक भरपाइ करैमे परिवारकेँ पाँच साल लगैए। ओना, समय कम अछि, मोटा-मोटी ई बुझह जे आजुक जे परिवेश अछि माने आर्थिक रूपेँ, ओ बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईंजीक समयमे नहि छल। मुदा मनुक्खक की मूल समस्या अछि से नहि बुझै छला, सेहो बात नहियेँ अछि। जन-जनकेँ चिन्हैक चेतना लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ छेलैन। एक तँ ओहुना दस-

एगारह बर्खक पछाइत लक्ष्मीनाथ गोसाईं घरसँ निकैल विद्वत समाजक बीच अपन मनक जिज्ञासाकेँ पूर्ति करै छला, तैसंग अपन चिन्तन-मननकेँ सेहो प्रवाह-पूर्ण बनबैत आगू बढ़ैत रहला। नेपालक यात्राक बीच नाथ सम्प्रदायबला सभसँ सेहो भेँट भेलैन जइसँ विचारमे आरो परिपक्वता एलैन।”

ओना, लक्ष्मीनाथ गोसाईं देशक प्रमुख धार्मिक तीर्थ-स्थानक भ्रमण सेहो केलैन, मुदा से दोसर-तेसर भ्रमणकर्तासँ भिन्न विचारक रूपमे केलैन। ओ भिन्न-रूप छेलैन देश-कोससँ लऽ कऽ ओइठामक जीवन-दर्शनकेँ परिखब। तैबीच कवित्व शक्ति प्राप्त भेने अपन जीवन-दर्शनक हिसाबसँ गीत-भजन सेहो रचना करै छला। अपन जीवन-दर्शनक माने भेल उच्चकोटिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण। एक राम वा कृष्ण वा कोनो आने ईश्वर किए ने होथि मुदा बेवहारिक रूपमे जे चलैन समाजक बीच माने मनुक्खक बीच भावात्मक रूपमे चलि रहल अछि तइसँ गम्भीर दृष्टिये लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपन रचना केने छैथ।

उन्नैसमी शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी एक-सलियासँ चरि-सलिया-पन-सलिया धरिक भेल छल, तइ शताब्दीक तीन-चौथाइ समय लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपना आँखियो आ नजैरियोसँ देखि कऽ नीक जकाँ परेख चुकल छला जे जीव-जन्तु ले पानिक की महत्व अछि आ ओकरा प्राप्त करैक उपाय की अछि। जन-जनमे जागरण अनैले लक्ष्मीनाथ गोसाईंजी जान अरोपि लागि गेला। लोककेँ जीबैक उपायक जड़ि-मूलकेँ पकैड़ लोकक बीच अपनाकेँ रखि टोली बनबए लगला। जेकर उपयोग दू दृष्टिये करैथ। पहिल, वैचारिक रूपमे आ दोसर बेवहारिक रूपमे। जखने लोक बेवहारिक जीवनकेँ पकैड़ चलए लगैए तखने जीवनक जे बाधा-रूकाबट अछि ओ हल हुअ

लगैए। से साधारण जन-गणक बीच भेल। जइसँ गाम-गाममे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानक (रहैक स्थान) निर्माण भेल। स्थानक निर्माणक संग-संग पाइनिक उपाय सेहो कएल गेल। जन-सहयोगसँ पोखरिक निर्माण सेहो भेल। अखन तक बत्तीस स्थानक चर्च अछि। घुमन्तु सोभावक रहबे करैथ। घुमन्तु सोभाव लक्ष्मीनाथ गोसाईंक ऐ दुआरे बनि गेल छेलैन जे मन तेते ललैक गेलैन जे होनि एक्के दिनमे मनुक्खक सभ दुख हेरि ली। मुदा जुग-जुगसँ अबैत जन-समाजक पराधीन जीवन रहल, जइसँ जहिना विचारक रूपमे तहिना बेवहारमे, जीवन टुटि कऽ एते निच्चाँ गिर पड़ल जे चिन्ह-पहचिन्ह लोकक मेटा गेल।”

दीनानाथ बाबूक मुँह बन्न होइते गुलटेन बाजल-

“एते पैघ महात्म्य लक्ष्मीनाथ गोसाईंमे छेलैन?”

हँसैत दीनानाथ बाबू बजला-

“जेते बुझै छहुन बौआ, तहूसँ बेसी छेला, मुदा समाजो-सत्ता आ शासनो-सत्ता तेना ग्रसित करैत रहलैन जे जेते मनमे छेलैन तेते तँ नहि मुदा एते जरूर केलैन जेते एक साधारण मनुक्खक लेल असाध्य अछि। समैयो भऽ गेल, ऐगला विचार दोसर दिन करब।”



शब्द संख्या : 3575, तिथि : 31 अगस्त 2020







Notes